हिज़्क़िएल

[illegible]

हिज़्क़िएल को यह किताब बुज़ी का बेटा, काहिन और नबी बतौर मंसूब करता है। वह यरूश्लेम में एक काहिन के ख़ान्दान में पैदा हुआ और परवरिश पाई। और जिलावतनी के दौरान यहूदियों के साथ बाबुल में रहता था। हिज़्क़िएल, काहिन की नसल का यह शख़्स अपनी नबुव्वत की ख़िदमत के ज़रिये मश्हूर हो जाता है। वह अक्सर ख़ुद को ज़ेल की बातें पर गौर करने और ध्यान लगाने में मसरूफ़ रखता था जैसे कि मक़दिस, प्रोहिताई (कानिगिरी) ख़ुदावन्द का जलाल और क़ुर्बानी का निज़ाम।

[illegible]

इस के तस्नीफ की तारीख तक़रीबत 593 - 570 क़ब्ल मसीह के बीच है।

हिज़्क़िएल ने इसे बाबुल में रहते हुए लिखा, मगर उस की नबुव्वतें इस्राईल, मिस्र और कई एक पड़ोसी मुल्कों की बाबत थीं।

[illegible]

क़बूल कुनिन्दा पाने वाले बाबुल में जिलावतन और अपने मुल्क के तमाम बनी इस्राईल और बाद में तमाम क़ारिईन — ए — कलाम।

[illegible]

हिज़्जिक़िएल ने अपनी पीढ़ी के लोगों के दर्मियान ख़िदमत अन्जाम दी जो दोनों तरह से निहायत ही गुनहगार और पूरी तरह से ना उम्मीद थे उसकी नबुव्वत की ख़िदमत की राह से उसने कोशिश की कि फ़ौरन तौबा की तरफ़ मायल करे और उन्हें बईद मुस्तक़बिल में यक़ीन दिलाए। उसने सोचा कि ख़ुदा इंसानी

पैग़म्बरों के वसीले से काम करता है। यहां तक कि शिकस्त और मायूसी की हालत में ख़ुदा के लोगों को ख़ुदा की हुकूमत के एलान की ज़रूरत होती है, ख़ुदा का कलाम कभी भी नाकाम नहीं होता। ख़ुदा हर जगह मौजूद है और कभी भी, कहीं भी उसकी इबादत की जा सकती है। हिज़िकएल की किताब हमें याद दिलाती है कि उन तारीक औक़ात में जब हम गुम हो जाने का एहसास करें तब ख़ुदावन्द की खोज कर उसे ढूंढे और तलाश करें ताकि हम अपनी जिन्दगियों की जांच कर सके और सच्चे ख़ुदा की राह पर चल सके।

????’?

ख़ुदावन्द का जलाल।

बैरूनी ख़ाका

1. हिज़िकिएल की बुलाहट — 1:1-3:27
2. यरूशलेम यहूदा और मंदिर के ख़िलाफ़ नबुव्वतें — 4:1-24:27
3. क़ौमों के ख़िलाफ़ नबुव्वतें — 25:1-32:32
4. बनी इस्राईल से मुता'ल्लिक़ नबुव्वते — 33:1-39:29
5. बहाली का रोया — 40:1-48:35

??????? ?? ?????

1 तेइसवीं बरस के चौथे महीने की पाँचवीं तारीख़ को यूँ हुआ
कि जब मैं नहर — ए — किबार के किनारे पर ग़ुलामों के बीच था
तो आसमान खुल गया और मैंने ख़ुदा की रोयतें देखीं।
2 उस महीने की पाँचवीं को यहूयाकीम बादशाह की ग़ुलामी के
पाँचवीं बरस।
3 ख़ुदावन्द का कलाम बूज़ी के बेटे हिज़क़िएल काहिन पर
जो कसदियों के मुल्क में नहर — ए — किबार के किनारे पर था
नाज़िल हुआ, और वहाँ ख़ुदावन्द का हाथ उस पर था।

4 और मैंने नज़र की तो क्या देखता हूँ कि उत्तर से आँधी उठी
एक बड़ी घटा और लिपटती हुई आग और उसके चारों तरफ़
रोशनी चमकती थी और उसके बीच से या'नी उस आग में से
सैक़ल किये हुए पीतल की तरह सूरत जलवागर हुई।
5 और उसमें से चार जानदारों की एक शबीह नज़र आई और
उनकी शक्ल यूँ थी कि वह इंसान से मुशाबह थे।
6 और हर एक चार चेहरे और चार पर थे।
7 और उनकी टाँगे सीधी थीं और उनके पाँव के तलवे बछड़े
की पाँव के तलवे की तरह थे और वह मंजे हुए पीतल की तरह
झलकते थे।
8 और उनके चारों तरफ़ परों के नीचे इंसान के हाथ थे और चारों
के चेहरे और पर यूँ थे।
9 कि उनके पर एक दूसरे के साथ जुड़े थे और वह चलते हुए
मुड़ते न थे बल्कि सब सीधे आगे बढ़े चले जाते थे।
10 उनके चेहरों की मुशाबिहत यूँ थी कि उन चारों का एक एक
चेहरा इंसान का एक शेर बबर का उनकी दहिनी तरफ़ और उन
चारों का एक एक चेहरा सांड का बाईं तरफ़ और उन चारों का
एक एक चेहरा 'उक़ाब का था।
11 उनके चेहरे यूँ थे और उनके पर ऊपर से अलग — अलग
थे हर एक के ऊपर दूसरे के दो परों से मिले हुए थे और दो दो से
उनका बदन छिपा हुआ था।
12 उनमें से हर एक सीधा आगे को चला जाता था जिधर को
जाने की ख़्वाहिश होती थी वह जाते थे, वह चलते हुए मुड़ते न
थे।
13 रही उन जानदारों की सूरत तो उनकी शक्ल आग के सुलगे
हुए कोयलों और मशा'लों की तरह थी, वह उन जानदारों के बीच
इधर उधर आती जाती थी और वह आग नूरानी थी और उसमे से
बिजली निकलती थी।

14 और वह जानदार ऐसे हटते बढ़ते थे जैसे बिजली कौंध जाती
है।
15 जब मैंने उन जानदारों की तरफ़ नज़र की तो क्या देखता हूँ
कि उन चार चार चेहरों वाले जानदारों के हर चेहरे के पास ज़मीन
पर एक पहिया है।
16 उन पहियों की सूरत और और बनावट ज़बरजद के जैसी थी
और वह चारों एक ही वज़ा' के थे और उनकी शक्ल और उनकी
बनावट ऐसी थी जैसे पहिया पहटे के बीच में है।
17 वह चलते वक़्त अपने चारों पहलुओं पर चलते थे और पीछे
नहीं मुड़ते थे।
18 और उनके हलक़े बहुत ऊँचे और डरावने थे और उन चारों
के हलक़ों के चारों तरफ़ आँखें ही आँखें थीं।
19 जब वह जानदार चलते थे तो पहिये भी उनके साथ चलते
थे और जब वह जानदार ज़मीन पर से उठाये जाते थे तो पहिये
भी उठाये जाते थे।
20 जहाँ कहीं जाने की ख़्वाहिश होती थी जाते थे, उनकी
ख़्वाहिश उनको उधर ही ले जाती थी और पहिये उनके साथ उठाये
जाते थे, क्यूँकि जानदार की रूह पहियों में थी।
21 जब वह चलते थे, यह चलते थे; और जब वह ठहरते थे, यह
ठरते थे; और जब वह ज़मीन पर से उठाये जाते थे तो पहिये भी
उनके साथ उठाये जाते थे, क्यूँकि पहियों में जानदार की रूह थी।
22 जानदारों के सरो के ऊपर की फ़ज़ा बिल्लोर की तरह चमक
थी और उनके सरों के ऊपर फ़ैली थी।
23 और उस फ़ज़ा के नीचे उनके पर एक दूसरे की सीध में थे हर
एक दो परों से उनके बदनो का एक पहलू और दो परों से दूसरा
हिस्सा छिपा था
24 और जब वह चले तो मैंने उनके परों की आवाज़ सुनी जैसे
बड़े सैलाब की आवाज़ या'नी क़ादिर — ए — मुतलक़ की आवाज़
और ऐसी शोर की आवाज़ हुई जैसी लश्कर की आवाज़ होती है

जब वह ठहरते थे तो अपने परों को लटका देते थे।
25 और उस फ़ज़ा के ऊपर से जो उनके सरो के ऊपर थी, एक
आवाज़ आती थी और वह जब ठहरते थे तो अपने बाज़ुओं को
लटका देते थे।
26 और उस फ़ज़ा से ऊपर जो उनके सरों के ऊपर थी तख़्त
की सूरत थी और उसकी सूरत नीलम के पत्थर की तरह थी और
उस तख़्त नुमा सूरत पर किसी इंसान की तरह शबीह उसके ऊपर
नज़र आयी।
27 और मैंने उसकी कमर से लेकर ऊपर तक सैक़ल किये हुए
पीतल के जैसा रंग और शो'ला सा जलवा उसके बीच और चारों
तरफ़ देखा और उसकी कमर से लेकर नीचे तक मैंने शो'ला की
तरह तजल्ली देखी, और उसकी चारों तरफ़ जगमगाहट थी।
28 जैसी उस कमान की सूरत है जो बारिश के दिन बादलों में
दिखाई देती है वैसी ही आस — पास की उस जगमगाहट ज़ाहिर
थी यह ख़ुदावन्द के जलाल का इज़हार था, और देखते ही मैं
सिज्दे में गिरा और मैंने एक आवाज़ सुनी जैसे कोई बातें करता
है।

2

[illegible]

1 और उसने मुझे कहा, "ऐ आदमज़ाद अपने पाँव पर खड़ा हो
कि मैं तुझसे बातें करूँ।"
2 जब उसने मुझे यूँ कहा, तो रूह मुझ में दाख़िल हुई और मुझे
पाँव पर खड़ा किया; तब मैंने उसकी सुनी जो मुझ से बातें करता
था।
3 चुनाँचे उसने मुझ से कहा, कि 'ऐआदमज़ाद, मैं तुझे बनी —
इस्राईल के पास, या'नी उस सरकश क़ौम के पास जिसने मुझ से
सरकशी की है भेजता हूँ वह और उनके बाप दादा आज के दिन
तक मेरे गुनाहगार होते आए हैं।

4 क्यूँकि जिनके पास मैं तुझ को भेजता हूँ, वह सख़्त दिल और
बेहया फ़र्ज़न्द हैं; तू उनसे कहना, 'ख़ुदावन्द ख़ुदा यूँ फ़रमाता है।
5 तो चाहे वह सुनें या न सुने क्यूँकि वह तो सरकश ख़ान्दान हैं
तोभी इतना तो होगा कि वह जानेंगे कि उनमें से एक नबी खड़ा
हुआ।
6 तू ऐ आदमज़ाद उनसे परेशान न हो और उनकी बातों से न
डर, हर वक़्त तू ऊँट कटारों और काँटों से घिरा है और बिच्छुओं
के बीच रहता है। उनकी बातों से तरसान न हो और उनके चेहरों
से न घबरा, अगरचे वह बाग़ी ख़ान्दान हैं।
7 तब तू मेरी बातें उनसे कहना, चाहे वह सुनें चाहे न सुनें,
क्यूँकि वह बहुत बाग़ी हैं।
8 "लेकिन ऐ आदमज़ाद, तू मेरा कलाम सुन। तू उस सरकश
ख़ान्दान की तरह सरकशी न कर, अपना मुँह खोल और जो कुछ
मैं तुझे देता हूँ खा ले।"
9 और मैंने निगाह की, तो क्या देखता हूँ कि एक हाथ मेरी तरफ़
बढ़ाया हुआ है, और उसमें किताब का तूमार है।
10 और उसने उसे खोल कर मेरे सामने रख दिया। उसमें अन्दर
बाहर लिखा हुआ था, और उसमें नोहा और मातम और आह और
नाला मरक़ूम था।

3

1 फिर उसने मुझे कहा, कि 'ऐ आदमज़ाद, जो कुछ तूने पाया
सो खा। इस तूमार को निगल जा, और जा कर इस्राईल के
ख़ान्दान से कलाम कर।
2 तब मैंने मुँह खोला और उसने वह तूमार मुझे खिलाया।
3 फिर उसने मुझे कहा, कि 'ऐ आदमज़ाद, इस तूमार को जो मैं
तुझे देता हूँ खा जा, और उससे अपना पेट भर ले। तब मैंने खाया
और वह मेरे मुँह में शहद की तरह मीठा था।

4 फिर उसने मुझे फ़रमाया, कि 'ऐ आदमज़ाद, तू बनी —
इस्राईल के पास जा और मेरी यह बातें उनसे कह।
5 क्यूँकि तू ऐसे लोगों की तरफ़ नहीं भेजा जाता जिनकी ज़बान
बेगाना और जिनकी बोली सख़्त है; बल्कि इस्राईल के ख़ान्दान
की तरफ़;
6 न बहुत सी उम्मतों की तरफ़ जिनकी ज़बान बेगाना और
जिनकी बोली सख़्त है; जिनकी बात तू समझ नहीं सकता।
यक़ीनन अगर मैं तुझे उनके पास भेजता, तो वह तेरी सुनतीं।
7 लेकिन बनी इस्राईल तेरी बात न सुनेंगे, क्यूँकि वह मेरी
सुनना नहीं चाहते, क्यूँकि सब बनी — इस्राईल सख़्त पेशानी
और पत्थर दिल हैं।
8 देख, मैंने उनके चेहरों के सामने तेरा चेहरा दुरुश्त किया है,
और तेरी पेशानी उनकी पेशानियों के सामने सख़्त कर दी है।
9 मैंने तेरी पेशानी को हीरे की तरह चकमाक से भी ज़्यादा
सख़्त कर दिया है; उनसे न डर और उनके चेहरों से परेशान न हो,
अगरचे वह सरकश ख़ान्दान हैं।
10 फिर उसने मुझ से कहा, कि 'ऐ आदमज़ाद, मेरी सब बातों
को जो मैं तुझ से कहूँगा, अपने दिल से क़ुबूल कर और अपने
कानों से सुन।
11 अब उठ, ग़ुलामों या'नी अपनी क़ौम के लोगों के पास जा,
और उनसे कह, 'ख़ुदावन्द ख़ुदा यूँ फ़रमाता है,' चाहे वह सुनें चाहे
न सुनें।
12 और रूह ने मुझे उठा लिया, और मैंने अपने पीछे एक बड़ी
कड़क की आवाज़ सुनी जो कहती थी: कि 'ख़ुदावन्द का जलाल
उसके घर से मुबारक हो।
13 और जानदारों के परों के एक दूसरे से लगने की आवाज़ और
उनके सामने पहियों की आवाज़ और एक बड़े धड़ाके की आवाज़
सुनाई दी।

14 और रूह मुझे उठा कर ले गई, इसलिए मैं तल्ख़ दिल और
ग़ज़बनाक होकर रवाना हुआ, और ख़ुदावन्द का हाथ मुझ पर
ग़ालिब था;
15 और मैं तल अबीब में ग़ुलामों के पास, जो नहर — ए —
किबार के किनारे बसते थे पहुँचा; और जहाँ वह रहते थे, मैं सात
दिन तक उनके बीच परेशान बैठा रहा।

[illegible]

16 और सात दिन के बाद ख़ुदावन्द का कलाम मुझ पर नाज़िल
हुआ:
17 कि 'ऐ आदमज़ाद, मैंने तुझे बनी — इस्राईल का निगहबान
मुक़र्रर किया। इसलिए तू मेरे मुँह का कलाम सुन, और मेरी तरफ़
से उनको आगाह कर दे।
18 जब मैं शरीर से कहूँ, कि 'तू यक़ीनन मरेगा, और तू उसे
आगाह न करे और शरीर से न कहे कि वह अपनी बुरी चाल चलन
से ख़बरदार हो, ताकि वह उससे बाज़ आकर अपनी जान बचाए,
तो वह शरीर अपनी शरारत में मरेगा, लेकिन मैं उसके ख़ून का
सवाल — ओ — जवाब तुझ से करूँगा।
19 लेकिन अगर तूने शरीर को आगाह कर दिया और वह अपनी
शरारत और अपनी बुरी चाल चलन से बाज़ न आया तो वह
अपनी बदकिरदारी में मरेगा पर तूने अपनी जान को बचा लिया।
20 और अगर रास्तबाज़ अपनी रास्तबाज़ी छोड़ दे और गुनाह
करे, और मैं उसके आगे ठोकर खिलाने वाला पत्थर रख्खूँ तो वह
मर जाएगा; इसलिए कि तूने उसे आगाह नहीं किया, तो वह
अपने गुनाह में मरेगा और उसकी सदाक़त के कामों का लिहाज़
न किया जाएगा, लेकिन मैं उसके ख़ून का सवाल — ओ — जवाब
तुझ से करूँगा।

21 लेकिन अगर तू उस रास्तबाज़ को आगाह कर दे, ताकि
गुनाह न करे और वह गुनाह से बाज़ रहे तो वह यक़ीनन जिएगा;
इसलिए के नसीहत पज़ीर हुआ और तूने अपनी जान बचा ली।
22 और वहाँ ख़ुदावन्द का हाथ मुझ पर था, और उसने मुझे
फ़रमाया, "उठ, मैदान में निकल जा और वहाँ मैं तुझ से बातें
करूँगा।"
23 तब मैं उठ कर मैदान में गया, और क्या देखता हूँ कि
ख़ुदावन्द का जलाल उस शौकत की तरह, जो मैंने नहर — ए
— किबार के किनारे देखी थी खड़ा है; और मैं मुँह के बल गिरा।
24 तब रूह मुझ में दाख़िल हुई और उसने मुझे मेरे पाँव पर
खड़ा किया, और मुझ से हमकलाम होकर फ़रमाया, कि अपने
घर जा, और दरवाज़ा बन्द करके अन्दर बैठ रह।
25 और ऐ आदमज़ाद देख, वह तुझ पर बंधन डालेंगे और उनसे
तुझे बाँधेंगे और तू उनके बीच बाहर न जाएगा।
26 और मैं तेरी ज़बान तेरे तालू से चिपका दूँगा कि तू गूँगा
हो जाए; और उनके लिए नसीहत गो न हो, क्यूँकि वह बाग़ी
ख़ान्दान हैं।
27 लेकिन जब मैं तुझ से हमकलाम हूँगा, तो तेरा मुँह खोलूँगा,
तब तू उनसे कहेगा, कि 'ख़ुदावन्द ख़ुदा यूँ फ़रमाता है, जो सुनता
है सुने और जो नहीं सुनता न सुने, क्यूँकि वह बाग़ी ख़ान्दान हैं।

4

[illegible]

1 और ऐ आदमज़ाद, तू एक खपरा ले और अपने सामने रख
कर उस पर एक शहर, हाँ, येरूशलेम ही की तस्वीर खींच।
2 और उसका घेराव कर, और उसके सामने बुर्ज बना, और
उसके सामने दमदमा बाँध और उसके चारों तरफ़ ख़ेमें खड़े कर
और उसके चारों तरफ़ मन्जनीक लगा।

3 फिर तू लोहे का एक तवा ले, और अपने और शहर के बीच उसे
नस्ब कर कि वह लोहे की दीवार ठहरे और तू अपना मुँह उसके
सामने कर और वह घेराव की हालत में हो, और तू उसको घेरने
वाला होगा; यह बनी इस्राईल के लिए निशान है।
4 फिर तू अपनी ई करवट पर लेट रह और बनी — इस्राईल
की बदकिरदारी इस पर रख दे; जितने दिनों तक तू लेटा रहेगा,
तू उनकी बदकिरदारी बर्दाश्त करेगा।
5 और मैंने उनकी बदकिरदारी के बरसों को उन दिनों के शुमार
के मुताबिक़ जो तीन — सौ — नब्बे दिन हैं तुझ पर रख्खा है,
इसलिए तू बनी — इस्राईल की बदकिरदारी बर्दाश्त करेगा।
6 और जब तू इनको पूरा कर चुके तो फिर अपनी दहनी करवट
पर लेट रह, और चालीस दिन तक बनी यहूदाह की बदकिरदारी
को बर्दाश्त कर; मैंने तेरे लिए एक एक साल के बदले एक एक
दिन मुक़र्रर किया है।
7 फिर तू येरूशलेम के घेराव की तरफ़ मुँह कर और अपना बाज़ू
नंगा कर और उसके ख़िलाफ़ नबुव्वत कर।
8 और देख, मैं तुझ पर बन्धन डालूँगा कि तू करवट न ले सके,
जब तक अपने घेराव के दिनों को पूरा न कर ले।
9 और तू अपने लिए गेहूँ और जौ और बाक़ला और मसूर और
चना और बाजरा ले, और उनको एक ही बर्तन में रख, और उनकी
इतनी रोटियाँ पका जितने दिनों तक तू पहली करवट पर लेटा
रहेगा; तू तीन सौ नब्बे दिन तक उनको खाना।
10 और तेरा खाना वज़न करके बीस मिस्काल "रोज़ाना होगा
जो तू खाएगा, तू थोड़ा — थोड़ा खाना।
11 तू पानी भी नाप कर एक हीन का छटा हिस्सा पिएगा, तू
थोड़ा — थोड़ा पीना।
12 और तू जौ के फुल्के खाना, और तू उनकी आँखों के सामने
इंसान की नजासत से उनको पकाना।"

13 और ख़ुदावन्द ने फ़रमाया, कि "इसी तरह से बनी —
इस्राईल अपनी नापाक रोटियों को उन क़ौमों के बीच जिनमें मैं
उनको आवारा करूँगा, खाया करेंगे।"
14 तब मैंने कहा, कि "हाय, ख़ुदावन्द ख़ुदा! देख, मेरी जान
कभी नापाक नहीं हुई; और अपनी जवानी से अब तक कोई मुरदार
चीज़ जो आप ही मर जाए या किसी जानवर से फाड़ी जाए, मैंने
हरगिज़ नहीं खाई, और हराम गोश्त मेरे मुँह में कभी नहीं गया।"
15 तब उसने मुझे फ़रमाया, देख, मैं इंसान की नजासत के बदले
तुझे गोबर देता हूँ, इसलिए तू अपनी रोटी उससे पकाना।
16 उसने मुझे फ़रमाया, कि ऐ आदमज़ाद, देख, मैं येरूशलेम में
रोटी का 'असा तोड़ डालूँगा; और वह रोटी तौल कर फ़िक्रमन्दी
से खाएँगे, और पानी नाप कर हैरत से पिएँगे।
17 ताकि वह रोटी पानी के मोहताज हों, और एक साथ
शर्मिन्दा हों और अपनी बदकिरदारी में हलाक हों।

5

[illegible]

1 ऐ आदमज़ाद, तू एक तेज़ तलवार ले और हज्जाम के उस्तरे
की तरह उस से अपना सिर और अपनी दाढ़ी मुड़ा और तराज़ू ले
और बालों को तौल कर उनके हिस्से बना।
2 फिर जब घेराव के दिन पूरे हो जाएँ, तो शहर के बीच में उनका
एक हिस्सा लेकर आग में जला। और दूसरा हिस्सा लेकर तलवार
से इधर उधर बिखेर दे। और तीसरा हिस्सा हवा में उड़ा दे, और
मैं तलवार खींच कर उनका पीछा करूँगा।
3 और उनमें से थोड़े से बाल गिन कर ले और उनको अपने
दामन में बाँध।
4 फिर उनमें से कुछ निकाल कर आग में डाल और जला दे;
इसमें से एक आग निकलेगी जो इस्राईल के तमाम घराने में फैल
जाएगी।

5 ख़ुदावन्द ख़ुदा यूँ फ़रमाता है: कि येरूशलेम यही है। मैंने उसे
क़ौमों और मम्लुकतों के बीच, जो उसके आस — पास हैं रख्खा
है।
6 लेकिन उसने दीगर क़ौमों से ज़्यादा शरारत कर के मेरे हुक्मों
की मुख़ालिफ़त की और मेरे क़ानून को आसपास की मम्लुकतों
से ज़्यादा रद्द किया, क्यूँकि उन्होंने मेरे हुक्मों को रद्द किया और
मेरे क़ानून की पैरवी न की।
7 इसलिए ख़ुदावन्द ख़ुदा यूँ फ़रमाता है: कि चूँकि तुम अपने
आस — पास की क़ौम से बढ़ कर फ़ितना अंगेज़ हो और मेरे
क़ानून की पैरवी नहीं की और मेरे हुक्मों पर 'अमल नहीं किया,
और अपने आस — पास की क़ौम के क़ानून और हुक्मों पर भी
'अमल नहीं किया;
8 इसलिए ख़ुदावन्द ख़ुदा यूँ फ़रमाता है: कि देख, मैं, हाँ मैं ही
तेरा मुख़ालिफ़ हूँ और तेरे बीच सब क़ौमों की आँखों के सामने
तुझे सज़ा दूँगा।
9 और मैं तेरे सब नफ़रती कामों की वजह से तुझमें वही करूँगा,
जो मैंने अब तक नहीं किया और कभी न करूँगा।
10 अगर तुझमें बाप बेटे को और बेटा बाप को खा जाएगा,
और मैं तुझे सज़ा दूँगा और तेरे बक़िये को हर तरफ़ तितर —
बितर करूँगा।
11 इसलिए ख़ुदावन्द ख़ुदा फ़रमाता है: कि मुझे अपनी हयात
की क़सम, चूँकि तूने अपनी तमाम मकरूहात से और अपने
नफ़रती कामों से मेरे मक़्दिस को नापाक किया है, इसलिए मैं भी
तुझे घटाऊँगा, मेरी आँखें रि'आयत न करेंगी, मैं हरगिज़ रहम न
करूँगा।
12 तेरा एक हिस्सा वबा से मर जाएगा और काल से तेरे अन्दर
हलाक हो जाएगा और दूसरा हिस्सा तेरी चारों तरफ़ तलवार
से मारा जाएगा, और तीसरे हिस्से को मैं हर तरफ़ तितर बितर

करूँगा और तलवार खींच कर उनका पीछा करूँगा।
13 “मेरा क़हर यूँ पूरा होगा, तब मेरा ग़ज़ब उन पर धीमा हो
जाएगा और मेरी तस्कीन होगी; और जब मैं उन पर अपना क़हर
पूरा करूँगा, तब वह जानेंगे कि मुझ ख़ुदावन्द ने अपनी ग़ैरत से
यह सब कुछ फ़रमाया था।
14 इसके 'अलावा मैं तुझको उन क़ौमों के बीच जो तेरे आस
— पास हैं, और उन सब की निगाहों में जो उधर से गुज़र करेंगे
वीरान और मलामत की वजह बनाऊँगा।
15 इसलिए जब मैं क़हर — ओ — ग़ज़ब और सख़्त मलामत
से तेरे बीच 'अदालत करूँगा, तो तू अपने आसपास की क़ौम के
लिए जा — ए — मलामत — ओ — इहानत और मक़ाम — ए
— 'इबरत — ओ — हैरत होगी; मैं ख़ुदावन्द ने यह फ़रमाया है।
16 या'नी जब मैं सख़्त सूखे के तीर जो उनकी हलाकत के लिए
हैं, उनकी तरफ़ रवाना करूँगा जिनको मैं तुम्हारे हलाक करने
के लिए चलाऊँगा, और मैं तुम में सूखे को ज़्यादा करूँगा और
तुम्हारी रोटी की लाठी को तोड़ डालूँगा।
17 और मैं तुम में सूखा और बुरे दरिन्दे भेजूँगा, और वह तुझे
बेऔलाद करेंगे; और मेरी और ख़ूँरेज़ी तेरे बीच आएगी मैं तलवार
तुझ पर लाऊँगा; मैं ख़ुदावन्द ही ने फ़रमाया है।”

6

[illegible]

1 और ख़ुदावन्द का कलाम मुझ पर नाज़िल हुआ।
2 कि ऐ आदमज़ाद, इस्राईल के पहाड़ों की तरफ़ मुँह करके
उनके ख़िलाफ़ नबुव्वत कर
3 और यूँ कह, कि ऐ इस्राईल के पहाड़ों, ख़ुदावन्द ख़ुदा का
कलाम सुनो! ख़ुदावन्द ख़ुदा पहाड़ों और टीलों को और नहरों
और वादियों को यूँ फ़रमाता है: कि देखो, मैं, हाँ मैं ही तुम पर
तलवार चलाऊँगा, और तुम्हारे ऊँचे मक़ामों को ग़ारत करूँगा।

4 और तुम्हारी क़ुर्बानगाहें उजड़ जाएँगी और तुम्हारी सूरज
की मूरतें तोड़ डाली जाएगी और मैं तुम्हारे मक़तूलों को तुम्हारे
बुतों के आगे डाल दूँगा।
5 और बनी — इस्राईल की लाशें उनके बुतों के आगे फेंक दूँगा,
और मैं तुम्हारी हड्डियों को तुम्हारी क़ुर्बानगाहों के चारों तरफ़
तितर — बितर करूँगा।
6 तुम्हारे क़याम के तमाम इलाक़ों के शहर वीरान होंगे और
ऊँचे मक़ाम उजाड़े जायेंगे ताकि तुम्हारी क़ुर्बानगाहें ख़राब और
वीरान हों और तुम्हारे बुत तोड़े जाएँ और बाक़ी न रहें और तुम्हारी
सूरज की मूरतें काट डाली जाएँ और तुम्हारी दस्तकारियाँ हलाक
हों।
7 और मक़्तूल तुम्हारे बीच गिरेंगे, और तुम जानोगे कि मैं
ख़ुदावन्द हूँ।
8 “लेकिन मैं एक बक़िया छोड़ दूँगा, या'नी वह चन्द लोग जो
क़ौमों के बीच तलवार से बच निकलेंगे जब तुम ग़ैर मुल्कों में तितर
बितर हो जाओगे।
9 और जो तुम में से बच रहेंगे उन क़ौमों के बीच जहाँ जहाँ वह
ग़ुलाम होकर जाएँगे मुझको याद करेंगे, जब मैं उनके बेवफ़ा दिलों
को जो मुझ से दूर हुए और उनकी आँखों को जो बुतों की पैरवी
में नाफ़रमान हुई, शिकस्त करूँगा और वह ख़ुद अपनी तमाम
बद'आमाली की वजह से जो उन्होंने अपने तमाम घिनौने कामों
में की, अपनी ही नज़र में नफ़रती ठहरेंगे।
10 तब वह जानेंगे कि मैं ख़ुदावन्द हूँ, और मैंने यूँ ही नहीं
फ़रमाया था कि मैं उन पर यह बला लाऊँगा।”
11 ख़ुदावन्द ख़ुदा यूँ फ़रमाता है: कि “हाथ पर हाथ मार और
पाँव ज़मीन पर पटक कर कह, कि बनी — इस्राईल के तमाम
घिनौने कामों पर अफ़सोस! क्यूँकि वह तलवार और काल और
वबा से हलाक होंगे।

12 जो दूर हैं वह वबा से मरेगा और जो नज़दीक है तलवार से
क़त्ल किया जाएगा, और जो बाक़ी रहे और महसूर हो वह काल
से मरेगा, और मैं उन पर अपने क़हर को यूँ पूरा करूँगा।
13 और जब उनके मक़्तूल हर ऊँचे टीले पर और पहाड़ों की सब
चोटियों पर, और हर एक हरे दरख़्त और घने बलूत के नीचे, हर
जगह जहाँ वह अपने सब बुतों के लिए ख़ुशबू जलाते थे; उनके
बुतों के पास उनकी क़ुर्बानगाहों के चारों तरफ़ पड़े हुए होंगे, तब
वह पहचानेंगे कि ख़ुदावन्द मैं हूँ।
14 और मैं उन पर हाथ चलाऊँगा, और वीराने से दिबला तक
उनके मुल्क की सब बस्तियाँ वीरान और सुनसान करूँगा। तब वह
पहचानेंगे कि मैं ख़ुदावन्द हूँ।"

7

???????? ?? ???????

1 और ख़ुदावन्द का कलाम मुझ पर नाज़िल हुआ
2 कि ऐ आदमज़ाद, ख़ुदावन्द ख़ुदा इस्राईल के मुल्क से यूँ
फ़रमाता है: कि तमाम हुआ! मुल्क के चारों कोनों पर ख़ातिमा
आन पहुँचा है।
3 अब तेरी मौत आई और मैं अपना ग़ज़ब तुझ पर नाज़िल
करूँगा, और तेरी चाल चलन के मुताबिक़ तेरी 'अदालत करूँगा
और तेरे सब घिनौने कामों की सज़ा तुझ पर लाऊँगा।
4 मेरी आँख तेरी रि'आयत न करेगी और मैं तुझ पर रहम न
करूँगा, बल्कि मैं तेरी चाल चलन के मुताबिक़ तुझे सज़ा दूँगा
और तेरे घिनौने कामों के अन्जाम तेरे बीच होंगे, ताकि तुम जानो
कि मैं ख़ुदावन्द हूँ।
5 ख़ुदावन्द ख़ुदा यूँ फ़रमाता है: कि एक बला या'नी बला —
ए — 'अज़ीम! देख, वह आती है।

6 ख़ातमा आया, ख़ातमा आ गया! वह तुझ पर आ पहुँचा, देख
वह आ पहुँचा।
7 ऐ ज़मीन पर बसने वाले, तेरी शामत आ गई, वक़्त आ पहुँचा,
हँगामे का दिन क़रीब हुआ; यह पहाड़ों पर ख़ुशी की ललकार का
दिन नहीं।
8 अब मैं अपना क़हर तुझ पर उँडेलने को हूँ और अपना
ग़ज़ब तुझ पर पूरा करूँगा और तेरे चाल चलन के मुताबिक़ तेरी
'अदालत करूँगा और तेरे सब घिनौने कामों की सज़ा तुझ पर
लाऊँगा।
9 मेरी आँख रिआयत न करेगी और मैं हरगिज़ रहम न करूँगा,
मैं तुझे तेरी चाल चलन के मुताबिक़ सज़ा दूँगा और तेरे घिनौने
कामों के अन्जाम तेरे बीच होंगे, और तुम जानोगे कि मैं ख़ुदावन्द
सज़ा देने वाला हूँ।
10 "देख, वह दिन, देख वह आ पहुँचा है तेरी शामत आ गई,
'असा में कलियाँ निकलीं, ग़ुरूर में गुन्चे निकले।
11 सितमगरी निकली कि शरारत के लिए छड़ी हो, कोई उनमें
से न बचेगा, न उनके गिरोह में से कोई और न उनके माल में से
कुछ, और उन पर मातम न होगा।
12 वक़्त आ गया, दिन क़रीब है, न ख़रीदने वाला ख़ुश हो न
बेचने वाला उदास, क्यूँकि उनके तमाम गिरोह पर ग़ज़ब नाज़िल
होने को है।
13 क्यूँकि बेचने वाला बिकी हुई चीज़ तक फिर न पहुँचेगा,
अगरचे अभी वह ज़िन्दों के बीच हों, क्यूँकि यह ख़्वाब उनके तमाम
गिरोह के लिए है, एक भी न लौटेगा और न कोई बदकिरदारी से
अपनी जान को क़ायम रख्खेगा।
14 नरसिंगा फूंका गया और सब कुछ तैयार है, लेकिन कोई
जंग को नहीं निकलता, क्यूँकि मेरा ग़ज़ब उनके तमाम गिरोह
पर है।

15 बाहर तलवार है और अन्दर वबा और क़हत हैं, जो खेत में
है तलवार से क़त्ल होगा, और जो शहर में है सूखा और वबा उसे
निगल जाएँगे।
16 लेकिन जो उनमें से भाग जाएँगे वह बच निकलेंगे, और
वादियों के कबूतरों की तरह पहाड़ों पर रहेंगे और सब के सब
फ़रियाद करेंगे, हर एक अपनी बदकिरदारी की वजह से।
17 सब हाथ ढीले होंगे और सब घुटने पानी की तरह कमज़ोर
हो जाएँगे।
18 वह टाट से कमर कसेंगे और ख़ौफ़ उन पर छा जाएगा, और
सब के मुँह पर शर्म होगी और उन सब के सिरों पर चन्दलापन
होगा।
19 और वह अपनी चाँदी सड़कों पर फेंक देंगे और उनका सोना
नापाक चीज़ की तरह होगा ख़ुदावन्द के ग़ज़ब के दिन में उनका
सोना चाँदी उनको न बचा सकेगा। उनकी जानें आसूदा न होंगी
और उनके पेट न भरेंगे, क्यूँकि उन्होंने उसी से ठोकर खाकर
बदकिरदारी की थी।
20 और उनके ख़ूबसूरत ज़ेवर शौकत के लिए थे लेकिन उन्होंने
उनसे अपनी नफ़रती मूरतें और मकरूह चीज़े बनाई, इसलिए
मैंने उनके लिए उनको नापाक चीज़ की तरह कर दिया।
21 और मैं उनको ग़नीमत के लिए परदेसियों के हाथ में और
लूट के लिए ज़मीन के शरीरों के हाथ में सौंप दूँगा, और वह उनको
नापाक करेंगे।
22 और मैं उनसे मुँह फेर लूँगा और वह मेरे ख़िल्वतखाने को
नापाक करेंगे। उसमें ग़ारतगर आएँगे और उसे नापाक करेंगे।
23 'ज़न्जीर बना क्यूँकि मुल्क ख़ूँरेज़ी के गुनाहों से पुर है और
शहर ज़ुल्म से भरा है।
24 इसलिए मैं ग़ैर क़ौमों में से बुराई को लाऊँगा और वह उनके
घरों के मालिक होंगे, और मैं ज़बरदस्तों का घमण्ड मिटाऊँगा

और उनके पाक मक़ाम नापाक किए जाएँगे।
25 हलाकत आती है, और वह सलामती को ढूँढेंगे लेकिन न
पाएँगे।
26 बला पर बला आएगी और अफ़वाह पर अफ़वाह होगी, तब
वह नबी से ख़्वाब की तलाश करेंगे, लेकिन शरी'अत काहिन से
और मसलहत बुज़ुर्गों से जाती रहेगी।
27 बादशाह मातम करेगा और हाकिम पर हैरत छा जाएगी,
और र'अय्यत के हाथ काँपेंगे। मैं उनके चाल चलन के मुताबिक़
उनसे सुलूक करूँगा और उनके 'आमाल के मुताबिक़ उन पर
फ़तवा दूँगा, ताकि वह जानें कि ख़ुदावन्द मैं हूँ।"

8

[illegible]

1 और छठे बरस के छठे महीने की पाँचवी तारीख़ को यूँ हुआ
कि मैं अपने घर में बैठा था, और यहूदाह के बुज़ुर्ग मेरे सामने बैठे
थे कि वहाँ ख़ुदावन्द ख़ुदा का हाथ मुझ पर ठहरा।
2 तब मैंने निगाह की और क्या देखता हूँ कि एक शबीह आग
की तरह नज़र आती है; उसकी कमर से नीचे तक आग और उसकी
कमर से ऊपर तक जल्वा — ए — नूर ज़ाहिर हुआ जिसका रंग
शैकल किए हुए पीतल की तरह था।
3 और उसने एक हाथ को शबीह की तरह बढ़ा कर मेरे सिर के
बालों से मुझे पकड़ा, और रूह ने मुझे आसमान और ज़मीन के
बीच बुलन्द किया और मुझे इलाही ख़्वाब में येरूशलेम में उत्तर
की तरफ़ अन्दरूनी फाटक पर, जहाँ ग़ैरत की मूरत का घर था जो
ग़ैरत भड़काती है ले आई।
4 और क्या देखता हूँ कि वहाँ इस्राईल के ख़ुदा का जलाल, उस
ख़्वाब के मुताबिक़ जो मैंने उस वादी में देखा था मौजूद है।

5 तब उसने मुझे फ़रमाया, कि ऐ आदमज़ाद अपनी आँखें उत्तर
की तरफ उठा और मैंने उस तरफ़ आँखें उठाई और क्या देखता
हूँ कि उत्तर की तरफ़ मज़बह के दरवाज़े पर ग़ैरत की वही मूरत
दहलीज़ में हैं।
6 और उसने मुझे फिर फ़रमाया, कि "ऐ आदमज़ाद, तू उनके
काम देखता है? या'नी वह मकरूहात — ए — 'अज़ीम जो बनी
— इस्राईल यहाँ करते हैं, ताकि मैं अपने हैकल को छोड़ कर उससे
दूर हो जाऊँ; लेकिन तू अभी इनसे भी बड़ी मकरूहात देखेगा।"
7 तब वह मुझे सहन के फाटक पर लाया, और मैंने नज़र की
और क्या देखता हूँ कि दीवार में एक छेद है।
8 तब उसने मुझे फ़रमाया, कि "ऐ आदमज़ाद, दीवार खोद।"
और जब मैंने दीवार को खोदा, तो एक दरवाज़ा देखा।
9 फिर उसने मुझे फ़रमाया, अन्दर जा, और जो नफ़रती काम
वह यहाँ करते हैं देख।
10 तब मैंने अन्दर जा कर देखा। और क्या देखता हूँ कि हरनू'
के सब रहने वाले कीड़ों और मकरूह जानवरों की सब सूरतें और
बनी — इस्राईल के बुत चारों तरफ़ दीवार पर मुनक़्क़श हैं।
11 और बनी — इस्राईल के बुज़ुर्गों में से सत्तर शख़्स उनके
आगे खड़े हैं और याज़नियाह — बिन — साफ़न उनके बीच में
खड़ा है, और हर एक के हाथ में एक ख़ुशबू दान है और ख़ुशबू का
बादल उठ रहा है।
12 तब उसने मुझे फ़रमाया, कि 'ऐआदमज़ाद, क्या तूने देखा
कि बनी — इस्राईल के सब बुज़ुर्ग तारीकी में या'नी अपने
मुनक़्क़श काशानों में क्या करते हैं? क्यूँकि वह कहते हैं कि
ख़ुदावन्द हम को नहीं देखता; ख़ुदावन्द ने मुल्क को छोड़ दिया
है।
13 और उसने मुझे यह भी फ़रमाया, कि "तू अभी इनसे भी बड़ी
मकरूहात, जो वह करते हैं देखेगा।"

14 तब वह मुझे ख़ुदावन्द के घर के उत्तरी फाटक पर लाया, और क्या देखता हूँ कि वहाँ 'औरतें बैठी तम्मूज़ पर नोहा कर रही हैं।

15 तब उसने मुझे फ़रमाया, कि "ऐ आदमज़ाद, क्या तूने यह देखा है? तू अभी इनसे भी बड़ी मकरूहात देखेगा।"

16 फिर वह मुझे ख़ुदावन्द के घर के अन्दरूनी सहन में ले गया, और क्या देखता हूँ कि ख़ुदावन्द की हैकल के दरवाज़े पर आस्ताने और मज़बह के बीच, क़रीबन पच्चीस लोग हैं जिनकी पीठ ख़ुदावन्द की हैकल की तरफ़ है और उनके मुँह पूरब की तरफ़ हैं; और पूरब का रुख़ करके आफ़ताब को सिज्दा कर रहे हैं।

17 तब उसने मुझे फ़रमाया, कि 'ऐ आदमज़ाद, क्या तूने यह देखा है? क्या बनी यहूदाह के नज़दीक यह छोटी सी बात है कि वह यह मकरूह काम करें जो यहाँ करते हैं क्यूँकि उन्होंने तो मुल्क को ज़ुल्म से भर दिया और फिर मुझे ग़ज़बनाक किया, और देख, वह अपनी नाक से डाली लगाते हैं।

18 फिर मैं भी क़हर से पेश आऊँगा। मेरी आँख रि'आयत न करेगी और मैं हरगिज़ रहम न करूँगा, और अगरचे वह चिल्ला चिल्ला कर मेरे कानों में आह — व — नाला करें तोभी में उनकी न सुनूँगा।

9

[illegible]

1 फिर उसने बुलन्द आवाज़ से पुकार कर मेरे कानों में कहा कि, उनको जो शहर के मुन्तज़िम हैं मैं नज़दीक बुला हर एक शख़्स अपना मुहलिक हथियार हाथ में लिए हो।

2 और देखो छ: मर्द ऊपर के फाटक के रास्ते से जो उत्तर की तरफ़ है चले आए और हर एक मर्द के हाथ में उसका ख़ूँरेज़ हथियार था और उनके बीच एक आदमी कतानी लिबास पहने था

और उसकी कमर पर लिखने की दवात थी तब वह अन्दर गए और
पीतल के मज़बह के पास खड़े हुए।

3 और इस्राईल के ख़ुदावन्द का जलाल करूबी पर से जिस पर
वह था उठ कर घर के आस्ताना पर गया और उसने उस मर्द को
जो कतानी लिबास पहने था और जिसके पास लिखने की दवात
थी पुकारा।

4 और ख़ुदावन्द ने उसे फ़रमाया, कि "शहर के बीच से, हाँ,
येरूशलेम के बीच से गुज़र और उन लोगों की पेशानी पर जो उन
सब नफ़रती कामों की वजह से जो उसके बीच किए जाते हैं, आहें
मारते और रोते हैं, निशान कर दे।"

5 और उसने मेरे सुनते हुए दूसरों से फ़रमाया, उसके पीछे पीछे
शहर में से गुज़र करो और मारो। तुम्हारी आँखें रि'आयत न करें,
और तुम रहम न करो।

6 तुम बूढ़ों और जवानों और लड़कियों और नन्हें बच्चों और
'औरतों को बिल्कुल मार डालो, लेकिन जिनपर निशान है उनमें
से किसी के पास न जाओ; और मेरे हैकल से शुरू' करो। तब
उन्होंने उन बुज़ुर्गों से जो हैकल के सामने थे शुरू' किया।

7 और उसने उनको फ़रमाया, हैकल को नापाक करो, और
मक़्तूलों से सहनों को भर दो। चलो, बाहर निकलो। इसलिए वह
निकल गए और शहर में क़त्ल करने लगे।

8 और जब वह उनको क़त्ल कर रहे थे और मैं बच रहा था, तो
यूँ हुआ कि मैं मुँह के बल गिरा और चिल्ला कर कहा, आह! ऐ
ख़ुदावन्द ख़ुदा, क्या तू अपना क़हर — ए — शदीद येरूशलेम पर
नाज़िल कर के इस्राईल के सब बाक़ी लोगों को हलाक करेगा?

9 तब उसने मुझे फ़रमाया, कि "इस्राईल और यहूदाह के
ख़ान्दान की बदकिरदारी बहुत 'अज़ीम है, मुल्क ख़ूँरेज़ी से पुर है
और शहर बे इन्साफ़ी से भरा है; क्यूँकि वह कहते हैं, कि 'ख़ुदावन्द
ने मुल्क को छोड़ दिया है और वह नहीं देखता।

10 फिर मेरी आँख रि'आयत न करेगी, और मैं हरगिज़ रहम न
करूँगा; मैं उनकी चाल चलन का बदला उनके सिर पर लाऊँगा।”
11 और देखो, उस आदमी ने जो कतानी लिबास पहने था और
जिसके पास लिखने की दवात थी, यूँ कैफ़ियत बयान की, जैसा
तूने मुझे हुक्म दिया, मैंने किया।

10

[illegible]

1 तब मैंने निगाह की और क्या देखता हूँ, कि उस फ़ज़ा पर जो
करूबियों के सिर के ऊपर थी, एक चीज़ नीलम की तरह दिखाई
दी और उसकी सूरत तख़्त की जैसी थी।
2 और उसने उस आदमी को जो कतानी लिबास पहने था
फ़रमाया, उन पहियों के अन्दर जा जो करूबी के नीचे हैं, और
आग के अंगारे जो करूबियों के बीच हैं मुट्ठी भर कर उठा और
शहर के ऊपर बिखेर दे। और वह गया और मैं देखता था।
3 जब वह शख़्स अन्दर गया, तब करूबी हैकल की दहनी तरफ़
खड़े थे, और अन्दरूनी सहन बादल से भर गया।
4 तब ख़ुदावन्द का जलाल करूबी पर से बुलन्द होकर हैकल
के आस्ताने पर आया, और हैकल बादल से भर गई; और सहन
ख़ुदावन्द के जलाल के नूर से मा'मूर हो गया।
5 और करूबियों के परों की आवाज़ बाहर के सहन तक सुनाई
देती थी, जैसे क़ादिर — ए — मुतलक़ ख़ुदा की आवाज़ जब वह
कलाम करता है।
6 और यूँ हुआ कि जब उसने उस शख़्स को, जो कतानी लिबास
पहने था, हुक्म किया कि वह पहिए के अन्दर से और करूबियों
के बीच से आग ले; तब वह अन्दर गया और पहिए के पास खड़ा
हुआ।
7 और करूबियों में से एक करूबी ने अपना हाथ उस आग की
तरफ़, जो करूबियों के बीच थी, बढ़ाया और आग लेकर उस शख़्स

के हाथों पर, जो कतानी लिबास पहने था रख्खी; वह लेकर बाहर
चला गया।
8 और करूबियों के बीच उनके परों के नीचे इंसान के हाथ की
तरह सूरत नज़र आई
9 और मैंने निगाह की तो क्या देखता हूँ कि चार पहिए
करूबियों के आस पास हैं, एक करूबी के पास एक पहिया और
दूसरे करूबी के पास दूसरा पहिया था; और उन पहियों का जलवा
देखने में ज़बरजद की तरह था।
10 और उनकी शक्ल एक ही तरह की थी, जैसे पहिया पहिये
के अन्दर हो।
11 जब वह चलते थे तो अपनी चारों तरफ़ पर चलते थे; वह
चलते हुए मुड़ते न थे, जिस तरफ़ को सिर का रुख़ होता था उसी
तरफ़ उसके पीछे पीछे जाते थे; वह चलते हुए मुड़ते न थे।
12 और उनके तमाम बदन और पीठ और हाथों और परों और
उन पहियों में चारों तरफ़ आँखें ही आँखें थीं, या'नी उन चारों के
पहियों में।
13 इन पहियों को मेरे सुनते हुए चर्ख कहा गया।
14 और हर एक के चार चेहरे थे: पहला चेहरा करूबी का, दूसरा
इंसान का, तीसरा शेर — ए — बबर का, और चौथा 'उक़ाब का।
15 और करूबी बुलन्द हुए। यह वह जानदार था, जो मैंने नहर
— ए — किबार के पास देखा था।
16 और जब करूबी चलते थे, तो पहिए भी उनके साथ — साथ
चलते थे; और जब करूबियों ने अपने बाज़ू फैलाए ताकि ज़मीन
से ऊपर बुलन्द हों, तो वह पहिए उनके पास से जुदा न हुए।
17 जब वह ठहरते थे, तो यह भी ठहरते थे; और जब वह बुलन्द
होते थे, तो यह भी उनके साथ बुलन्द हो जाते थे; क्यूँकि जानदार
की रूह उनमें थी।
18 और ख़ुदावन्द का जलाल घर के आस्ताने पर से रवाना हो

कर करूबियों के ऊपर ठहर गया।
19 तब करूबियों ने अपने बाज़ू फैलाए, और मेरी आँखों के
सामने ज़मीन से बुलन्द हुए और चले गए; और पहिए उनके साथ
साथ थे, और वह ख़ुदावन्द के घर के पूरबी फाटक के आसताने पर
ठहरे और इस्राईल के ख़ुदा का जलाल उनके ऊपर जलवागर था।
20 यह वह जानदार है जो मैंने इस्राईल के ख़ुदा के नीचे नहर
— ए — किबार के किनारे पर देखा था और मुझे मा'लूम था कि
करूबी हैं।
21 हर एक के चार चेहरे थे और चार बाज़ू और उनके बाज़ुओं के
नीचे इंसान के जैसा हाथ था।
22 रही उनके चेहरों की सूरत, यह वही चेहरे थे जो मैंने नहर
— ए — किबार के किनारे पर देखे थे, या'नी उनकी सूरत और वह
ख़ुद, वह सब के सब सीधे आगे ही को चले जाते थे।

11

[illegible]

1 और रूह मुझ को उठा कर ख़ुदावन्द के घर के पूरबी फाटक
पर जिसका रुख़ पूरब की तरफ़ है ले गई, और क्या देखता हूँ कि
उस फाटक के आस्ताने पर पच्चीस शख़्स हैं। और मैंने उनके बीच
याज़नियाह बिन अज़ूर और फ़िल्तियाह बिन बिनायाह, लोगों के
हाकिमों को देखा।
2 और उसने मुझे फ़रमाया, कि "ऐ आदमज़ाद, यह वह लोग हैं
जो इस शहर में बदकिरदारी की तदबीर और बुरी मश्वरत करते
हैं।
3 जो कहते हैं, कि 'घर बनाना नज़दीक नहीं है, यह शहर तो
देग है और हम गोश्त हैं।
4 इसलिए तू उनके ख़िलाफ़ नबुव्वत कर; ऐ आदमज़ाद,
नबुव्वत कर।"

5 और ख़ुदावन्द की रूह मुझ पर नाज़िल हुई और उसने मुझे
कहा कि ख़ुदावन्द यूँ फ़रमाता है: कि ऐ बनी — इस्राईल तुम ने
यूँ कहा है, मैं तुम्हारे दिल के ख़्यालात को जानता हूँ।
6 तुम ने इस शहर में बहुतों को क़त्ल किया, बल्कि उसकी
सड़कों को मक़तूलों से भर दिया है।
7 इसलिए ख़ुदावन्द ख़ुदा यूँ फ़रमाता है: कि तुम्हारे मक़्तूल
जिनकी लाशें तुम ने शहर में रख छोड़ी हैं, यह वही गोश्त है और
यह शहर वही देग है; लेकिन तुम इस से बाहर निकाले जाओगे।
8 तुम तलवार से डरे हो, और ख़ुदावन्द ख़ुदा फ़रमाता है, कि
मैं तलवार तुम पर लाऊँगा।
9 और मैं तुम को उस से बाहर निकालूँगा और तुम को परदेसियों
के हवाले कर दूँगा, और तुम को सज़ा दूँगा।
10 तुम तलवार से क़त्ल होगे, इस्राईल की हदों के अन्दर मैं
तुम्हारी 'अदालत करूँगा, और तुम जानोगे कि मैं ख़ुदावन्द हूँ।
11 यह शहर तुम्हारे लिए देग न होगा, न तुम इसमें का गोश्त
होगे; बल्कि मैं बनी — इस्राईल की हदों के अन्दर तुम्हारा फ़ैसला
करूँगा।
12 और तुम जानोगे कि मैं ख़ुदावन्द हूँ, जिसके क़ानून पर तुम
नहीं चले और जिसके हुक्मों पर तुम ने 'अमल नहीं किया; बल्कि
तुम उन क़ौमों के हुक्मों पर जो तुम्हारे आस पास हैं 'अमल किया।
13 और जब मैं नबुव्वत कर रहा था, तो यूँ हुआ कि फ़लतियाह
— बिन — बिनायाह मर गया। तब मैं मुँह के बल गिरा और
बुलन्द आवाज़ से चिल्ला कर कहा, कि "ऐ ख़ुदावन्द ख़ुदा! क्या
तू बनी — इस्राईल के बक़िये को बिल्कुल मिटा डालेगा?"
14 तब ख़ुदावन्द का कलाम मुझ पर नाज़िल हुआ:
15 कि 'ऐ आदमज़ाद, तेरे भाइयों, हाँ, तेरे भाइयों या'नी तेरे
क़राबतियों बल्कि सब बनी — इस्राईल से, हाँ, उन सब से

येरूशलेम के बाशिन्दों ने कहा है, 'ख़ुदावन्द से दूर रहो। यह मुल्क
हम को मीरास में दिया गया है।
16 इसलिए तू कह, 'ख़ुदावन्द ख़ुदा यूँ फ़रमाता है: कि हर चन्द
मैंने उनको क़ौमों के बीच हाँक दिया है और ग़ैर — मुल्कों में तितर
बितर किया लेकिन मैं उनके लिए थोड़ी देर तक उन मुल्कों में जहाँ
जहाँ वह गए एक हैकल हूँगा।
17 इसलिए तू कह, 'ख़ुदावन्द ख़ुदा यूँ फ़रमाता है: मैं तुम को
उम्मतों में से जमा' कर लूँगा, और उन मुल्कों में से जिनमें तुम
तितर बितर हुए तुम को जमा' करूँगा और इस्राईल का मुल्क
तुम को दूँगा।
18 और वह वहाँ आयेंगे और उसकी तमाम नफ़रती और मकरूह
चीज़ें उस से दूर कर देंगे।
19 और मैं उनको नया दिल दूँगा और नई रूह तुम्हारे बातिन में
डालूँगा, और संगीन दिल उनके जिस्म से निकाल कर दूँगा और
उनको गोश्त का दिल 'इनायत करूँगा;
20 ताकि वह मेरे तौर तरीक़े पर चलें और मेरे हुक्मों पर 'अमल
करें और उन पर 'अमल करें, और वह मेरे लोग होंगे और मैं उनका
ख़ुदा हूँगा।
21 लेकिन जिनका दिल अपनी नफ़रती और मकरूह चीज़ों का
तालिब होकर उनकी पैरवी में है, उनके बारे में ख़ुदावन्द ख़ुदा
फ़रमाता है: कि मैं उनके चाल चलन को उन ही के सिर पर
लाऊँगा।
22 तब करूबियों ने अपने अपने बाज़ू बुलन्द किए, और पहिए
उनके साथ साथ चले, और इस्राईल के ख़ुदा का जलाल उनके
ऊपर जलवागर था।
23 और ख़ुदावन्द का जलाल शहर में से उठा, और शहर की
पूरबी तरफ़ के पहाड़ पर जा ठहरा।
24 तब रूह ने मुझे उठाया और ख़ुदा के रूह ने ख़्वाब में मुझे

फिर कसदियों के मुल्क में ग़ुलामों के पास पहुँचा दिया। और वह
ख़्वाब जो मैंने देखा था मुझ से ग़ायब हो गया।
25 और मैंने ग़ुलामों से ख़ुदावन्द की वह सब बातें बयान कीं,
जो उसने मुझ पर ज़ाहिर की थीं।

12

□□□ □□□□□ □□□□□ □□□□□ □□ □□□□□□□

1 और ख़ुदावन्द का कलाम मुझ पर नाज़िल हुआ।
2 कि ऐ आदमज़ाद, तू एक बाग़ी घराने के बीच रहता है, जिनकी
आँखें हैं कि देखें पर वह नहीं देखते, और उनके कान हैं कि सुनें पर
वह नहीं सुनते; क्यूँकि वह बाग़ी ख़ान्दान हैं।
3 इसलिए ऐ आदमज़ाद, सफ़र का सामान तैयार कर और दिन
को उनके देखते हुए अपने मकान से रवाना हो, तू उनके सामने
अपने मकान से दूसरे मकान को जा; मुम्किन है कि वह सोचें,
अगरचे वह बाग़ी ख़ान्दान हैं।
4 और तू दिन को उनकी आँखों के सामने अपना सामान बाहर
निकाल, जिस तरह नक़्ल — ए — मकान के लिए सामान
निकालते हैं और शाम को उनके सामने उनकी तरह जो ग़ुलाम
होकर निकल जाते हैं निकल जा।
5 उनकी आँखों के सामने दीवार में सूराख़ कर और उस रास्ते
से सामान निकाल।
6 उनकी आँखों के सामने तू उसे अपने कान्धे पर उठा, और
अन्धेरे में उसे निकाल ले जा, तू अपना चेहरा छिपा ताकि ज़मीन
को न देख सके; क्यूँकि मैंने तुझे बनी — इस्राईल के लिए एक
निशान मुक़र्रर किया है।
7 चुनाँचे जैसा मुझे हुक्म हुआ था वैसा ही मैंने किया। मैंने दिन
को अपना सामान निकाला, जैसे नक़्ल — ए — मकान के लिए
निकालते हैं; और शाम को मैंने अपने हाथ से दीवार में सूराख

किया, मैंने अन्धेरे में उसे निकाला और उनके देखते हुए काँधे पर उठा लिया।

8 और सुबह को ख़ुदावन्द का कलाम मुझ पर नाज़िल हुआ:

9 कि ऐ आदमज़ाद, क्या बनी इस्राईल ने जो बाग़ी ख़ान्दान हैं, तुझ से नहीं पूछा, 'तू क्या करता है?

10 उनको जवाब दे, कि 'ख़ुदावन्द ख़ुदा यूँ फ़रमाता है: कि येरूशलेम के हाकिम और तमाम बनी — इस्राईल के लिए जो उसमें हैं, यह बार — ए — नबुव्वत है।

11 उनसे कह दे, कि 'मैं तुम्हारे लिए निशान हूँ: जैसा मैंने किया, वैसा ही उनसे सुलूक किया जाएगा। वह जिलावतन होंगे और ग़ुलामी में जाएँगे।

12 और जो उनमें हाकिम हैं, वह शाम को अन्धेरे में उठ कर अपने काँधे पर सामान उठाए हुए निकल जाएगा। वह दीवार में सूराख़ करेंगे कि उस रास्ते से निकाल ले जाएँ। वह अपना चेहरा छिपाएगा, क्यूँकि अपनी आँखों से ज़मीन को न देखेगा।

13 और मैं अपना जाल उस पर बिछाऊँगा और वह मेरे फन्दे में फंस जाएगा। और मैं उसे कसदियों के मुल्क में बाबुल में पहुचाऊँगा, लेकिन वह उसे न देखेगा, अगरचे वहीं मरेगा।

14 और मैं उसके आस पास के सब हिमायत करने वालों और उसके सब ग़ोलों की तमाम अतराफ़ में तितर बितर करूँगा, और मैं तलवार खींच कर उनका पीछा करूँगा।

15 और जब मैं उनकी क़ौम में तितर बितर और मुल्कों में तितर — बितर करूँगा, तब वह जानेंगे कि मैं ख़ुदावन्द हूँ।

16 लेकिन मैं उनमें से कुछ को तलवार और काल से और वबा से बचा रखूँगा, ताकि वह क़ौमों के बीच जहाँ कहीं जाएँ अपने तमाम नफ़रती कामों को बयान करें, और वह मा'लूम करेंगे कि मैं ख़ुदावन्द हूँ।

17 और ख़ुदावन्द का कलाम मुझ पर नाज़िल हुआ:

18 कि 'ऐआदमज़ाद! तू थरथराते हुए रोटी खा, और काँपते
हुए फ़िक्रमन्दी से पानी पी।
19 और इस मुल्क के लोगों से कह कि ख़ुदावन्द ख़ुदा येरूशलेम
और मुल्क — ए — इस्राईल के बाशिन्दों के हक़ में यूँ फ़रमाता है:
कि वह फ़िक्रमन्दी से रोटी खाएँगे और परेशानी से पानी पिएँगे,
ताकि उसके बाशिन्दों की सितमगरी की वजह से मुल्क अपनी
मा'मूरी से ख़ाली हो जाए।
20 और वह बस्तियाँ जो आबाद हैं उजाड़ हो जायेंगी और मुल्क
वीरान होगा और तुम जानोगे कि ख़ुदावन्द मैं हूँ।
21 फिर ख़ुदा वन्द का कलाम मुझ पर नाज़िल हुआ:
22 कि ऐ आदमज़ाद! मुल्क — ए — इस्राईल में यह क्या
मिसाल जारी है, कि 'वक़्त गुज़रता जाता है, और किसी ख़्वाब
का कुछ अन्जाम नहीं होता'?
23 इसलिए उनसे कह दे, कि 'ख़ुदावन्द ख़ुदा यूँ फ़रमाता है:
कि मैं इस मिसाल को ख़त्म करूँगा और फिर इसे इस्राईल में
इस्ते'माल न करेंगे। बल्कि तू उनसे कह, वक़्त आ गया है और हर
ख़्वाब का अन्जाम क़रीब है।
24 क्यूँकि आगे को बनी इस्राईल के बीच बेमतलब के ख़्वाब
और ख़ुशामद की ग़ैबदानी न होगी।
25 क्यूँकि मैं ख़ुदावन्द हूँ मैं कलाम करूँगा और मेरा कलाम
ज़रूर पूरा होगा उसके पूरा होने में देर न होगी बल्कि ख़ुदावन्द
ख़ुदा यूँ फ़रमाता है कि ऐ बाग़ी ख़ान्दान मैं तुम्हारे दिनों में कलाम
करके उसे पूरा करूँगा।
26 और ख़ुदावन्द का कलाम मुझ पर नाज़िल हुआ।
27 कि 'ऐ आदमज़ाद देख बनी इस्राईल कहते हैं कि जो ख़्वाब
उसने देखा है बहुत ज़मानों में ज़ाहिर होगा और वह उन दिनों की
ख़बर देता है जो बहुत दूर हैं।

28 इसलिए उनसे कह, ख़ुदावन्द ख़ुदा यूँ फ़रमाता है: कि आगे
की मेरी किसी बात को पूरा होने में देर न होगी, बल्कि ख़ुदावन्द
ख़ुदा फ़रमाता है, कि जो बात मैं कहूँगा पूरी हो जाएगी।

13

[illegible]

1 और ख़ुदावन्द का कलाम मुझ पर नाज़िल हुआ।
2 कि 'ऐ आदमज़ाद, इस्राईल के नबी जो नबुव्वत करते हैं,
उनके ख़िलाफ़ नबुव्वत कर और जो अपने दिल से बात बनाकर
नबुव्वत करते हैं उनसे कह, 'ख़ुदावन्द का कलाम सुनो!
3 ख़ुदावन्द ख़ुदा यूँ फ़रमाता है, कि बेवक़ूफ़ नबियों पर
अफ़सोस जो अपनी ही रूह की पैरवी करते हैं और उन्होंने कुछ
नहीं देखा।
4 ऐ इस्राईल, तेरे नबी उन लोमड़ियों की तरह हैं, जो वीरानों
में रहती हैं।
5 तुम रुखनों पर नहीं गए और न बनी — इस्राईल के लिए
फ़सील बनाई, ताकि वह ख़ुदावन्द के दिन जंगगाह में खड़े हों।
6 उन्होंने बातिल और झूठा शगुन देखा है, जो कहते हैं, कि
'ख़ुदावन्द फ़रमाता है, अगरचे ख़ुदावन्द ने उनको नहीं भेजा, और
लोगों को उम्मीद दिलाते हैं कि उनकी बात पूरी हो जाएगी।
7 क्या तुम ने बातिल ख़्वाब नहीं देखा? क्या तुम ने झूठी
ग़ैबदानी नहीं की? क्यूँकि तुम कहते हो कि ख़ुदावन्द ने फ़रमाया
है, अगरचे मैंने नहीं फ़रमाया।
8 इसलिए ख़ुदावन्द ख़ुदा यूँ फ़रमाता है: "चूँकि तुम ने झूट
कहा है और बुतलान देखा, इसलिए ख़ुदावन्द ख़ुदा फ़रमाता है
कि मैं तुम्हारा मुख़ालिफ़ हूँ।
9 और मेरा हाथ उन नबियों पर, जो बुतलान देखते हैं और झूटी
ग़ैबदानी करते हैं, चलेगा; न वह मेरे लोगों के मजमे' में शामिल

होंगे और न इस्राईल के ख़ान्दान के दफ़्तर में लिखे जाएँगे और
न वह इस्राईल के मुल्क में दाख़िल होंगे, और तुम जान लोगे कि
मैं ख़ुदावन्द ख़ुदा हूँ।
10 इस वजह से कि उन्होंने मेरे लोगों को यह कह कर
बरग़लाया है कि सलामती है हालाँकि सलामती नहीं; जब कोई
दीवार बनाता है, तो वह उस पर कच्चा गारा लगाते हैं।
11 तू उनसे जो उस पर गारा लगाते हैं कह, वह गिर जाएगी
क्यूँकि मूसलाधार बारिश होगी और बड़े बड़े ओले पड़ेंगे और
आँधी उसे गिरा देगी।
12 और जब वह दीवार गिरेगी तो क्या लोग तुम से न पूछेंगे,
कि 'वह गारा कहाँ है, जो तुम ने उस पर की थी?"
13 इसलिए ख़ुदावन्द ख़ुदा यूँ फ़रमाता है: कि मैं अपने ग़ज़ब
के तूफ़ान से उसे तोड़ दूँगा, और मेरे क़हर से झमाझम मेंह बरसेगा
और मेरे क़हर के ओले पड़ेंगे ताकि उसे हलाक करें।
14 इसलिए मैं उस दीवार को जिस पर तुम ने कच्चा गारा किया
है तोड़ डालूँगा और ज़मीन पर गिराऊँगा, यहाँ तक कि उसकी
बुनियाद ज़ाहिर हो जाएगी। हाँ, वह गिरेगी और तुम उसी में
हलाक होगे, और जानोगे कि मैं ख़ुदावन्द हूँ।
15 मैं अपना क़हर उस दीवार पर और उन पर जिन्होंने उस पर
कच्चा गारा किया है पूरा करूँगा, और तब मैं तुम से कहूँगा, कि
न दीवार रही और न वह रहे जिन्होंने उस पर गारा किया,
16 या'नी इस्राईल के नबी जो येरूशलेम के बारे में नबुव्वत
करते हैं, और उसकी सलामती के ख़्वाब देखते हैं हालाँकि
सलामती नहीं है ख़ुदावन्द ख़ुदा फ़रमाता है।
17 "और ऐ आदमज़ाद, तू अपनी क़ौम की बेटियों की तरफ़,
जो अपने दिल बात बना कर नबुव्वत करती हैं मुतवज्जह हो कर
उनके ख़िलाफ़ नबुव्वत कर,
18 और कह ख़ुदावन्द ख़ुदा यूँ फ़रमाता है कि अफ़सोस तुम पर

जो सब कोहनियों के नीचे की गद्दी सीते हो, और हर एक क़द के
मुवाफ़िक़ सिर के लिए बुर्क़ा' बनाती हो कि जानों को शिकार करो!
क्या तुम मेरे लोगों की जानों का शिकार करोगी और अपनी जान
बचाओगी?
19 और तुम ने मुट्ठी भर जौ के लिए और रोटी के टुकड़ों के
लिए मुझे मेरे लोगों में नापाक ठहराया, ताकि तुम उन जानों को
मार डालो जो मरने के लायक़ नहीं, और उनको ज़िन्दा रख्खो जो
ज़िन्दा रहने के लायक़ नहीं हैं; क्यूँकि तुम मेरे लोगों से जो झूट
सुनते हैं झूट बोलती हो।
20 'फिर ख़ुदावन्द ख़ुदा यूँ फ़रमाता है: कि देखो, मैं तुम्हारी
गद्दियों का दुश्मन हूँ जिनसे तुम जानों को परिन्दों की तरह
शिकार करती हो, और मैं उनको तुम्हारी कोहनियों के नीचे से
फाड़ डालूँगा, और उन जानों को जिनको तुम परिन्दों की तरह
शिकार करती हो आज़ाद कर दूँगा।
21 मैं तुम्हारे बुरक़ों को भी फाड़ूँगा और अपने लोगों को तुम्हारे
हाथ से छुड़ाऊँगा, और फिर कभी तुम्हारा बस न चलेगा कि
उनको शिकार करो, और तुम जानोगी कि मैं ख़ुदावन्द हूँ।
22 इसलिए कि तुम ने झूट बोलकर सादिक़ के दिल को उदास
किया, जिसको मैंने ग़मगीन नहीं किया; और शरीर की मदद की
है, ताकि वह अपनी जान बचाने के लिए अपनी बुरी चाल चलन
से बाज़ न आए।
23 इसलिए तुम आगे को न बतालत देखोगी और न ग़ैबगोई
करोगी, क्यूँकि मैं अपने लोगों को तुम्हारे हाथ से छुड़ाऊँगा, तब
तुम जानोगी कि ख़ुदावन्द मैं हूँ।"

14

1 फिर इस्राईल के बुज़ुर्गों में से चन्द आदमी मेरे पास आए और
मेरे सामने बैठ गए।
2 तब ख़ुदावन्द का कलाम मुझ पर नाज़िल हुआ
3 कि ऐ आदमज़ाद, इन मर्दों ने अपने बुतों को अपने दिल में
नसब किया है, और अपनी ठोकर खिलाने वाली बदकिरदारी को
अपने सामने रख्खा है; क्या ऐसे लोग मुझ से कुछ दरियाफ़्त कर
सकते हैं?
4 इसलिए तू उनसे बातें कर और उनसे कह, ख़ुदावन्द ख़ुदा
यूँ फ़रमाता है: बनी इस्राईल में से हर एक जो अपने बुतों को
अपने दिल में नस्ब करता है, और अपनी ठोकर खिलाने वाली
बदकिरदारी को अपने सामने रखता है और नबी के पास आता
है, मैं ख़ुदावन्द उसके बुतों की कसरत के मुताबिक़ उसको जवाब
दूँगा;
5 ताकि मैं बनी — इस्राईल को उन्हीं के ख़्यालात में पकड़ें,
क्यूँकि वह सब के सब अपने बुतों की वजह से मुझ से दूर हो गए
हैं।
6 इसलिए तू बनी — इस्राईल से कह, ख़ुदावन्द ख़ुदा यूँ
फ़रमाता है: तोबा करो और अपने बुतों से बाज़ आओ, और अपनी
तमाम मकरूहात से मुँह मोड़ो।
7 क्यूँकि हर एक जो बनी — इस्राईल में से या उन बेगानों में से
जो इस्राईल में रहते हैं, मुझ से जुदा हो जाता है और अपने दिल
में अपने बुत को नसब करता है, और अपनी ठोकर खिलाने वाली
बदकिरदारी को अपने सामने रखता है, और नबी के पास आता है
कि उसके ज़रिए' मुझ से दरियाफ़्त करे, उसको मैं ख़ुदावन्द ख़ुद
ही जवाब दूँगा।
8 और मेरा चेहरा उसके ख़िलाफ़ होगा और मैं निशान ठहराऊं
गा और उसको हैरत की वजह और अन्गुश्तनुमा और जरब —
उल — मिसाल बनाउँगा और अपने लोगों में से काट डालूँगा;

और तुम जानोगे कि मैं ख़ुदावन्द हूँ।

9 और अगर नबी धोका खाकर कुछ कहे, तो मैं ख़ुदावन्द ने उस
नबी को धोका दिया, और मैं अपना हाथ उस पर चलाऊँगा और
उसे अपने इस्राईली लोगों में से हलाक कर दूँगा।
10 और वह अपनी बदकिरदारी की सज़ा को बर्दाश्त करेंगे, नबी
की बदकिरदारी की सज़ा वैसी ही होगी, जैसी सवाल करने वाले
की बदकिरदारी की —
11 ताकि बनी — इस्राईल फिर मुझ से भटक न जाएँ, और
अपनी सब ख़ताओं से फिर अपने आप को नापाक न करें; बल्कि:
ख़ुदा वन्द ख़ुदा फ़रमाता है, कि वह मेरे लोग हों और मैं उनका
ख़ुदा हूँ।

12 और ख़ुदावन्द का कलाम मुझ पर नाज़िल हुआ:

13 कि ऐ आदमज़ाद, जब कोई मुल्क सख़्त ख़ता करके मेरा
गुनाहगार हो, और मैं अपना हाथ उस पर चलाऊँ और उसकी
रोटी का 'असा तोड़ डालें, और उसमें सूखा भेज़ें और उसके इंसान
और हैवान को हलाक करूँ।
14 तो अगरचे यह तीन शख़्स, नूह और दानीएल और अय्यूब,
उसमें मौजूद हों तोभी ख़ुदावन्द फ़रमाता है, वह अपनी सदाक़त
से सिर्फ़ अपनी ही जान बचाएँगे।
15 'अगर मैं किसी मुल्क में मुहलिक दरिन्दे भेजे कि उसमें गश्त
करके उसे तबाह करें, और वह यहाँ तक वीरान हो जाए कि दरिन्दों
की वजह से कोई उसमें से गुज़र न सके,
16 तो ख़ुदावन्द ख़ुदा फ़रमाता है, मुझे अपनी हयात की क़सम,
अगरचे यह तीन शख़्स उसमें हों तोभी वह न बेटों को बचा
सकेंगे न बेटियों को; सिर्फ़ वह ख़ुद ही बचेंगे और मुल्क वीरान
हो जाएगा।
17 "या अगर मैं उस मुल्क पर तलवार भेजूँ और कहूँ कि ऐ
तलवार मुल्क में गुज़र कर और मैं उसके इंसान और हैवान को

काट डालें,
18 तो ख़ुदावन्द ख़ुदा फ़रमाता है, मुझे अपनी हयात की क़सम
अगरचे यह तीन शख़्स उसमें हों, तोभी न बेटों को बचा सकेंगे न
बेटियों को, बल्कि सिर्फ़ वह ख़ुद ही बच जाएँगे।
19 या अगर मैं उस मुल्क में वबा भेजूँ और ख़ूँरेज़ी करा कर
अपना क़हर उस पर नाज़िल' करूँ कि वहाँ के इंसान और हैवान
को काट डालें,
20 अगरचे नूह और दानिएल और अय्यूब उसमें हों तो भी
ख़ुदावन्द ख़ुदा फ़रमाता है मुझे अपनी हयात की क़सम वह न
बेटे को बचा सकेंगे न बेटी को, बल्कि अपनी सदाक़त से सिर्फ़
अपनी ही जान बचाएँगे।
21 फिर ख़ुदावन्द ख़ुदा यूँ फ़रमाता है: जब मैं अपनी चार बड़ी
बलाएँ, या'नी तलवार और सूखा और मुहलिक दरिन्दे और वबा
येरूशलेम पर भेजूँ कि उसके इंसान और हैवान को काट डालें, तो
क्या हाल होगा?
22 तोभी वहाँ थोड़े से बेटे — बेटियाँ बच रहेंगे जो निकालकर
तुम्हारे पास पहुँचाए जाएँगे, और तुम उनके चाल चलन और
उनके कामों को देखकर उस आफ़त के बारे में, जो मैंने येरूशलेम
पर भेजी और उन सब आफ़तों के बारे में जो मैं उस पर लाया हूँ
तसल्ली पाओगे।
23 और वह भी जब तुम उनके चाल चलन को और उनके कामों
को देखोगे, तुम्हारी तसल्ली का ज़रिया' होंगे और तुम जानोगे
कि जो कुछ मैंने उसमें किया है बे वजह नहीं किया, ख़ुदावन्द
फ़रमाता है।"

15

[illegible]

1 और ख़ुदावन्द का कलाम मुझ पर नाज़िल हुआ:

2 कि 'ऐ आदमज़ाद, क्या ताक की लकड़ी और दरख़्तों की
लकड़ी से, या'नी शाख़ — ए — अंगूर जंगल के दरख़्तों से कुछ
बेहतर है?
3 क्या उसकी लकड़ी कोई लेता है कि उससे कुछ बनाए, या
लोग उसकी खूंटियाँ बना लेते हैं कि उन पर बर्तन लटकाएँ?
4 देख, वह आग में ईन्धन के लिए डाली जाती है, जब आग
उसके दोनों सिरों को खा गई और बीच के हिस्से को भसम कर
चुकी, तो क्या वह किसी काम की है?
5 देख, जब वह सही थी तो किसी काम की न थी, और जब
आग से जल गई तो किस काम की है?
6 फिर ख़ुदावन्द ख़ुदा यूँ फ़रमाता है: जिस तरह मैंने जंगल के
दरख़्तों में से अंगूर के दरख़्त को आग का ईन्धन बनाया, उसी
तरह येरूशलेम के बाशिन्दों को बनाऊँगा।
7 और मेरा चेहरा उनके ख़िलाफ़ होगा, वह आग से निकल
भागेंगे पर आग उनको भसम करेगी; और जब मेरा चेहरा उनके
ख़िलाफ़ होगा, तो तुम जानोगे कि ख़ुदावन्द मैं हूँ।
8 और मैं मुल्क को उजाड़ डालूँगा, इसलिए कि उन्होंने बड़ी
बेवफ़ाई की है, ख़ुदावन्द ख़ुदा फ़रमाता है।

16

[illegible]

1 फिर ख़ुदावन्द का कलाम मुझ पर नाज़िल हुआ:
2 कि ऐ आदमज़ाद! येरूशलेम को उसके नफ़रती कामों से
आगाह कर,
3 और कह, ख़ुदावन्द ख़ुदा येरूशलेम से यूँ फ़रमाता है: तेरी
विलादत और तेरी पैदाइश कनान की सरज़मीन की है; तेरा बाप
अमूरी था और तेरी माँ हित्ती थी।
4 और तेरी पैदाइश का हाल यूँ है कि जिस दिन तू पैदा हुई
तेरी नाफ़ काटी न गई, और न सफ़ाई के लिए तुझे पानी से ग़ुस्ल

मिला, और न तुझ पर नमक मला गया, और तू कपड़ों में लपेटी
न गई।
5 किसी की आँख ने तुझ पर रहम न किया कि तेरे लिए यह काम
करे और तुझ पर मेहरबानी दिखाए बल्कि तू अपनी विलादत के
दिन बाहर मैदान में फेंकी गई, क्यूँकि तुझ से नफ़रत रखते थे।
6 तब मैंने तुझ पर गुज़र किया और तुझे तेरे ही ख़ून में लोटती
देखा, और मैंने तुझे जब तू अपने ख़ून में आग़िश्ता थी कहा,
'जीती रह! हाँ, मैंने तुझ ख़ून आलूदा से कहा, 'जीती रह!
7 मैंने तुझे चमन के शगूफ़ों की तरह हज़ार चन्द बढ़ाया,
इसलिए तू बढ़ीं, और कमाल और जमाल को पहुँची तेरी छातियाँ
उठीं और तेरी ज़ुल्फें बढ़ीं लेकिन तू नंगी और बरहना थी।
8 फिर मैंने तेरी तरफ़ गुज़र किया और तुझ पर नज़र की, और
क्या देखता हूँ कि तू 'इश्क़ अंगेज़ उम्र को पहुँच गई है; फिर मैंने
अपना दामन तुझ पर फैलाया और तेरी बरहनगी को छिपाया,
और क़सम खाकर तुझ से 'अहद बाँधा ख़ुदावन्द ख़ुदा फ़रमाता है
और तू मेरी हो गई।
9 फिर मैंने तुझे पानी से ग़ुस्ल दिया, और तेरा ख़ून बिल्कुल धो
डाला और तुझ पर 'इत्र मला।
10 और मैंने तुझे ज़र — दोज़ लिबास से मुलब्बस किया, और
तुख़स की खाल की जूती पहनाई, नफ़ीस कतान से तेरा कमरबन्द
बनाया और तुझे सरासर रेशम से मुलब्बस किया।
11 मैंने तुझे ज़ेवर से आरास्ता किया, तेरे हाथों में कंगन पहनाए
और तेरे गले में तौक़ डाला।
12 और मैंने तेरी नाक में नथ और तेरे कानों में बालियाँ पहनाई,
और एक ख़ूबसूरत ताज तेरे सिर पर रख्खा।
13 और तू सोने — चाँदी से आरास्ता हुई, और तेरी पोशाक
कतानी और रेशमी और चिकन — दोज़ी की थी; और तू मैदा
और शहद और चिकनाई खाती थी, और तू बहुत ख़ूबसूरत और

इक़बालमन्द मलिका हो गई।
14 और क़ौम — ए — 'आलम में तेरी ख़ूबसूरती की शोहरत
फैल गई, क्यूँकि, ख़ुदावन्द ख़ुदा फ़रमाता है, कि तू मेरे उस
जलाल से जो मैंने तुझे बख़्शा कामिल हो गई थी।
15 लेकिन तूने अपनी ख़ूबसूरती पर भरोसा किया और अपनी
शोहरत के वसीले से बदकारी करने लगी, और हर एक के साथ
जिसका तेरी तरफ़ गुज़र हुआ ख़ूब फ़ाहिशा बनी और उसी की हो
गई।
16 तूने अपनी पोशाक से अपने ऊँचे मक़ाम मुनक़्क़श और
आरास्ता किए, और उन पर ऐसी बदकारी की, कि न कभी हुई
और न होगी।
17 और तूने अपने सोने — चाँदी के नफ़ीस ज़ेवरों से जो मैंने
तुझे दिए थे, अपने लिए मर्दों की मूरतें बनाई और उनसे बदकारी
की।
18 और अपनी ज़र — दोज़ पोशाकों से उनको मुलब्बस किया,
और मेरा 'इत्र और ख़ुशबू उनके सामने रख्खा।
19 और मेरा खाना जो मैंने तुझे दिया, या'नी मैदा और चिकनाई
और शहद जो मैं तुझे खिलाता था, तूने उनके सामने ख़ुशबू के
लिए रख्खा: ख़ुदावन्द ख़ुदा फ़रमाता है कि यूँ ही हुआ।
20 और तूने अपने बेटों और अपनी बेटियों को, जिनको तूने मेरे
लिए पैदा किया लेकर उनके आगे क़ुर्बान किया, ताकि वह उनको
खा जाएँ, क्या तेरी बदकारी कोई छोटी बात थी,
21 कि तूने मेरे बच्चों को भी ज़बह किया और उनको बुतों के
लिए आग के हवाले किया?
22 और तूने अपनी तमाम मकरूहात और बदकारी में अपने
बचपन के दिनों को, जब कि तू नंगी और बरहना अपने ख़ून में
लोटती थी, कभी याद न किया।
23 'और ख़ुदावन्द ख़ुदा फ़रमाता है कि अपनी इस सारी

बदकारी के 'अलावा अफ़सोस! तुझ पर अफ़सोस!
24 तूने अपने लिए गुम्बद बनाया और हर एक बाज़ार में ऊँचा
मक़ाम तैयार किया।
25 तूने रास्ते के हर कोने पर अपना ऊँचा मक़ाम ता'मीर किया,
और अपनी ख़ूबसूरती को नफ़रत अंगेज़ किया, और हर एक राह
गुज़र के लिए अपने पाँव पसारे और बदकारी में तरक़्क़ी की।
26 तूने अहल — ए — मिस्र और अपने पड़ोसियों से जो बड़े
क़दआवर हैं बदकारी की और अपनी बदकारी की ज़्यादती से मुझे
ग़ज़बनाक किया।
27 फिर देख, मैंने अपना हाथ तुझ पर चलाया और तेरे वज़ीफ़े
को कम कर दिया, और तुझे तेरी बदख़्वाह फ़िलिस्तियों की
बेटियों के क़ाबू में कर दिया जो तेरी ख़राब चाल चलन से शर्मिन्दा
होती थीं।
28 फिर तूने अहल — ए — असूर से बदकारी की, क्यूँकि तू सेर
न हो सकती थी; हाँ, तूने उन से भी बदकारी की लेकिन तोभी तू
आसूदा न हुई।
29 और तूने मुल्क — ए — कन'आन से कसदियों के मुल्क तक
अपनी बदकारी को फैलाया, लेकिन इस से भी सेर न हुई।
30 ख़ुदावन्द ख़ुदा फ़रमाता है, तेरा दिल कैसा बे — इख़्तियार
है कि तू यह सब कुछ करती है, जो बेलगाम फ़ाहिशा 'औरत का
काम है,
31 इसलिए कि तू हर एक सड़क के सिरे पर अपना गुम्बद
बनाती है, और हर एक बाज़ार में अपना ऊँचा मक़ाम तैयार
करती है, और तू कस्बी की तरह नहीं क्यूँकि तू उजरत लेना बेकार
जानती है।
32 बल्कि बदकार बीवी की तरह है, जो अपने शौहर के बदले
ग़ैरों को क़ुबूल करती है।
33 लोग सब कस्बियों को हदिए देते हैं; लेकिन तू अपने यारों

को हदिए और तोहफ़े देती है, ताकि वह चारों तरफ़ से तेरे पास
आएँ और तेरे साथ बदकारी करें।
34 और तू बदकारी में और 'औरतों की तरह नहीं, क्यूँकि
बदकारी के लिए तेरे पीछे कोई नहीं आता। तू उजरत नहीं लेती
बल्कि ख़ुद उजरत देती है, इसलिए तू अनोखी है।
35 इसलिए ऐ बदकार, तू ख़ुदावन्द का कलाम सुन,
36 ख़ुदावन्द ख़ुदा यूँ फ़रमाता है: कि चूँकि तेरी नापाकी बह
निकली और तेरी बरहनगी तेरी बदकारी के ज़रिए' जो तूने अपने
यारों से की, और तेरे सब नफ़रती बुतों की वजह से और तेरे बच्चों
के ख़ून की वजह से जो तूने उनके आगे पेश किया, ज़ाहिर हो गई।
37 इसलिए देख, मैं तेरे सब यारों को तू लज़ीज़ थी, और उन
सब को जिनको तू चाहती थी और उन सबको जिनसे तू कीना
रखती है जमा' करूँगा; मैं उनको चारों तरफ़ से तेरी मुख़ालिफ़त
पर जमा' करूँगा और उनके आगे तेरी बरहनगी खोल दूँगा ताकि
वह तेरी तमाम बरहनगी देखें।
38 और मैं तेरी ऐसी 'अदालत करूँगा जैसी बेवफ़ा और ख़ूनी
बीवी की और मैं ग़ज़ब और ग़ैरत की मौत तुझ पर लाऊँगा।
39 और मैं तुझे उनके हवाले कर दूँगा, और वह तेरे गुम्बद
और ऊँचे मक़ामों को मिस्मार करेंगे और तेरे कपड़े उतारेंगे और
तेरे ख़ुशनुमा ज़ेवर छीन लेंगे, और तुझे नंगी और बरहना छोड़
जाएँगे।
40 वह तुझ पर एक हुजूम चढ़ा लाएँगे, और तुझे संगसार करेंगे
और अपनी तलवारों से तुझे छेद डालेंगे।
41 और वह तेरे घर आग से जलाएँगे और बहुत सी 'औरतों के
सामने तुझे सज़ा देंगे, और मैं तुझे बदकारी से रोक दूँगा और तू
फिर उजरत न देगी।
42 तब मेरा क़हर तुझ पर धीमा हो जाएगा, और मेरी ग़ैरत
तुझ से जाती रहेगी; और मैं तस्कीन पाऊँगा और फिर ग़ज़बनाक

न हूँगा।

43 चूँकि तूने अपने बचपन के दिनों को याद न किया, और
इन सब बातों से मुझ को फ़रोख़्त किया, इसलिए ख़ुदावन्द
ख़ुदा फ़रमाता है, देख, मैं तेरी बदराही का नतीजा तेरे सिर पर
लाऊँगा और तू आगे को अपने सब घिनौने कामों के 'अलावा
ऐसी बदज़ाती नहीं कर सकेगी।

44 देख, सब मिसाल कहने वाले तेरे बारे में यह मिसाल कहेंगे,
कि 'जैसी माँ, वैसी बेटी।

45 तू अपनी उस माँ की बेटी है जो अपने शौहर और अपने
बच्चों से घिन खाती थी, और तू अपनी उन बहनों की बहन है
जो अपने शौहरों और अपने बच्चों से नफ़रत रखती थीं; तेरी माँ
हित्ती और तेरा बाप अमूरी था।

46 और तेरी बड़ी बहन सामरिया है जो तेरी बाईं तरफ़ रहती
है, वह और उसकी बेटियाँ, और तेरी छोटी बहन जो तेरी दहनी
तरफ़ रहती हैं, सदूम और उसकी बेटियाँ हैं।

47 लेकिन तू सिर्फ उनकी राह पर नहीं चली और सिर्फ़ उन ही
के जैसे घिनौने काम नहीं किए, क्यूँकि यह तो अगरचे छोटी बात
थी, बल्कि तू अपनी तमाम चाल चलन में उनसे बदतर हो गई।

48 ख़ुदावन्द ख़ुदा फ़रमाता है, मुझे अपनी हयात की क़सम कि
तेरी बहन सदूम ने ऐसा नहीं किया, न उसने न उसकी बेटियों ने
जैसा तूने और तेरी बेटियों ने किया है।

49 देख, तेरी बहन सदूम की तक़्सीर यह थी, ग़ुरूर और रोटी
की सेरी और राहत की कसरत उसमें और उसकी बेटियों में थी;
उसने ग़रीब और मोहताज की दस्तगीरी न की।

50 वह मग़रूर थीं और उन्होंने मेरे सामने घिनौने काम किए,
इसलिए जब मैंने देखा तो उनको उखाड़ फेंका।

51 और सामरिया ने तेरे गुनाहों के आधे भी नहीं किए, तूने
उनके बदले अपनी मकरूहात को फ़िरावान किया है, और तूने

अपनी इन मकरूहात से अपनी बहनों को बेक़ुसूर ठहराया है।

52 फिर तू ख़ुद जो अपनी बहनों को मुजरिम ठहराती है, इन
गुनाहों की वजह से जो तूने किए जो उनके गुनाहों से ज़्यादा
नफ़रतअंगेज़ हैं, मलामत उठा; वह तुझ से ज़्यादा बेक़ुसूर हैं।
इसलिए तू भी रूस्वा हो और शर्म खा, क्यूँकि तूने अपनी बहनों
को बेक़ुसूर ठहराया है।

53 'और मैं उनकी ग़ुलामी को बदल दूँगा, या'नी सदूम और
उसकी बेटियों की ग़ुलामी को और सामरिया और उसकी बेटियों
की ग़ुलामी की, और उनके बीच तेरे ग़ुलामों की ग़ुलामी को,

54 ताकि तू अपनी रूस्वाई उठाए और अपने सब कामों से
शर्मिंदा हो, क्यूँकि तू उनके लिए तसल्ली के ज़रिए' है।

55 तेरी बहनें सदूम और सामरिया, अपनी अपनी बेटियों के
साथ अपनी पहली हालत पर बहाल हो जाएँगी, और तू और
तेरी बेटियाँ अपनी पहली हालत पर बहाल हो जाओगी।

56 तू अपने ग़ुरूर के दिनों में, अपनी बहन सदूम का नाम तक
ज़बान पर न लाती थी।

57 उससे पहले कि तेरी शरारत फ़ाश हुई, जब अराम की बेटियों
ने और उन सब ने जो उनके आस — पास थीं तुझे मलामत की,
और फ़िलिस्तियों की बेटियों ने चारों तरफ़ से तेरी हिकारत की।

58 ख़ुदावन्द फ़रमाता है, तूने अपनी बदज़ाती और घिनौने
कामों की सज़ा पाई।

59 “क्यूँकि ख़ुदावन्द ख़ुदा यूँ फ़रमाता है: कि मैं तुझ से जैसा
तूने किया वैसा ही सुलूक करूँगा, इसलिए कि तूने क़सम को
बेकार जाना और 'अहद शिकनी की।

60 लेकिन मैं अपने उस 'अहद को जो मैंने तेरी जवानी के दिनों
में तेरे साथ बाँधा, याद रख्खूँगा और हमेशा का 'अहद तेरे साथ
क़ायम करूँगा।

61 और जब तू अपनी बड़ी और छोटी बहनों को क़ुबूल करेगी,

तब तू अपनी राहों को याद करके शर्मिंदा होगी और मैं उनको
तुझे दूँगा कि तेरी बेटियाँ हों, लेकिन यह तेरे 'अहद के मुताबिक़
नहीं।
62 और मैं अपना 'अहद तेरे साथ क़ायम करूँगा, और तू जानेगी
कि ख़ुदावन्द मैं हूँ।
63 ताकि तू याद करे और शर्मिंदा हो और शर्म के मारे फिर कभी
मुँह न खोले, जब कि मैं सब कुछ जो तूने किया मु'आफ़ कर दूँ,
ख़ुदावन्द ख़ुदा फ़रमाता है।"

17

?? ??????? ?? ??????

1 और ख़ुदावन्द का कलाम मुझ पर नाज़िल हुआ।
2 "कि ऐ आदमज़ाद, एक पहेली निकाल और अहल — ए —
इस्राईल से एक मिसाल बयान कर,
3 और कह, ख़ुदावन्द ख़ुदा यूँ फ़रमाता है: एक बड़ा उक़ाब जो
बड़े बाज़ू और लम्बे पर रखता था, अपने रंगा — रंग के बाल —
ओ — पर में छिपा हुआ लुबनान में आया, और उसने देवदार की
चोटी तोड़ ली।
4 वह सब से ऊँची डाली तोड़ कर सौदागरी के मुल्क में ले गया,
और सौदागरों के शहर में उसे लगाया।
5 और वह उस सर — ज़मीन में से बीज ले गया और उसे
ज़रखेज़ ज़मीन में बोया; उसने उसे आब — ए — फ़िरावाँ के
किनारे, बेद के दरख़्त की तरह लगाया।
6 और वह उगा और अंगूर का एक पस्त — क़द शाख़दार दरख़्त
हो गया और उसकी शाख़ें उसकी तरफ़ झुकी थीं, और उसकी जड़ें
उसके नीचे थीं, चुनाँचे वह अँगूर का एक दरख़्त हुआ; उसकी शाख़ें
निकलीं और उसकी कोपलें बढ़ीं
7 'और एक और बड़ा 'उक़ाब था, जिसके बाज़ू बड़े बड़े और
पर — ओ — बाल बहुत थे, और इस ताक ने अपनी जड़ें उसकी

तरफ़ झुकाई और अपनी क्यारियों से अपनी शाख़ें उसकी तरफ़ बढ़ईं ताकि वह उसे सींचे।

8 यह आब — ए — फ़िरावाँ के किनारे ज़रख़ेज़ ज़मीन में लगाई गई थी, ताकि उसकी शाख़ें निकलें और इसमें फल लगें और यह नफ़ीस ताक हो।

9 तू कह, ख़ुदावन्द ख़ुदा यूँ फ़रमाता है: कि क्या यह कामयाब होगी? क्या वह इसको उखाड़ न डालेगा और इसका फल न तोड़ डालेगा कि यह ख़ुश्क हो जाए, और इसके सब ताज़ा पत्ते मुरझा जाएँ? इसे जड़ से उखाड़ने के लिए बहुत ताक़त और बहुत से आदमियों की ज़रूरत न होगी।

10 देख, यह लगाई तो गई, पर क्या यह कामयाब होगी? क्या यह पूरबी हवा लगते ही बिल्कुल सूख न जाएगी? यह अपनी क्यारियों ही में पज़मुर्दा हो जाएगी।"

11 और ख़ुदावन्द का कलाम मुझ पर नाज़िल हुआ

12 इस बाग़ी ख़ान्दान से कह, क्या तुम इन बातों का मतलब नहीं जानते? इनसे कह, देखो, शाह — ए — बाबुल ने येरूशलेम पर चढ़ाई की और उसके बादशाह को और उसके 'हाकिमों को ग़ुलाम करके अपने साथ बाबुल को ले गया।

13 और उसने शाही नसल में से एक को लिया और उसके साथ 'अहद बाँधा और उससे क़सम ली और मुल्क के उहदे दारों को भी ले गया,

14 ताकि वह मम्लकत पस्त हो जाए और फिर सिर न उठा सके, बल्कि उसके 'अहद को क़ायम रखने से क़ायम रहे।

15 लेकिन उसने बहुत से आदमी और घोड़े लेने के लिए मिस्र में क़ासिद भेज कर उससे शरकशी की क्या वह कामयाब होगा क्या ऐसे काम करने वाला बच सकता है क्या वह 'अहद शिकनी करके बच जाएगा।

16 ख़ुदावन्द ख़ुदा फ़रमाता है, मुझे अपनी हयात की क़सम, वह उसी जगह जहाँ उस बादशाह का घर है जिसने उसे बादशाह

बनाया और जिसकी क़सम को उसने बेकार जाना और जिसका
'अहद उसने तोड़ा, या'नी बाबुल में उसी के पास मरेगा।
17 और फ़िर'औन अपने बड़े लश्कर और बहुत से लोगों को
लेकर लड़ाई में उसके साथ शरीक न होगा, जब दमदमा बाँधते
हों और बुर्ज बनाते हों कि बहुत से लोगों को क़त्ल करें।
18 चूँकि उसने क़सम को बेकार जाना और उस 'अहद को तोड़ा,
और हाथ पर हाथ मार कर भी यह सब कुछ किया, इसलिए वह
बच न सकेगा।
19 इसलिए ख़ुदावन्द ख़ुदा यूँ फ़रमाता है: कि मुझे अपनी
हयात की क़सम वह मेरी ही क़सम है, जिसको उसने बेकार जाना
और वह मेरा ही 'अहद है जो उसने तोड़ा; मैं ज़रूर यह उसके सिर
पर लाऊँगा।
20 और मैं अपना जाल उस पर फैलाऊँगा और वह मेरे फन्दे में
पकड़ा जाएगा, और मैं उसे बाबुल को ले आऊँगा, और जो मेरा
गुनाह उसने किया है उसके बारे मैं वहाँ उससे हुज्जत करूँगा।
21 और उसके लश्कर के सब फ़रारी तलवार से क़त्ल होंगे, और
जो बच रहेंगे वह चारों तरफ़ तितर बितर हो जाएँगे; और तुम
जानोगे कि मैं ख़ुदावन्द ने यह फ़रमाया है।
22 ख़ुदावन्द ख़ुदा फ़रमाता है: "मैं भी देवदार की बुलन्द चोटी
लूँगा और उसे लगाऊँगा, फिर उसकी नर्म शाख़ों में से एक कोंपल
काट लूँगा और उसे एक ऊँचे और बुलन्द पहाड़ पर लगाऊँगा।
23 मैं उसे इस्राईल के ऊँचे पहाड़ पर लगाऊँगा, और वह शाख़ें
निकालेगा और फल लाएगा और 'आलीशान देवदार होगा। और
हर क़िस्म के परिन्दे उसके नीचे बसेंगे, वह उसकी डालियों के साये
में बसेरा करेंगे।
24 और मैदान के सब दरख़्त जानेंगे कि मैं ख़ुदावन्द ने बड़े
दरख़्त को पस्त किया और छोटे दरख़्त को बुलन्द किया; हरे
दरख़्त को सुखा दिया और सूखे दरख़्त को हरा किया; मैं ख़ुदावन्द
ने फ़रमाया और कर दिखाया।"

18

[illegible]

1 और ख़ुदावन्द का कलाम मुझ पर नाज़िल हुआ:
2 कि तुम इस्राईल के मुल्क के हक़ में क्यूँ यह मिसाल कहते
हो, कि 'बाप — दादा ने कच्चे अँगूर खाए और औलाद के दाँत
खट्टे हुए'?
3 ख़ुदावन्द ख़ुदा फ़रमाता है, मुझे अपनी हयात की क़सम कि
तुम फिर इस्राईल में यह मिसाल न कहोगे।
4 देख, सब जाने मेरी हैं, जैसी बाप की जान वैसी ही बेटे की
जान भी मेरी है; जो जान गुनाह करती है वही मरेगी।
5 'लेकिन जो इंसान सादिक़ है, और उसके काम 'अदालत और
इन्साफ़ के मुताबिक़ हैं।
6 जिसने बुतों की क़ुर्बानी से नहीं खाया, और बनी — इस्राईल
के बुतों की तरफ़ अपनी आँखें नहीं उठाई; और अपने पड़ोसी की
बीवी को नापाक नहीं किया, और 'औरत की नापाकी के वक़्त
उसके पास नहीं गया,
7 और किसी पर सितम नहीं किया, और क़र्ज़दार का गिरवी
वापस कर दिया और ज़ुल्म से कुछ छीन नहीं लिया; भूकों को
अपनी रोटी खिलाई और नंगों को कपड़ा पहनाया;
8 सूद पर लेन — देन नहीं किया, बदकिरदारी से दस्तबरदार
हुआ और लोगों में सच्चा इन्साफ़ किया;
9 मेरे क़ानून पर चला और मेरे हुक्मों पर 'अमल किया, ताकि
रास्ती से मु'आमिला करे; वह सादिक़ है, ख़ुदावन्द ख़ुदा फ़रमाता
है, वह यक़ीनन ज़िन्दा रहेगा।
10 'लेकिन अगर उसके यहाँ बेटा पैदा हो, जो राहज़नी या
ख़ूँरेज़ी करे और इन गुनाहों में से कोई गुनाह करे,
11 और इन फ़राइज़ को बजा न लाए, बल्कि बुतों की क़ुर्बानी
से खाए और अपने पड़ोसी की बीवी को नापाक करे;

12 ग़रीब और मोहताज पर सितम करे, ज़ुल्म करके छीन ले,
गिरवी वापस न दे, और बुतों की तरफ़ अपनी आँखें उठाये और
घिनौने काम करे;
13 सूद पर लेन देन करे, तो क्या वह ज़िन्दा रहेगा? वह ज़िन्दा
न रहेगा, उसने यह सब नफ़रती काम किए हैं; वह यक़ीनन मरेगा,
उसका ख़ून उसी पर होगा।
14 लेकिन अगर उसके यहाँ ऐसा बेटा पैदा हो, जो उन तमाम
गुनाहों को जो उसका बाप करता है देखे और ख़ौफ़ खाकर उसके
से काम न करे
15 और बुतों की क़ुर्बानी से न खाए, और बनी — इस्राईल के
बुतों की तरफ़ अपनी आँखें न उठाए और अपने पड़ोसी की बीवी
को नापाक न करे;
16 और किसी पर सितम न करे, गिरवी न ले, और ज़ुल्म करके
कुछ छीन न ले, भूके को अपनी रोटी खिलाए और नंगे को कपड़े
पहनाए;
17 ग़रीब से दस्तबरदार हो, और सूद पर लेन — देन न करे,
लेकिन मेरे हुक्मों पर 'अमल करे और मेरे क़ानून पर चले, वह
अपने बाप के गुनाहों के लिए न मरेगा; वह यक़ीनन ज़िन्दा
रहेगा।
18 लेकिन उसका बाप, क्यूँकि उसने बेरहमी से सितम किया
और अपने भाई को ज़ुल्म से लूटा, और अपने लोगों के बीच बुरे
काम किए; इसलिए वह अपनी बदकिरदारी के ज़रिए' मरेगा।
19 “तोभी तुम कहते हो, 'बेटा बाप के गुनाह का बोझ क्यूँ नहीं
उठाता?” जब बेटे ने वही जो जाएज़ और रवा है किया, और मेरे
सब क़ानून को याद करके उन पर 'अमल किया; तो वह यक़ीनन
ज़िन्दा रहेगा।
20 जो जान गुनाह करती है वही मरेगी, बेटा बाप के गुनाह
का बोझ न उठाएगा और न बाप बेटे के गुनाह का बोझ; सादिक़
की सदाक़त उसी के लिए होगी, और शरीर की शरारत शरीर के

लिए।
21 लेकिन अगर शरीर अपने तमाम गुनाहों से जो उसने किए
हैं, बाज़ आए और मेरे सब तौर तरीक़े पर चलकर, जो जाएज़ और
रवा है करे तो वह यक़ीनन ज़िन्दा रहेगा, वह न मरेगा।
22 वह सब गुनाह जो उसने किए हैं, उसके ख़िलाफ़ महसूब न
होंगे। वह अपनी रास्तबाज़ी में जो उसने की ज़िन्दा रहेगा।
23 ख़ुदावन्द ख़ुदा फ़रमाता है, क्या शरीर की मौत में मेरी ख़ुशी
है, और इसमें नहीं कि वह अपनी चाल चलन से बाज़ आए और
ज़िन्दा रहे?
24 लेकिन अगर सादिक़ अपनी सदाक़त से बाज़ आए, और
गुनाह करे और उन सब घिनौने कामों के मुताबिक़ जो शरीर करता
है करे, तो क्या वह ज़िन्दा रहेगा? उसकी तमाम सदाक़त जो
उसने की फ़रामोश होगी; वह अपने गुनाहों में जो उसने किए हैं
और अपनी ख़ताओं में जो उसने की हैं मरेगा।
25 "तोभी तुम कहते हो, 'ख़ुदावन्द की रविश रास्त नहीं। ऐ
बनी — इस्राईल सुनो तो, क्या मेरा चाल चलन रास्त नहीं? क्या
तुम्हारा चाल चलन नारास्त नहीं?
26 जब सादिक़ अपनी सदाक़त से बाज़ आए और बदकिरदारी
करे और उसमें मरे, तो वह अपनी बदकिरदारी की वजह से जो
उसने की है मरेगा।
27 और अगर शरीर अपनी शरारत से, जो वह करता है बा'ज़
आए, और वह काम करे जो जाएज़ और रवा है; तो वह अपनी
जान ज़िन्दा रख्खेगा।
28 इसलिए कि उसने सोचा और अपने सब गुनाहों से जो करता
था बा'ज़ आया; वह यक़ीनन ज़िन्दा रहेगा, वह न मरेगा।
29 तोभी बनी — इस्राईल कहते हैं, 'ख़ुदावन्द की रविश रास्त
नहीं?" ऐ बनी इस्राईल, क्या मेरा चाल चलन रास्त नहीं? क्या
तुम्हारा चाल चलन नारास्त नहीं?
30 इसलिए ख़ुदावन्द फ़रमाता है, ऐ बनी इस्राईल मैं हर एक के

चाल चलन के मुताबिक़ तुम्हारी 'अदालत करूँगा; तोबा करो और
अपने तमाम गुनाहों से बाज़ आओ, ताकि बदकिरदारी तुम्हारी
हलाकत का ज़रिया' न हो।
31 उन तमाम गुनाहों को, जिनसे तुम गुनहगार हुए दूर करो
और अपने लिए नया दिल और नई रूह पैदा करो! ऐ बनी —
इस्राईल, तुम क्यूँ हलाक होगे?
32 क्यूँकि ख़ुदावन्द ख़ुदा फ़रमाता है, "मुझे मरने वाले की मौत
से ख़ुशी नहीं, इसलिए बाज़ आओ और ज़िन्दा रहो।"

19

[illegible]

1 अब तू इस्राईल के "हाकिमों पर नौहा कर,
2 और कह, तेरी माँ कौन थी? एक शेरनी जो शेरों के बीच लेटी
थी और जवान शेरों के बीच उसने अपने बच्चों को पाला।
3 और उसने अपने बच्चों में से एक को पाला, तो वह जवान
शेर हुआ और शिकार करना सीख गया और आदमियों को निगलने
लगा।
4 और क़ौमों के बीच उसका ज़िक्र हुआ तो वह उनके गढ़े में
पकड़ा गया, और वह उसे ज़न्जीरों से जकड़ कर ज़मीन — ए —
मिस्र में लाए।
5 और जब शेरनी ने देखा कि उसने बेफ़ाइदा इन्तिज़ार किया
और उसकी उम्मीद जाती रही, तो उसने अपने बच्चों में से दूसरे
को लिया और उसे पाल कर जवान शेर किया।
6 और वह शेरों के बीच सैर करता फिरा और जवान शेर हुआ,
और शिकार करना सीख गया और आदमियों को निगलने लगा।
7 और उसने उनके महलों को बर्बाद किया, और उनके शहरों
को वीरान किया; उसकी ग़रज़ से मुल्क उजड़ गया और उसकी
आबादी न रही।

8 तब बहुत सी क़ौमें तमाम मुल्कों से उसकी घात में बैठीं, और
उन्होंने उस पर अपना जाल फैलाया; वह उनके गढ़े में पकड़ा
गया।
9 और उन्होंने उसे ज़न्जीरों से जकड़ कर पिंजरे में डाला और
शाह — ए — बाबुल के पास ले आए। उन्होंने उसे क़िले' में बन्द
किया, ताकि उसकी आवाज़ इस्राईल के पहाड़ों पर फिर सुनी न
जाए।
10 तेरी माँ उस ताक से' मुशाबह थी, जो तेरी तरह पानी के
किनारे लगाई गई; वह पानी की बहुतायत के ज़रिए' फलदार
और शाख़दार हुई।
11 और उसकी शाख़ें ऐसी मज़बूत हो गई के बादशाहों के 'असा
उन से बनाए गए, और घनी शाख़ों में उसका तना बुलन्द हुआ और
वह अपनी घनी शाख़ों के साथ ऊँची दिखाई देती थी।
12 लेकिन वह ग़ज़ब से उखाड़ कर ज़मीन पर गिराई गई, और
पूरबी हवा ने उसका फल ख़ुश्क कर डाला, और उसकी मज़बूत
डालियाँ तोड़ी गई और सूख गई और आग से भसम हुई।
13 और अब वह वीरान में सूखी और प्यासी ज़मीन में लगाई
गई।
14 और एक छड़ी से जो उसकी डालियों से बनी थी, आग
निकलकर उसका फल खा गई और उसकी कोई ऐसी मज़बूत
डाली न रही कि सल्तनत का 'असा हो। यह नोहा है और नोहे के
लिए रहेगा।

20

[illegible]

1 और सातवें बरस के पाँचवें महीने की दसवीं तारीख को यूँ हुआ
कि इस्राईल के चन्द बुज़ुर्ग ख़ुदावन्द से कुछ दरियाफ़्त करने को
आए और मेरे सामने बैठ गए।
2 तब ख़ुदावन्द का कलाम मुझ पर नाज़िल हुआ

3 कि 'ऐ आदमज़ाद! इस्राईल के बुज़ुर्गों से कलाम कर और
उनसे कह, ख़ुदावन्द ख़ुदा यूँ फ़रमाता है: कि क्या तुम मुझ
से दरियाफ़्त करने आए हो? ख़ुदावन्द ख़ुदा फ़रमाता है कि
मुझे अपनी हयात की क़सम, तुम मुझ से कुछ दरियाफ़्त न कर
सकोगे।
4 क्या तू उन पर हुज्जत क़ाईम करेगा? ऐ आदमज़ाद, क्या तू
उन पर हुज्जत क़ायम करेगा? उनके बाप दादा के नफ़रती कामों
से उनको आगाह कर।
5 उनसे कह, ख़ुदावन्द ख़ुदा यूँ फ़रमाता है: कि जिस दिन मैंने
इस्राईल को बरगुज़ीदा किया, और बनी या'क़ूब से क़सम खाई
और मुल्क — ए — मिस्र में अपने आपको उन पर ज़ाहिर किया;
मैंने उनसे क़सम खा कर कहा, मैं ख़ुदावन्द तुम्हारा ख़ुदा हूँ।
6 जिस दिन मैंने उनसे क़सम खाई, ताकि उनको मुल्क — ए —
मिस्र से उस मुल्क में लाऊँ जो मैंने उनके लिए देख कर ठहराया
था, जिसमें दूध और शहद बहता है और जो तमाम मुल्कों की
शौकत है।
7 और मैंने उनसे कहा, तुम में से हर एक शख़्स उन नफ़रती
चीज़ों को जो उसकी मन्ज़ूर — ए — नज़र हैं, दूर करे और
तुम अपने आपको मिस्र के बुतों से नापाक न करो; मैं ख़ुदावन्द,
तुम्हारा ख़ुदा हूँ।
8 लेकिन वह मुझ से बाग़ी हुए और न चाहा कि मेरी सुनें।
उनमें से किसी ने उन नफ़रती चीज़ों को, जो उसकी मंज़ूर — ए
— नज़र थीं, छोड़ न दिया और मिस्र के बुतों को न छोड़ा। तब
मैंने कहा, कि मैं अपना क़हर उन पर उण्डेल दूँगा, ताकि अपने
ग़ज़ब को मुल्क — ए — मिस्र में उन पर पूरा करूँ।
9 लेकिन मैंने अपने नाम की ख़ातिर ऐसा किया ताकि मेरा
नाम उन क़ौमों की नज़र में, जिनके बीच वह रहते थे और जिनकी
निगाहों में मैं उन पर ज़ाहिर हुआ जब उनको मुल्क — ए — मिस्र

से निकाल लाया, नापाक न किया जाए।

10 इसलिए मैं उनको मुल्क — ए — मिस्र से निकालकर वीरान
में लाया।
11 और मैंने अपने क़ानून उनको दिए और अपने हुक्मों को
उनको सिखाए कि इंसान उन पर 'अमल करने से ज़िन्दा रहे।
12 और मैंने अपने सबत भी उनको दिए, ताकि वह मेरे और
उनके बीच निशान हों; ताकि वह जानें कि मैं ख़ुदावन्द उनका पाक
करने वाला हूँ।
13 लेकिन बनी — इस्राईल वीरान में मुझ से बाग़ी हुए, वह
मेरे क़ानून पर न चले और मेरे हुक्मों को रद्द किया, जिन पर अगर
इंसान 'अमल करे तो उनकी वजह से ज़िन्दा रहे, और उन्होंने मेरे
सबतों को बहुत ही नापाक किया। तब मैंने कहा, कि मैं वीरान में
अपना क़हर उन पर नाज़िल कर के उनको फ़ना करूँगा।
14 लेकिन मैंने अपने नाम की ख़ातिर ऐसा किया, ताकि वह
उन क़ौमों की नज़र में जिनकी आँखों के सामने मैं उनको निकाल
लाया नापाक न किया जाए।
15 और मैंने वीरान में भी उनसे क़सम खाई कि मैं उनको उस
मुल्क में न लाऊँगा जो मैंने उनको दिया, जिसमें दूध और शहद
बहता है और जो तमाम मुल्कों की शौकत है।
16 क्यूँकि उन्होंने मेरे हुक्मों को रद्द किया और मेरे क़ानून पर
न चले और मेरे सबतों को नापाक किया, इसलिए कि उनके दिल
उनके बुतों के मुश्ताक़ थे।
17 तोभी मेरी आँखों ने उनकी रि'आयत की और मैंने उनको
हलाक न किया, और मैंने वीरान में उनको बिल्कुल बर्बाद — ओ
— हलाक न किया।
18 और मैंने वीरान में उनके फ़र्ज़न्दों से कहा, तुम अपने बाप
— दादा के क़ानून — ओ — हुक्मों पर न चलो और उनके बुतों
से अपने आपको नापाक न करो।

19 मैं ख़ुदावन्द तुम्हारा ख़ुदा हूँ, मेरे क़ानून पर चलो और मेरे
हुक्मों को मानो और उन पर 'अमल करो।
20 और मेरे सबतों को पाक जानो कि वह मेरे और तुम्हारे बीच
निशान हों, ताकि तुम जानो कि मैं ख़ुदावन्द तुम्हारा ख़ुदा हूँ।
21 लेकिन फ़र्ज़न्दों ने भी मुझ से बग़ावत की; वह मेरे क़ानून पर
न चले, न मेरे हुक्मों को मानकर उन पर 'अमल किया जिन पर
अगर इंसान 'अमल करे तो उनकी वजह से ज़िन्दा रहे; उन्होंने
मेरे सबतों को नापाक किया। तब मैंने कहा कि मैं अपना क़हर
उन पर नाज़िल करूँगा और वीरान में अपने ग़ज़ब को उन पर
पूरा करूँगा।
22 तोभी मैंने अपना हाथ खींचा और अपने नाम की ख़ातिर
ऐसा किया, ताकि वह उन क़ौमों की नज़र में जिनके देखते हुए मैं
उनको निकाल लाया, नापाक न किया जाए।
23 फिर मैंने वीराने में उनसे क़सम खाई कि मैं उनको क़ौमों में
आवारा और मुल्कों में तितर बितर करूँगा।
24 इसलिए कि वह मेरे हुक्मों पर 'अमल न करते थे, बल्कि मेरे
क़ानून को रद्द करते थे और मेरे सबतों को नापाक करते थे, और
उनकी आँखें उनके बाप — दादा के बुतों पर थीं।
25 इसलिए मैंने उनको बुरे क़ानून और ऐसे अहकाम दिए
जिनसे वह ज़िन्दा न रहें;
26 और मैंने उनको उन्हीं के हदियों से या'नी सब पहलौठों को
आग पर से गुज़ार कर, नापाक किया ताकि मैं उनको वीरान करूँ
और वह जानें कि ख़ुदावन्द मैं हूँ।
27 इसलिए, ऐ आदमज़ाद, तू बनी इस्राईल से कलाम कर और
उनसे कह, ख़ुदावन्द ख़ुदा यूँ फ़रमाता है: कि इसके 'अलावा
तुम्हारे बाप — दादा ने ऐसे काम करके मेरी बुराई की और मेरा
गुनाह करके ख़ताकार हुए;
28 कि जब मैं उनको उस मुल्क में लाया जिसे उनको देने की मैंने

क़सम खाई थी, तो उन्होंने जिस ऊँचे पहाड़ और जिस घने दरख़्त
को देखा वहीं अपने ज़बीहों को ज़बह किया, और वहीं अपनी
ग़ज़ब अंगेज़ नज़र को गुज़राना, और वहीं अपनी ख़ुशबू जलाई
और अपने तपावन तपाए।
29 तब मैंने उनसे कहा, यह कैसा ऊँचा मक़ाम है जहाँ तुम जाते
हो? और उन्होंने उसका नाम बामाह रख्खा जो आज के दिन तक
है।
30 'इसलिए, तू बनी — इस्राईल से कह, कि ख़ुदावन्द ख़ुदा
यूँ फ़रमाता है: क्या तुम भी अपने बाप — दादा की तरह नापाक
होते हो? और उनके नफ़रत अंगेज़ कामों की तरह तुम भी बदकारी
करते हो?
31 और जब अपने हदिए चढ़ाते और अपने बेटों को आग पर
से गुज़ार कर अपने सब बुतों से अपने आपको आज के दिन तक
नापाक करते हो, तो ऐ बनी — इस्राईल क्या तुम मुझ से कुछ
दरियाफ़्त कर सकते हो? ख़ुदावन्द ख़ुदा फ़रमाता है: मुझे अपनी
हयात की क़सम, मुझ से कुछ दरियाफ़्त न कर सकोगे।
32 और वह जो तुम्हारे जी में आता है हरगिज़ वजूद में न
आएगा, क्यूँकि तुम सोचते हो, 'तुम भी दीगर क़ौम — ओ —
क़बाइल — ए — 'आलम की तरह लकड़ी और पत्थर की इबादत
करोगे। ख़ुदावन्द सज़ा देता और मु'आफ़ भी करता है
33 ख़ुदावन्द ख़ुदा फ़रमाता है: मुझे अपनी हयात की क़सम,
मैं ताक़तवर हाथ से और बुलन्द बाज़ू से क़हर नाज़िल' कर के तुम
पर सल्तनत करूँगा।
34 और मैं ताक़तवर हाथ और बुलन्द बाज़ू से क़हर नाज़िल'
करके तुम को क़ौमों में से निकाल लाऊँगा, और उन मुल्कों में से
जिनमें तुम तितर बितर हुए हो जमा' करूँगा।
35 और मैं तुम को क़ौमों के वीराने में लाऊँगा और वहाँ आमने
सामने तुम से हुज्जत करूँगा।

36 जिस तरह मैंने तुम्हारे बाप — दादा के साथ मिस्र के वीरान
में हुज्जत की, ख़ुदावन्द ख़ुदा फ़रमाता है, उसी तरह मैं तुम से
भी हुज्जत करूँगा।
37 और मैं तुम को छड़ी के नीचे से गुज़ारूँगा और 'अहद के
बन्द में लाऊँगा।
38 और मैं तुम में से उन लोगों को जो सरकश और मुझ से बाग़ी
हैं, जुदाकरूँगा; मैं उनको उस मुल्क से जिसमें उन्होंने क़याम
किया, निकाल लाऊँगा पर वह इस्राईल के मुल्क में दाख़िल न
होंगे और तुम जानोगे कि मैं ख़ुदावन्द हूँ।
39 और "तुम से ऐ बनी — इस्राईल, ख़ुदावन्द ख़ुदा यूँ फ़रमाता
है, कि जाओ और अपने अपने बुत की इबादत करो, और आगे को
भी, अगर तुम मेरी न सुनोगे; लेकिन अपनी क़ुर्बानियों और अपने
बुतों से मेरे पाक नाम की बुराई न करोगे।
40 'क्यूँकि ख़ुदावन्द ख़ुदा यूँ फ़रमाता है कि मेरे पाक पहाड़
या'नी इस्राईल के ऊँचे पहाड़ पर तमाम बनी — इस्राईल, सब के
सब मुल्क में मेरी इबादत करेंगे; वहाँ मैं उनको क़ुबूल करूँगा, और
तुम्हारी क़ुर्बानियाँ और तुम्हारी नज़रों के पहले फल और तुम्हारी
सब मुक़द्दस चीज़ें तलब करूँगा।
41 जब मैं तुम को क़ौमों में से निकाल लाऊँगा और उन मुल्कों
में से जिनमें मैंने तुम को तितर बितर किया जमा' करूँगा, तब मैं
तुम को ख़ुशबू के साथ क़ुबूल करूँगा और क़ौमों के सामने तुम
मेरी तक़्दीस करोगे।
42 और जब मैं तुम को इस्राईल के मुल्क में या'नी उस सरज़मीन
में जिसके लिए मैंने क़सम खाई कि तुम्हारे बाप — दादा को दूँ,
ले आऊँगा तब तुम जानोगे कि मैं ख़ुदावन्द हूँ।
43 और वहाँ तुम अपने चाल चलन और अपने सब कामों को,
जिनसे तुम नापाक हुए हो, याद करोगे और तुम अपनी तमाम
बुराई की वजह से जो तुम ने की है, अपनी ही नज़र में घिनौने

होगे।
44 ख़ुदावन्द ख़ुदा फ़रमाता है, ऐ बनी — इस्राईल जब मैं
तुम्हारे बुरे चाल चलन और बद — आ'माली के मुताबिक़ नहीं
बल्कि अपने नाम के ख़ातिर तुम से सुलूक करूँगा, तो तुम जानोगे
कि मैं ख़ुदावन्द हूँ।"
45 और ख़ुदावन्द का कलाम मुझ पर नाज़िल हुआ:
46 कि 'ऐ आदमज़ाद, दक्खिन का रुख़ कर और दक्खिन ही से
मुख़ातिब हो कर उसके मैदान के जंगल के ख़िलाफ़ नबुव्वत कर;
47 और दक्खिन के जंगल से कह, ख़ुदावन्द का कलाम सुन,
ख़ुदावन्द ख़ुदा यूँ फ़रमाता है: देख, मैं तुझ में आग भड़काऊँगा
और वह हर एक हरा दरख़्त और हर एक सूखा दरख़्त जो तुझ में
है, खा जाएगी; भड़कता हुआ शो'ला न बुझेगा और दक्खिन से
उत्तर तक सबके मुँह उससे झुलस जाएँगे।
48 और हर इंसान देखेगा कि मैं ख़ुदावन्द ने उसे भड़काया है,
वह न बुझेगी।
49 तब मैंने कहा, 'हाय ख़ुदावन्द ख़ुदा! वह तो मेरे बारे में कहते
हैं, क्या वह मिसालें नहीं कहता?

21

????? ?? ??????? ?? ?????

1 फिर ख़ुदा वन्द का कलाम मुझ पर नाज़िल हुआ:
2 कि ऐ आदमज़ाद, येरूशलेम का रुख़ कर और पाक मकानों से
मुख़ातिब होकर मुल्क — ए — इस्राईल के ख़िलाफ़ नबुव्वत कर
3 और उस से कह, ख़ुदावन्द यूँ फ़रमाता है: कि देख मैं तेरा
मुख़ालिफ़ हूँ और अपनी तलवार मियान से निकाल लूँगा, और
तेरे सादिक़ों और तेरे शरीरों को तेरे बीच से काट डालूँगा।

4 इसलिए चूँकि मैं तेरे बीच से सादिक़ों और शरीरों को काट
डालूँगा, इसलिए मेरी तलवार अपने मियान से निकल कर
दक्खिन से उत्तर तक तमाम बशर पर चलेगी।
5 और सब जानेंगे कि मैं ख़ुदावन्द ने अपनी तलवार मियान से
खींची है वह फिर उसमें न जायेगी।
6 इसलिए ऐ आदमज़ाद कमर की शिगास्तगी से आँहें मार और
तल्ख़ कामी से उनकी आँखों के सामने ठण्डी साँस भर।
7 और जब वह पूछें कि तू क्यूँ हाए हाए करता है तो यूँ जवाब
देना कि उसकी आमद की अफ़वाह की वजह से और हर एक दिल
पिघल जायेगा और सब हाथ ढीले हो जायेंगे और हर एक जी
डूब जाएगा और सब घुटने पानी की तरह कमज़ोर हो जायेंगे
ख़ुदावन्द ख़ुदा फ़रमाता है उसकी आमद है यह वजूद में आएगा।
8 फिर ख़ुदावन्द का कलाम मुझपर नाज़िल हुआ।
9 ऐ आदमज़ाद, नबुव्वत कर और कह ख़ुदावन्द यूँ फ़रमाता है
कि तू कह तलवार बल्कि तेज़ और सैकल की हुई तलवार है।
10 वह तेज़ की गई है ताकि उससे बड़ी ख़ूंरेज़ी की जाये वह
सैकल की गई है ताकि चमके फिर क्या हम ख़ुश हो सकते हैं मेरे
बेटे का 'असा हर लकड़ी को बेकार जानता है।
11 और उसने उसे सैकल करने को दिया है ताकि हाथ में ली
जाये वह तेज़ और सैकल की गई ताकि क़त्ल करने वाले के हाथ
में दी जाए।
12 ऐ आदमज़ाद, तू रो और नाला कर क्यूँकि वह मेरे लोगों
पर चलेगी वह इस्राईल के सब हाकिमों पर होगी वह मेरे लोगों
के सात तलवार के हवाले किए गए हैं इसलिए तू अपनी रान पर
हाथ मार।
13 यक़ीनन वह आज़माई गई और अगर लाठी उसे बेकार जाने
तो क्या वह हलाक होगा ख़ुदावन्द फ़रमाता है।
14 और 'ऐ आदमज़ाद, तू नबुव्वत कर और ताली बजा और
तलवार दो गुना बल्कि तीन गुना हो जाए वह तलवार जो

मक़तूलों पर कारगर हुई बड़ी ख़ूँरेज़ी की तलवार है जो उनको
घेरती है।
15 मैंने यह तलवार उनके सब फाटकों के ख़िलाफ़ क़ायम की है
ताकि उनके दिल पिघल जायें और उनके गिरने के सामान ज़्यादा
हों हाए बर्क़ तेग यह क़त्ल करने को खींची गई।
16 तैयार हो; दाहनी तरफ़ जा, आमादा हो, बाईं तरफ़ जा,
जिधर तेरा रुख़,
17 और मैं भी ताली बजाऊँगा और अपने क़हर को ठण्डा
करूँगा मैं ख़ुदावन्द ने यह फ़रमाया है।
18 और ख़ुदावन्द का कलाम मुझपर नाज़िल हुआ।
19 कि 'ऐ आदमज़ाद, तू दो रास्ते खींच जिनसे शाह — ए —
बाबुल की तलवार आये एक ही मुल्क से वह दोनों रास्ते निकाल
और एक हाथ निशान के लिए शहर की रास्ते के सिरे पर लगा।
20 एक रास्ता निकाल जिससे तलवार बनी'अम्मून की रब्बा पर
और फिर एक और जिससे यहूदाह के मासूर शहर येरूशलेम पर
आये।
21 क्यूँकि शाह — ए — बाबुल दोनों रास्तों के नुक़्त — ए —
इतसाल पर फ़ालगीरी के लिए खड़ा हुआ और तीरों को हिला कर
बुत से सवाल करेगा और जिगर पर नज़र करेगा।
22 उसके दहने हाथ में येरूशलेम का पर्ची पड़ेगी कि मंजनीक़
लगाये और कुश्त — ओ — ख़ून के लिए मुँह खोले ललकार की
आवाज़ बुलन्द करे और फाटकों पर मंजनीक़ लगाए और दमदमा
बांधे और बुर्ज़ बनाए।
23 लेकिन उनकी नज़र में यह ऐसा होगा जैसा झूटा शगुन
या'नी उनके लिए जिन्होंने क़सम खाई थी, पर वह बदकिरदारी
को याद करेगा ताकि वह गिरफ़्तार हों।
24 इसलिए ख़ुदावन्द ख़ुदा यूँ फ़रमाता है: कि चूँकि तुम ने
अपनी बदकिरदारी याद दिलाई और तुम्हारी ख़ताकारी ज़ाहिर

हुई यहाँ तक कि तुम्हारे सब कामों में तुम्हारे गुनाह अयाँ हैं; और
चूँकि तुम ख़याल में आ गए इसलिए गिरफ़्तार हो जाओगे।
25 और तू ऐ मजरूह शरीर शाह — ए — इस्राईल, जिसका
ज़माना बदकिरदारी के अन्जाम को पहुँचने पर आया है।
26 ख़ुदावन्द ख़ुदा यूँ फ़रमाता है: कि कुलाह दूर कर और ताज
उतार, यह ऐसा न रहेगा, पस्त को बलन्द कर और उसे जो बुलन्द
है पस्त कर।
27 मैं ही उसे उलट उलट दूँगा, पर यूँ भी न रहेगा और वह
आएगा जिसका हक़ है, और मैं उसे दूँगा।
28 "और तू ऐ आदमज़ाद नबुव्वत कर और कह ख़ुदावन्द ख़ुदा
बनी अम्मून और उनकी ताना ज़नी के बारे में यूँ फ़रमाता है: कि
तू कह तलवार बल्कि खींची हुई तलवार खूंरेजी के लिए सैकल
की गई है, ताकि बिजली की तरह भसम करे।
29 जबकि वह तेरे लिए धोका देखते हैं और झूटे फ़ाल निकालते
हैं कि तुझ को उन शरीरों की गर्दनों पर डाल दें जो मारे गए,
जिनका ज़माना उनकी बदकिरदारी के अंजाम को पहुँचने पर
आया है।
30 उसको मियान में कर। मैं तेरी पैदाइश के मकान में और तेरी
ज़ाद बूम में तेरी 'अदालत करूँगा।
31 और मैं अपना क़हर तुझ पर नाज़िल करूँगा और अपने
ग़ज़ब की आग तुझ पर भड़काऊँगा, और तुझ को हैवान ख़सलत
आदमियों के हवाले करूँगा जो बर्बाद करने में माहिर हैं।
32 तू आग के लिए ईधन होगा और तेरा ख़ून मुल्क में बहेगा,
और फिर तेरा ज़िक्र भी न किया जाएगा, क्यूँकि मैं ख़ुदावन्द ने
फ़रमाया है।"

22

1 फिर ख़ुदा वन्द का कलाम मुझ पर नाजिल हुआ:
2 कि 'ऐ आदमज़ाद, क्या तू इल्ज़ाम न लगाएगा? क्या तू इस
ख़ूनी शहर को मुल्ज़िम न ठहराएगा? तू इसके सब नफ़रती काम
इसको दिखा,
3 और कह, ख़ुदावन्द ख़ुदा यूँ फ़रमाता है: कि ऐ शहर, तू अपने
अन्दर ख़ूँरेज़ी करता है ताकि तेरा वक़्त आजाए और तू अपने
वास्ते बुतों को अपने नापाक करने के लिए बनाता है।
4 तू उस ख़ून की वजह से जो तूने बहाया मुजरिम ठहरा, और तू
बुतों के ज़रिए' जिनको तूने बनाया है नापाक हुआ; तू अपने वक़्त
को नज़दीक लाता है और अपने दिनों के ख़ातिमे तक पहुँचा है
इसलिए मैंने तुझे क़ौमों की मलामत का निशाना और मुल्कों का
ठट्ठा बनाया है।
5 तुझ से दूर — ओ — नज़दीक के सब लोग तेरी हँसी उड़ायेंगे
क्यूँकि तू झगड़ालू और बदनाम मशहूर है।
6 देख, इस्राईल के हाकिम सब के सब जो तुझ में हैं, मक़दूर भर
ख़ूँरेज़ी पर मुसत'इद थे।
7 तेरे अन्दर उन्होंने माँ बाप को बेकार जाना है, तेरे अन्दर
उन्होंने परदेसियों पर ज़ुल्म किया तेरे अन्दर उन्होंने यतीमों और
बेवाओं पर सितम किया है।
8 तूने मेरी पाक चीज़ों को नाचीज़ जाना, और मेरे सबतों को
नापाक किया।
9 तेरे अन्दर वह लोग हैं जो चुगलखोरी करके ख़ून करवाते हैं,
और तेरे अन्दर वह हैं जो बुतों की क़ुर्बानी से खाते हैं; तेरे अन्दर
वह हैं जो बुराई करते हैं।
10 तेरे अन्दर वह भी हैं जिन्होंने अपने बाप की लौंडी शिकनी
की, तुझ में उन्होंने उस 'औरत से जो नापाकी की हालत में थी
मुबाश्रत की।
11 किसी ने दूसरे की बीवी से बदकारी की, और किसी ने अपनी

बहू से बदज़ाती की, और किसी ने अपनी बहन अपने बाप की बेटी
को तेरे अन्दर रुस्वा किया।
12 तेरे अन्दर उन्होंने ख़ूँरेज़ी के लिए रिश्वत ख़्वारी की तूने
ब्याज और सूद लिया और ज़ुल्म करके अपने पड़ोसी को लूटा
और मुझे फ़रामोश किया ख़ुदावन्द ख़ुदा फ़रमाता है।
13 "देख, तेरे नारवा नफ़े' की वजह से जो तूने लिया, और तेरी
ख़ूँरेज़ी के ज़रिए' जो तेरे अन्दर हुई, मैंने ताली बजाई।
14 क्या तेरा दिल बर्दाश्त करेगा और तेरे हाथों में ज़ोर होगा,
जब मैं तेरा मु'आमिले का फ़ैसला करूँगा? मैं ख़ुदावन्द ने
फ़रमाया, और मैं ही कर दिखाऊँगा।
15 हाँ, मैं तुझ को क़ौमों में तितर बितर और मुल्कों में तितर —
बितर करूँगा, और तेरी गन्दगी तुझ में से हलाक कर दूँगा।
16 और तू क़ौमों के सामने अपने आप में नापाक ठहरेगा, और
मा'लूम करेगा कि मैं ख़ुदावन्द हूँ।"
17 और ख़ुदावन्द का कलाम मुझ पर नाज़िल हुआ:
18 कि ऐ आदमज़ाद, बनी इस्राईल मेरे लिए मैल हो गए हैं; वह
सब के सब पीतल और रॉगा और लोहा और सीसा हैं जो भट्टी में
हैं, वह चाँदी की मैल हैं।
19 इसलिए ख़ुदावन्द ख़ुदा यूँ फ़रमाता है: कि चूँकि तुम सब
मैल हो गए हो, इसलिए देखो, मैं तुम को येरूशलेम में जमा'
करूँगा।
20 जिस तरह लोग चाँदी और पीतल और लोहा और शीशा
और राँगा भट्टी में जमा' करते हैं और उनपर धौंकते हैं ताकि उनको
पिघला डालें, उसी तरह मैं अपने क़हर और अपने ग़ज़ब में तुम
को जमा' करूँगा, और तुम को वहाँ रखकर पिघलाऊँगा।
21 हाँ, मैं तुम को इकट्ठा करूँगा और अपने ग़ज़ब की आग तुम
पर धौंकूँगा, और तुम को उसमें पिघला डालूँगा।
22 जिस तरह चाँदी भट्टी में पिघलाई जाती है, उसी तरह तुम

उसमें पिघलाए जाओगे, और तुम जानोगे कि मैं ख़ुदावन्द ने
अपना क़हर तुम पर नाज़िल किया है।
23 और ख़ुदावन्द का कलाम मुझ पर नाज़िल हुआ:
24 कि 'ऐ आदमज़ाद, उससे कह, तू वह सरज़मीन है जो पाक
नहीं की गई और जिस पर ग़ज़ब के दिन में बारिश नहीं हुई।
25 जिसमें उसके नबियों ने साज़िश की है, शिकार को फाड़ते
हुए गरजने वाले शेर — ए — बबर की तरह वह जानों को खा
गए हैं; वह माल और क़ीमती चीज़ों को छीन लेते हैं; उन्होंने
उसमें बहुत सी 'औरतों को बेवा बना दिया है।
26 उसके काहिनों ने मेरी शरी'अत को तोड़ा और मेरी पाक
चीज़ों को नापाक किया है। उन्होंने पाक और 'आम में कुछ फ़र्क़
नहीं रख्खा और मैं उनमें बे'इज़्ज़त हुआ।
27 उसके हाकिम उसमें शिकार को फाड़ने वाले भेड़ियों की तरह
हैं, जो नाजाएज़ नफ़ा' की ख़ातिर ख़ूँरेज़ी करते हैं और जानों को
हलाक करते हैं।
28 और उसके नबी उनके लिए कच्च गारा करते हैं; बातिल
ख़्वाब देखते और झूटी फ़ालगीर करते हैं और कहते हैं कि
ख़ुदावन्द ख़ुदा यूँ फ़रमाता है, हालाँकि ख़ुदावन्द ने नहीं
फ़रमाया।
29 इस मुल्क के लोगों ने सितमगरी और लूट मार की है, और
ग़रीब और मोहताज को सताया है और परदेसियों पर नाहक
सख़्ती की है।
30 मैंने उनके बीच तलाश की, कि कोई ऐसा आदमी मिले जो
फ़सील बनाए, और उस सरज़मीन के लिए उसके रखने में मेरे
सामने खड़ा हो ताकि मैं उसे वीरान न करूँ, लेकिन कोई न मिला।
31 इसलिए मैंने अपना क़हर उन पर नाज़िल किया, और अपने
ग़ज़ब की आग से उनको फ़ना कर दिया; और मैं उनके चाल चलन
को उनके सिरों पर लाया, ख़ुदावन्द ख़ुदा फ़रमाता है।

23

[illegible]

1 और ख़ुदावन्द का कलाम मुझ पर नाज़िल हुआ:
2 कि 'ऐ आदमज़ाद, दो 'औरतें एक ही माँ की बेटियाँ थीं।
3 उन्होंने मिस्र में बदकारी की, वह अपनी जवानी में बदकार
बनी वहाँ उनकी छातियाँ मली गईं और वहीं उनकी दोशीज़गी के
पिस्तान मसले गए।
4 उनमें से बड़ी का नाम ओहोला और उसकी बहन का नाम
ओहोलीबा था वह दोनों मेरी हो गईं और उनसे बेटे बेटियाँ पैदा
हुए और उनके यह नाम ओहोला और ओहोलीबा सामरिया व
येरूशलेम हैं।
5 और ओहोला जब कि वह मेरी थी, बदकारी करने लगी और
अपने यारों पर या'नी असूरियों पर जो पड़ोसी थे, 'आशिक़ हुई।
6 वह सरदार और हाकिम और सबके सब दिल पसन्द जवाँ मर्द
और सवार थे, जो घोड़ों पर सवार होते और अर्ग़वानी पोशाक
पहनते थे।
7 और उसने उन सबके साथ जो असूर के बरगुज़ीदा मर्द थे
बदकारी की, और उन सबके साथ जिनसे वह 'इश्कबाज़ी करती
थी, और उनके सब बुतों के साथ नापाक हुई।
8 उसने जो बदकारी मिस्र में की थी उसे न छोड़ा, क्यूँकि उसकी
जवानी में वह उससे हम — अगोश हुए और उन्होंने उसकी
दोशीज़्गी के पिस्तानों को मसला और अपनी बदकारी उस पर
उण्डेल दी।
9 इसलिए मैंने उसे उसके यारों या'नी असूरियों के हवाले कर
दिया जिन पर वह मरती थी।
10 उन्होंने उसको बरहना किया और उसके बेटों — बेटियों को
छीन लिया और उसे तलवार से क़त्ल किया; इसलिए वह 'औरतों
में अंगुश्त नुमा हुई क्यूँकि उन्होंने उसे 'अदालत से सज़ा दी।

11 'और उसकी बहन ओहोलीबा ने यह सब कुछ देखा, लेकिन
वह शहवत परस्ती में उससे बदतर हुई और उसने अपनी बहन से
बढ़ कर बदकारी की।
12 वह असूरियों पर 'आशिक़ हुई जो सरदार और हाकिम और
उसके पड़ोसी थे, जो भड़कीली पोशाक पहनते और घोड़ों पर
सवार होते और सबके सब दिल पसन्द जवान मर्द थे।
13 और मैंने देखा, कि वह भी नापाक हो गई; उन दोनों की एक
ही चाल चलन थी।
14 और उसने बदकारी में तरक़्क़ी की क्यूँकि जब उसने दीवार
पर मर्दों की सूरतें देखीं, या'नी कसदियों की तस्वीरें जो शन्गार्फ़
से खिंची हुई थीं,
15 जो पटकों से कमरबस्ता और सिरों पर रंगीन पगड़ियाँ पहने
थे, और सब के सब देखने में हाकिम अहल — ए — बाबुल की
तरह थे जिनका वतन कसदिस्तान है।
16 तो देखते ही वह उन पर मरने लगी, और उनके पास
कसदिस्तान में क़ासिद भेजे।
17 तब अहल — ए — बाबुल उसके पास आकर 'इश्क़ के
बिस्तर पर चढ़े, और उन्होंने उससे बदकारी करके उसे आलूदा
किया और वह उनसे नापाक हुई, तो उसकी जान उनसे बेज़ार हो
गई।
18 तब उसकी बदकारी 'ऐलानिया हुई और उसकी बरहनगी
बेसत्र हो गई; तब मेरी जान उससे बेज़ार हुई जैसी उसकी बहन
से बेज़ार हो चुकी थी।
19 तोभी उसने अपनी जवानी के दिनों की याद करके जब वह
मिस्र की सरज़मीन में बदकारी करती थी, बदकारी पर बदकारी
की।
20 इसलिए वह फिर अपने उन यारों पर मरने लगी, जिनका
बदन गधों के जैसा बदन और जिनका इन्ज़ाल घोड़ों के जैसा
इन्ज़ाल था।

21 इस तरह तूने अपनी जवानी की शहवत परस्ती को, जबकि
मिस्री तेरी जवानी की छातियों की वजह से तेरे पिस्तान मलते
थे, फिर याद किया।
22 इसलिए ऐ ओहोलीबा ख़ुदावन्द ख़ुदा यूँ फ़रमाता है: कि
"देख, मैं उन यारों को जिनसे तेरी जान बेज़ार हो गई है उभारूंगा
कि तुझ से मुख़ालिफ़त करें, और उनको बुला लाऊँगा कि तुझे
चारों तरफ़ से घेर लें।
23 अहल — ए — बाबुल और सब कसदियों को फ़िक़ूद और
शो'अ और को'अ और उनके साथ तमाम असूरियों को, सब के सब
दिल पसन्द जवाँ मर्दों को, सरदारों और हाकिमों को, और बड़े बड़े
अमीरों और नामी लोगों को जो सबके सब घोड़ों पर सवार होते
हैं तुझ पर चढ़ा लाऊँगा।
24 और वह असलह — ए — जंग और रथों और छकड़ों और
उम्मतों के गिरोह के साथ तुझ पर हमला करेंगे, और ढाल और
फरी पकड़ कर और ख़ूद पहनकर चारों तरफ़ से तुझे घेर लेंगे; मैं
'अदालत उनको सुपुर्द करूँगा, और वह अपने क़ानून के मुताबिक़
तेरा फ़ैसला करेंगे।
25 और मैं अपनी ग़ैरत को तेरी मुख़ालिफ़ बनाऊँगा और वह
ग़ज़बनाक होकर तुझ से पेश आयेंगे और तेरी नाक और तेरे कान
काट डालेंगे और तेरे बाक़ी लोग तलवार से मारे जाएँगे। वह तेरे
बेटे और बेटियों को पकड़ लेंगे और तेरा बक़िया आग से भसम
होगा।
26 वह तेरे कपड़े भी उतार लेंगे और तेरे नफ़ीस ज़ेवर लूट ले
जायेंगे
27 और मैं तेरी शहवत परस्ती और तेरी बदकारी जो तूने मुल्क
— ए — मिस्र में सीखी मौक़ूफ़ करूँगा, यहाँ तक कि तू उनकी
तरफ़ फिर आँख न उठाएगी और फिर मिस्र को याद न करेगी।
28 'क्यूँकि ख़ुदावन्द ख़ुदा यूँ फ़रमाता है: कि देख, मैं तुझे उनके
हाथ में जिनसे तुझे नफ़रत है, हाँ, उन्हीं के हाथ में जिनसे तेरी

जान बेज़ार है दे दूँगा।
29 और वह तुझ से नफ़रत के साथ पेश आएँगे, और तेरा
सब माल जो तूने मेहनत से पैदा किया है छीन लेंगे और तुझे
'ऊरियान और बरहना छोड़ जायेंगे यहाँ तक कि तेरी शहवत
परस्ती — ओ — ख़बासत और तेरी बदकारी फ़ाश हो जाएगी।
30 यह सब कुछ तुझ से इसलिए होगा कि तूने बदकारी के लिए
दीगर क़ौम का पीछा किया और उनके बुतों से नापाक हुई।
31 तू अपनी बहन के रस्ते पर चली, इसलिए मैं उसका प्याला
तेरे हाथ में दूँगा।
32 ख़ुदावन्द ख़ुदा यूँ फ़रमाता है: कि तू अपनी बहन के प्याले
से जो गहरा और बड़ा है पियेगी तेरी हँसी होगी और तू ठट्ठों में
उड़ाई जाएगी, क्यूँकि उसमें बहुत सी समाई है।
33 तू मस्ती और सोग से भर जाएगी; वीरानी और हैरत का
प्याला, तेरी बहन सामरिया का प्याला है।
34 तू उसे पियेगी और निचोड़ेगी और उसकी ठेकरियाँ भी
चबाई जाएगी, और अपनी छातियाँ नोचेगी क्यूँकि मैं ही ने यह
फ़रमाया है, ख़ुदावन्द ख़ुदा फ़रमाता है।
35 फिर ख़ुदावन्द यूँ फ़रमाता है, कि चूँकि तू मुझे भूल गई और
मुझे अपनी पीठ के पीछे फेंक दिया इसलिए अपनी बदज़ाती और
बदकारी की सज़ा उठा।"
36 फिर ख़ुदावन्द ने मुझे फ़रमाया: कि 'ऐ आदमज़ाद, क्या
तू ओहोला और ओहोलीबा पर इल्ज़ाम न लगाएगा? तू उनके
घिनौने काम उन पर ज़ाहिर कर।
37 क्यूँकि उन्होंने बदकारी की और उनके हाथ ख़ूनआलूदा हैं
हाँ उन्होंने अपने बुतों से बदकारी की और अपने बेटों को जो मुझ
से पैदा हुए आग से गुज़ारा कि बुतों की नज़र होकर हलाक हों।
38 इसके 'अलावा उन्होंने मुझ से यह किया कि उसी दिन
उन्होंने मेरे हैकल को नापाक किया, और मेरे सबतों की बेहुर्मती

की।
39 क्यूँकि जब वह अपनी औलाद को बुतों के लिए ज़बह कर
चुकीं, तो उसी दिन मेरे हैकल में दाख़िल हुई, ताकि उसे नापाक
करें और देख, उन्होंने मेरे घर के अन्दर ऐसा काम किया।
40 बल्कि तुम ने दूर से मर्द बुलाए जिनके पास क़ासिद भेजा,
और देख, वह आए जिनके लिए तूने ग़ुस्ल किया और आँखों में
काजल लगाया और बनाओ सिंगार किया;
41 और तू नफ़ीस पलंग पर बैठी और उसके पास दस्तरख़्वान
तैयार किया, और उस पर तूने मेरी ख़ुशबू और मेरा 'इत्र रख्खा।
42 और एक 'अय्याशी जमा'अत की आवाज़ उसके साथ थी
और आम लोगों के 'अलावा वीरान से शराबियों को लाए और
उन्होंने उनके हाथों में कंगन और सिरों पर ख़ुशनुमा ताज पहनाए।
43 “तब मैंने उसके ज़रिए' जो बदकारी करते करते बुढ़िया हो
गई थीं, कहा, अब यह लोग उससे बदकारी करेंगे और वह उनसे
करेगी।
44 और वह उसके पास गए जिस तरह किसी कस्बी के पास जाते
हैं, उसी तरह वह उन बदज़ात 'औरतों, ओहोला और ओहोलीबा
के पास गए।
45 लेकिन सादिक़ आदमी उन पर वह फ़तवा देंगे जो बदकार
और ख़ूनी 'औरतों पर दिया जाता है, क्यूँकि वह बदकार 'औरतें हैं
और उनके हाथ ख़ून आलूदा हैं।”
46 क्यूँकि ख़ुदावन्द ख़ुदा यूँ फ़रमाता है: कि “मैं उन पर एक
गिरोह चढ़ा लाऊँगा, और उनको छोड़ दूँगा कि इधर — उधर
धक्के खाती फिरें और ग़ारत हों।
47 और वह गिरोह से उनको पथराव करेगी और अपनी
तलवारों से क़त्ल करेगी, उनके बेटों — बेटियों को हलाक करेगी
और उनके घरों को आग से जला देगी।
48 यूँ मैं बदकारी को मुल्क से ख़त्म करूँगा ताकि सब 'औरतें
'इबरत पज़ीर हों और तुम्हारी तरह बदकारी न करें।

49 और वह तुम्हारे बुराई का बदला तुम को देंगे, और तुम अपने
बुतों के गुनाहों की सज़ा का बोझ उठाओगे, ताकि तुम जानों कि
ख़ुदावन्द ख़ुदा मैं ही हूँ।”

24

?? ?????? ?? ???????

1 फिर नवें बरस के दसवें महीने की दसवीं तारीख़ को ख़ुदावन्द
का कलाम मुझ पर नाज़िल हुआ
2 कि 'ऐ आदमज़ाद, आज के दिन, हाँ, इसी दिन का नाम लिख
रख; शाह — ए — बाबुल ने ऐन इसी दिन येरूशलेम पर ख़रूज
किया।
3 और इस बाग़ी ख़ान्दान के लिए एक मिसाल बयान कर और
इनसे कह, ख़ुदावन्द ख़ुदा यूँ फ़रमाता है कि एक देग चढ़ा दे, हाँ,
उसे चढ़ा और उसमें पानी भर दे।
4 टुकड़े उसमें इकट्ठे कर, हर एक अच्छा टुकड़ा या'नी रान और
शाना और अच्छी अच्छी हड्डियाँ उसमें भर दे।
5 और गल्ले में से चुन — चुन कर ले, और उसके नीचे लकड़ियों
का ढेर लगा दे, और ख़ूब जोश दे ताकि उसकी हड्डियाँ उसमें ख़ूब
उबल जाएँ।
6 “इसलिए ख़ुदावन्द ख़ुदा यूँ फ़रमाता है: कि उस ख़ूनी शहर
पर अफ़सोस और उस देग पर जिसमें ज़न्ग लगा है, और उसका
ज़न्ग उस पर से उतारा नहीं गया! एक एक टुकड़ा करके उसमें से
निकाल, और उस पर पर्ची पड़े।
7 क्यूँकि उसका ख़ून उसके बीच है, उसने उसे साफ़ चट्टान पर
रख्खा, ज़मीन पर नहीं गिराया ताकि खाक में छिप जाए।
8 इसलिए कि ग़ज़ब नाज़िल हो और इन्तक़ाम लिया जाए,
मैंने उसका ख़ून साफ़ चट्टान पर रख्खा ताकि वह छिप न जाए।
9 इसलिए ख़ुदावन्द ख़ुदा यूँ फ़रमाता है: कि ख़ूनी शहर पर
अफ़सोस! मैं भी बड़ा ढेर लगाऊँगा।

10 लकड़ियाँ ख़ूब झोंक, आग सुलगा, गोश्त को ख़ूब उबाल
और शोरबा गाढ़ा कर और हड्डियाँ भी जला दे।
11 तब उसे ख़ाली करके अँगारों पर रख, ताकि उसका पीतल
गर्म हो और जल जाए और उसमें की नापाकी गल जाए और
उसका ज़न्ग दूर हो।
12 वह सख़्त मेहनत से हार गई, लेकिन उसका बड़ा ज़न्ग उससे
दूर नहीं हुआ; आग से भी उसका ज़न्ग दूर नहीं होता।
13 तेरी नापाकी में ख़बासत है, क्यूँकि मैं तुझे पाक करना
चाहता हूँ लेकिन तू पाक होना नहीं चाहती, तू अपनी नापाकी
से फिर पाक न होगी, जब तक मैं अपना क़हर तुझ पर पूरा न कर
चुकूँ।
14 मैं ख़ुदावन्द ने यह फ़रमाया है, यूँ ही होगा और मैं कर
दिखाऊँगा, न दस्तबरदार हूँगा न रहम करूँगा न बाज़ आऊँगा;
तेरे चाल चलन और तेरे कामों के मुताबिक़ वह तेरी 'अदालत
करेंगे ख़ुदावन्द ख़ुदा फ़रमाता है।
15 फिर ख़ुदावन्द का कलाम मुझ पर नाज़िल हुआ:
16 कि 'ऐ आदमज़ाद, देख, मैं तेरी मन्ज़ूर — ए — नज़र को
एक ही मार में तुझ से जुदा करूँगा, लेकिन तू न मातम करना, न
रोना और न आँसू बहाना।
17 चुपके चुपके आँहें भरना, मुर्दे पर नोहा न करना, सिर पर
अपनी पगड़ी बाँधना और पाँव में जूती पहनना और अपने होटों
को न छिपाना और लोगों की रोटी न खाना।"
18 इसलिए मैंने सुबह को लोगों से कलाम किया और शाम को
मेरी बीवी मर गई, और सुबह को मैंने वही किया जिसका मुझे
हुक्म मिला था।
19 तब लोगों ने मुझ से पूछा, "क्या तू हमें न बताएगा कि जो
तू करता है उसको हम से क्या रिश्ता है?"
20 तब मैंने उनसे कहा, कि ख़ुदावन्द का कलाम मुझ पर

नाज़िल हुआ:
21 कि 'इस्राईल के घराने से कह, ख़ुदावन्द ख़ुदा यूँ फ़रमाता
है, कि देखो, मैं अपने हैकल को जो तुम्हारे ज़ोर का फ़ख़्र और
तुम्हारा मंज़ूर — ए — नज़र है जिसके लिए तुम्हारे दिल तरसते
हैं नापाक करूँगा और तुम्हारे बेटे और तुम्हारी बेटियाँ, जिनको
तुम पीछे छोड़ आए हो, तलवार से मारे जाएँगे।
22 और तुम ऐसा ही करोगे जैसा मैंने किया; तुम अपने होटों
को न छिपाओगे, और लोगों की रोटियाँ न खाओगे।
23 और तुम्हारी पगड़ियाँ तुम्हारे सिरों पर और तुम्हारी जूतियाँ
तुम्हारे पाँव में होंगी, और तुम नोहा और ज़ारी न करोगे लेकिन
अपनी शरारत की वजह से घुलोगे, और एक दूसरे को देख देख
कर ठन्डी साँस भरोगे।
24 चुनाँचे हिज़क़िएल तुम्हारे लिए निशान है; सब कुछ जो
उसने किया तुम भी करोगे, और जब यह वजूद में आएगा तो तुम
जानोगे कि ख़ुदावन्द ख़ुदा मैं हूँ।
25 "और तू ऐ आदमज़ाद, देख, कि जिस दिन मैं उनसे उनका
ज़ोर और उनकी शान — ओ — शौकत और उनके मन्ज़ूर — ए
— नज़र को, और उनके मरग़ूब — ए — ख़ातिर उनके बेटे और
उनकी बेटियाँ ले लूँगा,
26 उस दिन वह जो भाग निकले, तेरे पास आएगा कि तेरे कान
में कहे।
27 उस दिन तेरा मुँह उसके सामने, जो बच निकला है खुल
जाएगा और तू बोलेगा, और फिर गूँगा न रहेगा; इसलिए तू उनके
लिए एक निशान होगा और वह जानेंगे कि ख़ुदावन्द मैं हूँ।"

25

??????? ?? ??????
1 और ख़ुदावन्द ख़ुदा का कलाम मुझपर नाज़िल हुआ।

2 कि 'ऐ आदमज़ाद बनी 'अम्मून की तरफ़ मुतवज्जिह हो और
उनके ख़िलाफ़ नबुव्वत कर।
3 और बनी 'अम्मून से कह, ख़ुदावन्द ख़ुदा का कलाम सुनो,
ख़ुदावन्द ख़ुदा यूँ फ़रमाता है: चूँकि तूने मेरे हैकल पर जब वह
नापाक किया गया, और इस्राईल के मुल्क पर जब वह उजाड़ा
गया, और बनी यहूदाह पर जब वह ग़ुलाम हो कर गए, अहा हा!
कहा।
4 इसलिए मैं तुझे अहल — ए — पूरब के हवाले कर दूँगा कि
तू उनकी मिल्कियत हो, और वह तुझ में अपने ख़ेमे लगाएँगे और
तेरे अन्दर अपने मकान बनाएँगे, और तेरे मेवे खाएँगे और तेरा
दूध पिएँगे।
5 और मैं रब्बा को ऊँटों का अस्तबल और बनी 'अम्मून की सर
— ज़मीन को भेड़साला बना दूँगा, और तू जानेगा कि मैं ख़ुदावन्द
हूँ।
6 क्यूँकि ख़ुदावन्द ख़ुदा यूँ फ़रमाता है, कि चूँकि तूने तालियाँ
बजाई और पाँव पटके, और इस्राईल की मम्लकत की बर्बादी पर
अपनी कमाल 'अदावत से बड़ी ख़ुशी की;
7 इसलिए देख, मैं अपना हाथ तुझ पर चलाऊँगा और तुझे
दीगर क़ौम के हवाले करूँगा, ताकि वह तुझ को लूट लें और मैं
तुझे उम्मतों में से काट डालूँगा, और मुल्कों में से तुझे बर्बाद —
ओ — हलाक करूँगा; मैं तुझे हलाक करूँगा और तू जानेगा कि
ख़ुदावन्द मैं हूँ।
8 "ख़ुदावन्द ख़ुदा यूँ फ़रमाता है: कि चूँकि मोआब और श'ईर
कहते हैं कि बनी यहूदाह तमाम क़ौमों की तरह हैं,
9 इसलिए देख, मैं मोआब के पहलू को उसके शहरों से, उसकी
सरहद के शहरों से जो ज़मीन की शौकत हैं, बैत — यसीमोत और
बालम'ऊन और क़रयताइम से खोल दूँगा।
10 और मैं अहल — ए — पूरब को उसके और बनी 'अम्मून

के ख़िलाफ़ चढ़ा लाऊँगा कि उन पर क़ाबिज़ हों, ताकि क़ौमों के
बीच बनी 'अम्मून का ज़िक्र बाक़ी न रहे।
11 और मैं मोआब को सज़ा दूँगा, और वह जानेंगे कि ख़ुदावन्द
मैं हूँ।
12 'ख़ुदावन्द ख़ुदा यूँ फ़रमाता है: कि चूँकि अदोम ने बनी
यहूदाह से कीना कशी की, और उनसे इन्तक़ाम लेकर बड़ा गुनाह
किया।
13 इसलिए ख़ुदावन्द ख़ुदा यूँ फ़रमाता है, कि मैं अदोम पर
हाथ चलाऊँगा; उसके इंसान और हैवान को हलाक करूँगा, और
तीमान से लेकर उसे वीरान करूँगा और वह ददान तक तलवार से
क़त्ल होंगे।
14 और मैं अपनी क़ौम बनी — इस्राईल के हाथ से अदोम से
इन्तक़ाम लूँगा, और वह मेरे ग़ज़ब — ओ — क़हर के मुताबिक़
अदोम से सुलूक करेंगे, और वह मेरे इन्तक़ाम को मा'लूम करेंगे,
ख़ुदावन्द ख़ुदा फ़रमाता है।
15 'ख़ुदावन्द ख़ुदा यूँ फ़रमाता है: कि चूँकि फ़िलिस्तियों ने
कीनाकशी की, और दिल की कीना वरी से इन्तक़ाम लिया, ताकि
दाइमी 'अदावत से उसे हलाक करें।
16 इसलिए ख़ुदावन्द ख़ुदा यूँ फ़रमाता है, कि देख, मैं
फ़िलिस्तियों पर हाथ चलाऊँगा और करेतियों को काट डाल्लूँगा,
और समन्दर के साहिल के बाक़ी लोगों को हलाक करूँगा।
17 और मैं सख़्त सज़ा देकर उनसे बड़ा इन्तक़ाम लूँगा, और
जब मैं उनसे इन्तक़ाम लूँगा तो वह जानेंगे कि ख़ुदावन्द मैं हूँ।"

26

[illegible]

1 और ग्यारवें बरस में महीने के पहले दिन ख़ुदावन्द का कलाम
मुझ पर नाज़िल हुआ:

2 कि 'ऐ आदमज़ाद, चूँकि सूर ने येरूशलेम पर कहा है, 'अहा
हा! वह क़ौमों का फाटक तोड़ दिया गया है, अब वह मेरी तरफ़
मुतवज्जिह होगी, अब उसकी बर्बादी से मेरी मा'मूरी होगी।
3 इसलिए ख़ुदावन्द ख़ुदा यूँ फ़रमाता है, कि देख, ऐ सूर मैं तेरा
मुख़ालिफ़ हूँ और बहुत सी क़ौमों को तुझ पर चढ़ा लाऊँगा, जिस
तरह समन्दर अपनी मौजों को चढ़ाता है।
4 और वह सूर की शहर पनाह को तोड़ डालेंगे, और उसके
बुरजों को ढादेंगे और मैं उसकी मिट्टी तक ख़ुर्च फेंकूँगा और उसे
साफ़ चट्टान बना दूँगा।
5 वह समन्दर में जाल फैलाने की जगह होगा क्यूँकि मैं ही
ने फ़रमाया, ख़ुदावन्द ख़ुदा फ़रमाता है, और वह क़ौमों के लिए
ग़नीमत होगा।
6 और उसकी बेटियाँ जो मैदान में हैं, तलवार से क़त्ल होंगी
और वह जानेंगे कि मैं ख़ुदावन्द हूँ।
7 क्यूँकि ख़ुदावन्द ख़ुदा यूँ फ़रमाता है: कि देख, मैं शाह — ए
— बाबुल नबूकदनज़र को जो शहनशाह है, घोड़ों और रथों और
सवारों और फ़ौजों और बहुत से लोगों के गिरोह के साथ उत्तर से
सूर पर चढ़ा लाऊँगा;
8 वह तेरी बेटियों को मैदान में तलवार से क़त्ल करेगा और तेरे
चारों तरफ़ मोर्चाबन्दी करेगा, और तेरे सामने दमदमा बाँधेगा
और तेरी मुख़ालिफ़त में ढाल उठाएगा।
9 वह अपने मन्जनीक को तेरी शहर पनाह पर चलाएगा, और
अपने तबरों से तेरे बुर्जों को ढा देगा।
10 उसके घोड़ों की कसरत की वजह से इतनी गर्द उड़ेगी कि
तुझे छिपा लेगी जब वह तेरे फाटकों में घुस आएगा, जिस तरह
रखना करके शहर में घुस जाते हैं, तो सवारों और गाड़ियों और
रथों की गड़गड़ाहट की आवाज़ से तेरी शहरपनाह हिल जाएगी।
11 वह अपने घोड़ों के सुमों से तेरी सब सड़कों को रौन्द

डालेगा, और तेरे लोगों की तलवार से क़त्ल करेगा और तेरी
ताक़त के सुतून ज़मीन पर गिर जाएँगे।
12 और वह तेरी दौलत लूट लेंगे, और तेरे माल — ए —
तिजारत को ग़ारत करेंगे और तेरे शहर पनाह तोड़ डालेंगे तेरे
रंगमहलों को ढा देंगे, और तेरे पत्थर और लकड़ी और तेरी मिट्टी
समन्दर में डाल देंगे।
13 और तेरे गाने की आवाज़ बंद कर दूँगा और तेरी सितारों की
आवाज़ फिर सुनी न जायेगी।
14 और मैं तुझे साफ़ चट्टान बना दूँगा तू जाल फैलाने की जगह
होगा और फिर ता'मीर न किया जाएगा क्यूँकि मैं ख़ुदावन्द ने यह
फ़रमाया है, ख़ुदावन्द ख़ुदा फ़रमाता है।
15 ख़ुदावन्द ख़ुदा सूर से यूँ फ़रमाता है: कि जब तुझ में क़त्ल
का काम जारी होगा और ज़ख्मी कराहते होंगे, तो क्या बहरी
मुल्क तेरे गिरने के शोर से न थरथराएँगे?
16 तब समन्दर के हाकिम अपने तख़्तों पर से उतरेंगे और अपने
जुब्बे उतार डालेंगे और अपने ज़रदोज़ पैराहन उतार फेकेंगे, वह
थरथराहट से मुलब्बस होकर ख़ाक पर बैठेगे, वह हरदम काँपेंगे
और तेरी वजह से हैरत ज़दा होंगे।
17 और वह तुझ पर नोहा करेंगे और कहेंगे, 'हाय, तू कैसा
हलाक हुआ जो बहरी मुल्कों से आबाद और मशहूर शहर था, जो
समन्दर में ताक़तवर था; जिसके बाशिन्दों से सब उसमें आमद —
ओ — रफ़त करने वाले ख़ौफ़ खाते थे!
18 अब बहरी मुल्क तेरे गिरने के दिन थरथरायेंगे हाँ, समन्दर
के सब बहरी मुल्क तेरे अन्जाम से परेशान होंगे।
19 "क्यूँकि ख़ुदावन्द ख़ुदा यूँ फ़रमाता है: कि जब मैं तुझे उन
शहरों की तरह जो बे चराग़ हैं, वीरान कर दूँगा; जब मैं तुझ पर
समन्दर बहा दूँगा और जब समन्दर तुझे छिपा लेगा,
20 तब मैं तुझे उनके साथ जो पाताल में उतर जाते हैं, पुराने
वक़्त के लोगों के बीच नीचे उतारूँगा, और ज़मीन के तह में और

उन उजाड़ मकानों में जो पहले से हैं, उनके साथ जो पाताल में
उतर जाते हैं; तुझे बसाऊँगा ताकि तू फिर आबाद न हो, लेकिन
मैं ज़िन्दों के मुल्क को जलाल बख़्सूँगा।
21 मैं तुझे जा — ए — 'इबरत करूँगा और तू हलाक होगा,
हर चन्द तेरी तलाश की जाए तो तू कहीं हमेशा तक न मिलेगा,
ख़ुदावन्द ख़ुदा फ़रमाता है।”

27

[illegible]

1 फिर ख़ुदावन्द का कलाम मुझपर नाज़िल हुआ।
2 कि 'ऐ आदमज़ाद, तू सूर पर नोहा शुरू' कर।
3 और सूर से कह तुझे, जिसने समन्दर के मदख़ल में जगह
पाई और बहुत से बहरी मुल्क के लोगों के लिए तिजारत गाह है,
ख़ुदावन्द ख़ुदा यूँ फ़रमाता है: कि 'ऐ सूर, तू कहता है, मेरा हुस्न
कामिल है। किया।
4 तेरी सरहदें समन्दर के बीच हैं, तेरे मिस्त्रियों ने तेरी
ख़ुशनुमाई को कामिल किया है।
5 उन्होंने सनीर के सरोओं से लाकर तेरे जहाज़ों के तख़्ते बनाए,
और लुबनान से देवदार काटकर तेरे लिए मस्तूल बनाए।
6 बसन के बलूत से टाट बनाए तेरे तख़्ते जज़ाइर — ए —
कित्तीम के सनूबर से हाथी दांत जड़कर तैयार किये गए।
7 तेरा बादबान मिस्री मुनक़्क़श कतान का था ताकि तेरे लिए
झन्डे का काम दे, तेरा शामियाना जज़ाईरे इलिसा के कबूदी व
अर्ग़वानी रंग का था।
8 सैदा और अर्वद के रहने वाले तेरे मल्लाह थे और ऐ सूर तेरे
'अक़्लमन्द तुझ में तेरे नाख़ुदा थे।

9 जबल के बुज़ुर्ग और 'अक़्लमन्द तुझ में थे कि रखना बन्दी
करें, समन्दर के सब जहाज़ और उनके मल्लाह तुझमें हाज़िर थे
कि तेरे लिए तिजारत का काम करें।
10 फ़ारस और लूद और फूत के लोग तेरे लिए लश्कर के जंगी
बहादुर थे। वह तुझ में सिपर और ख़ूद को लटकाते और तुझे रौनक
बख़्शाते थे।
11 अर्वद के मर्द तेरी ही फ़ौज के साथ चारों तरफ़ तेरी
शहरपनाह पर मौजूद थे और बहादुर तेरे बुर्जों पर हाज़िर थे,
उन्होंने अपनी सिप्परें चारों तरफ़ तेरी दीवारों पर लटकाई और
तेरे जमाल को कामिल किया।
12 'तरसीस ने हर तरह के माल की कसरत की वजह से तेरे साथ
तिजारत की, वह चाँदी और लोहा और रॉगा और सीसा लाकर
तेरे बाज़ारों में सौदागरी करते थे।
13 यावान तूबल और मसक तेरे ताजिर थे, वह तेरे बाज़ारों में
और लुबनान तेरे बाज़ारों में ग़ुलामों और पीतल के बर्तनों की
सौदागरी करते थे।
14 अहल — ए — तुजरमा ने तेरे बाज़ारों में घोड़ों, जंगी घोड़ों
और खच्चरों की तिजारत की।
15 अहल ए — ददान तेरे ताजिर थे बहुत से बहरी मुल्क
तिजारत के लिए तेरे इख़्तियार में वह हाथी दान्त और आबनूस
मुबादला के लिए तेरे पास लाते थे
16 अरामी तेरी दस्तकारी की कसरत की वजह से तेरे साथ
तिजारत करते थे वह गौहर — ए — शब — चराग़ और अर्गवानी
रंग और चिकनदोज़ी और कतान और मूंगा और मल्लाह थे लाल
लाकर तुझ से ख़रीद — ओ — फ़रोख़्त करते थे।
17 यहूदाह और इस्राईल का मुल्क तेरे ताजिर थे, वह मिनीत
और पन्नग का गेहूँ और शहद और रोगन और बिलसान लाकर तेरे
साथ तिजारत करते थे।
18 अहल — ए — दमिश्क़ तेरी दस्तकारी की कसरत की वजह

से, और क़िस्म क़िस्म के माल की ज़्यादती के ज़रिए' हलबून की
मय और सफ़ेद ऊन की तिजारत तेरे यहाँ करते थे।
19 दान और यावान ऊज़ाल से तज और आबदार फ़ौलाद और
अगर तेरे बाज़ारों में लाते थे।
20 ददान तेरा ताजिर था, जो सवारी के चार — जामे तेरे हाथ
बेचता था।
21 'अरब और कीदार के सब अमीर तिजारत की राह से तेरे
हाथ में थे, वह बर्रे और मेंढे और बकरियाँ लाकर तेरे साथ तिजारत
करते थे।
22 सबा और रा'माह के सौदागर तेरे साथ सौदागरी करते थे;
वह हर क़िस्म के नफ़ीस मसाल्हे और हर तरह के क़ीमती पत्थर
और सोना, तेरे बाज़ारों में लाकर ख़रीद — ओ — फ़रोख़्त करते
थे।
23 हरान और कन्ना और अदन और सबा के सौदागर, और असूर
और किलमद के बाशिन्दे तेरे साथ सौदागरी करते थे।
24 यही तेरे सौदागर थे, जो लाजूर्दी कपड़े और कम ख़्वाब और
नफ़ीस लिबासों से भरे देवदार के सन्दूक़, डोरी से कसे हुए तेरी
तिजारतगाह में बेचने को लाते थे।
25 तरसीस के जहाज़ तेरी तिजारत के कारवान थे, तू मा'मूर
और वस्त — ए — बहर में बहुत शान — ओ — शौकत रखता
था।
26 "तेरे मल्लाह तुझे गहरे पानी में लाए, पूरबी हवा ने तुझ को
वस्त — ए — बहर में तोड़ा है।
27 तेरा माल — ओ — अस्बाब और तेरी अजनास — ए —
तिजारत और तेरे अहल — ए — जहाज़ व ना ख़ुदा तेरे रखना
बन्दी करनेवाले और तेरे कारोबार के गुमाश्ते और सब जंगी मर्द
जो तुझ में हैं, उस तमाम जमा'अत के साथ जो तुझ में है, तेरी
तबाही के दिन समन्दर के बीच में गिरेंगे।
28 तेरे नाख़ुदाओं के चिल्लाने के शोर से तमाम 'इलाक़े थर्रा
जायेंगे।

29 और तमाम मल्लाह और अहल — ए — जहाज़ और
समन्दर के सब नाख़ुदा, अपने जहाज़ों पर से उतर आएँगे; वह
ख़ुश्की पर खड़े होंगे।
30 और अपनी आवाज़ बुलन्द करके तेरी वजह से चिल्लाएँगे,
और अपने सिरों पर ख़ाक डालेंगे और राख में लोटेंगे।
31 वह तेरी वजह से सिर मुंडाएँगे और टाट ओढेंगे वह तेरे लिए
दिल शिकस्ता होकर रोएँगे और जॉगुदाज़ नोहा करेंगे।
32 और नोहा करते हुए तुझ पर मरसिया ख़वानी करेंगे और
तुझ पर यूँ रोएँगे; 'कौन सूर की तरह है, जो समन्दर के बीच में
तबाह हुआ?
33 जब तेरा माल — ए — तिजारत समन्दर पर से जाता था,
तब तुझ से बहुत सी क़ौमें मालामाल होती थीं; तू अपनी दौलत
और अजनास — ए — तिजारत की कसरत से इस ज़मीन के
बादशाहों को दौलतमन्द बनाता था।
34 लेकिन अब तू समन्दर की गहराई में पानी के ज़ोर से टूट
गया है, तेरी अजनास — ए — तिजारत। और तेरे अन्दर की
तमाम जमा'अत गिर गई।
35 बहरी मुल्क के सब रहने वाले तेरे ज़रिए' हैरत ज़दह होंगे
और उनके बादशाह बहुत तरसान होंगे और उनका चेहरा ज़र्द हो
जाएगा।
36 क़ौमों के सौदागर तेरा ज़िक्र सुनकर सुसकारेंगे, तू जा — ए
— 'इबरत होगा और बाक़ी न रहेगा।"

28

[illegible]

1 फिर ख़ुदावन्द का कलाम मुझ पर नाज़िल हुआ।
2 कि 'ऐआदमज़ाद, वाली — ए — सूर से कह, ख़ुदावन्द ख़ुदा
यूँ फ़रमाता है, इसलिए कि तेरे दिल में ग़ुरूर समाया और तूने
कहा, 'मैं ख़ुदा हूँ, और समन्दर के किनारे में इलाही तख़्त पर बैठा

हूँ, और तूने अपना दिल इलाह के जैसा बनाया है, अगरचे तू इलाह नहीं बल्कि इंसान है।

3 देख, तू दानीएल से ज़्यादा 'अक़्लमन्द है, ऐसा कोई राज़ नहीं जो तुझ से छिपा हो।

4 तूने अपनी हिकमत और ख़िरद से माल हासिल किया, और सोने चाँदी से अपने ख़ज़ाने भर लिए।

5 तूने अपनी बड़ी हिकमत से और अपनी सौदागरी से अपनी दौलत बहुत बढ़ाई, और तेरा दिल तेरी दौलत के ज़रिए' फूल गया है।

6 इसलिए ख़ुदावन्द ख़ुदा यूँ फ़रमाता है: चूँकि तूने अपना दिल इलाह के जैसा बनाया।

7 इसलिए देख, मैं तुझ पर परदेसियों को जो क़ौमों में हैबतनाक हैं, चढ़ा लाऊँगा; वह तेरी समझदारी की ख़ूबी के ख़िलाफ़ तलवार खींचेंगे और तेरे जमाल को ख़राब करेंगे।

8 वह तुझे पाताल में उतारेंगे और तू उनकी मौत मरेगा जो समन्दर के बीच में क़त्ल होते हैं।

9 क्या तू अपने क़ातिल के सामने यूँ कहेगा, कि 'मैं ख़ुदावन्द हूँ'? हालाँकि तू अपने क़ातिल के हाथ में ख़ुदा नहीं, बल्कि इंसान है।

10 तू अजनबी के हाथ से नामख़्तून की मौत मरेगा, क्यूँकि मैंने फ़रमाया है ख़ुदावन्द ख़ुदा फ़रमाता है।

11 और ख़ुदावन्द का कलाम मुझ पर नाज़िल हुआ

12 कि 'ऐआदमज़ाद, सूर के बादशाह पर यह नोहा कर और उससे कह, ख़ुदावन्द ख़ुदा यूँ फ़रमाता है: कि तू ख़ातिम — उल — कमाल 'अक़्ल से मा'मूर और हुस्न में कामिल है।

13 तू अदन में बाग़ — ए — ख़ुदा में रहा करता था, हर एक क़ीमती पत्थर तेरी पोशिश के लिए था; मसलन याक़ूत — ए — सुर्ख़ और पुखराज और इल्मास और फ़िरोज़ा और संग — ए —

सुलेमानी और ज़बरजद और नीलम और जुमर्रद और गौहर — ए
— शबचराग़ और सोने से, तुझ में ख़ातिमसाज़ी और नगीनाबन्दी
की सन'अत तेरी पैदाइश ही के रोज़ से जारी रही।
14 तू मम्सूह करूबी था जो साया। अफ़गन था, और मैंने तुझे
ख़ुदा के कोह — ए — मुक़द्दस पर क़ायम किया; तू वहाँ आतिशी
पत्थरों के बीच चलता फिरता था।
15 तू अपनी पैदाइश ही के रोज़ से अपनी राह — ओ — रस्म
में कामिल था, जब तक कि तुझ में नारास्ती न पाई गई।
16 तेरी सौदागरी की फ़िरावानी की वजह से उन्होंने तुझ में
ज़ुल्म भी भर दिया और तूने गुनाह किया; इसलिए मैंने तुझ को
ख़ुदा के पहाड़ पर से गन्दगी की तरह फेंक दिया, और तुझ साया
— अफ़गन करूबी को आतिशी पत्थरों के बीच से फ़ना कर दिया।
17 तेरा दिल तेरे हुस्न पर ग़ुरूर करता था, तूने अपने जमाल
की वजह से अपनी हिकमत खो दी; मैंने तुझे ज़मीन पर पटख
दिया और बादशाहों के सामने रख दिया है, ताकि वह तुझे देख
लें।
18 तूने अपनी बदकिरदारी की कसरत, और अपनी सौदागरी
की नारास्ती से अपने हैकलों को नापाक किया है। इसलिए मैं तेरे
अन्दर से आग निकालूँगा जो तुझे भसम करेगी, और मैं तेरे सब
देखने वालों की आँखों के सामने तुझे ज़मीन पर राख कर दूँगा।
19 क़ौमों के बीच वह सब जो तुझ को जानते हैं, तुझे देख कर
हैरान होंगे; तू जा — ए — 'इबरत होगा और बाक़ी न रहेगा।
20 फिर ख़ुदावन्द का कलाम मुझ पर नाज़िल हुआ:
21 कि 'ऐआदमज़ाद, सैदा का रुख़ करके उसके ख़िलाफ़ नबुव्वत
कर।
22 और कह, ख़ुदावन्द ख़ुदा यूँ फ़रमाता है: कि देख, मैं तेरा
मुख़ालिफ़ हूँ, ऐ सैदा; और तेरे अन्दर मेरी तम्जीद होगी, और
जब मैं उसको सज़ा दूँगा तो लोग मा'लूम कर लेंगे कि मैं ख़ुदावन्द
हूँ, और उसमें मेरी तक़्दीस होगी।

23 मैं उसमें वबा भेजूँगा, और उसकी गलियों में ख़ूँरेज़ी करूँगा,
और मक़्तूल उसके बीच उस तलवार से जो चारों तरफ़ से उस पर
चलेगी गिरेंगे, और वह मा'लूम करेंगे कि मैं ख़ुदावन्द हूँ।
24 तब बनी — इस्राईल के लिए उनके चारों तरफ़ के सब लोगों
में से, जो उनको बेकार जानते थे, कोई चुभने वाला काँटा या
दुखाने वाला ख़ार न रहेगा, और वह जानेंगे कि ख़ुदावन्द ख़ुदा मैं
हूँ।
25 ख़ुदावन्द ख़ुदा यूँ फ़रमाता है: जब मैं बनी — इस्राईल को
क़ौमों में से, जिनमें वह तितर बितर हो गए जमा' करूँगा, तब मैं
क़ौमों की आँखों के सामने उनसे अपनी तक़दीस कराऊँगा; और
वह अपनी सरज़मीन में जो मैंने अपने बन्दे या'क़ूब को दी थी
बसेंगे।
26 और वह उसमें अम्न से सकूनत करेंगे, बल्कि मकान बनाएँगे
और अंगूरिस्तान लगाएँगे और अम्न से सकूनत करेंगे; जब मैं उन
सब को जो चारों तरफ़ से उनकी हिक़ारत करते थे, सज़ा दूँगा तो
वह जानेंगे के मैं ख़ुदावन्द उनका ख़ुदा हूँ।

29

[illegible]

1 दसवें बरस के दसवें महीने की बारहवीं तारीख़ को ख़ुदावन्द
का कलाम मुझ पर नाज़िल हुआ:
2 कि 'ऐ आदमज़ाद, तू शाह — ए — मिस्र फ़िर'औन के
ख़िलाफ़ हो, और उसके और तमाम मुल्क — ए — मिस्र के
ख़िलाफ़ नबुव्वत कर
3 कलाम कर और कह, ख़ुदावन्द ख़ुदा यूँ फ़रमाता है: कि "देख,
ऐ शाह — ए — मिस्र फ़िर'औन, मैं तेरा मुख़ालिफ़ हूँ; उस बड़े
घड़ियाल का जो अपने दरियाओं में लेट रहता है और कहता

है कि 'मेरा दरिया-ए-नील मेरा ही है, और मैंने उसे अपने लिए
बनाया है।
4 लेकिन मैं तेरे जबड़ों में काँटे अटकाऊँगा, और तेरी दरियाओं
की मछलियाँ तेरी खाल पर चिमटाऊँगा, और तुझे तेरी तेरे
दरियाओं से बाहर से बाहर खींच निकालूँगा और तेरे दरियाओं
की सब मछलियाँ तेरी खाल पर चिमटी होंगी।
5 और मैं तुझ को और तेरे दरियाओं की मछलियों को वीराने
में फेंक दूँगा, तू खुले मैदान में पड़ा रहेगा, तू न बटोरा जाएगा न
जमा' किया जाएगा; मैंने तुझे मैदान के दरिन्दों और आसमान के
परिन्दों की ख़ुराक कर दिया है।
6 और मिस्र के तमाम बाशिन्दे जानेंगे कि मैं ख़ुदावन्द हूँ।
इसलिए कि वह बनी — इस्राईल के लिए सिर्फ़ सरकंडे का 'असा
थे।
7 जब उन्होंने तुझे हाथ में लिया, तो तू टूट गया और उन सबके
कन्धे ज़ख्मी कर डाले; फिर जब उन्होंने तुझ पर भरोसा किया,
तो तू टुकड़े — टुकड़े हो गया और उन सब की कमरें हिल गईं।
8 इसलिए ख़ुदावन्द ख़ुदा यूँ फ़रमाता है: कि देख, मैं एक
तलवार तुझ पर लाऊँगा और तुझ में इंसान और हैवान को काट
डालूँगा।
9 और मुल्क — ए — मिस्र उजाड़ और वीरान हो जाएगा, और
वह जानेंगे कि मैं ख़ुदावन्द हूँ।" क्यूँकि उसने कहा है, कि दरिया-
ए-नील मेरा ही है, और मैंने ही उसे बनाया है।
10 इसलिए देख, मैं तेरा और तेरे दरियाओं का मुख़ालिफ़ हूँ,
और मुल्क — ए — मिस्र को मिजदाल से असवान बल्कि कूश
की सरहद तक महज़ वीरान और उजाड़ कर दूँगा।
11 किसी इंसान का पाँव उधर न पड़ेगा और न उसमें किसी
हैवान के पाँव का गुज़र होगा क्यूँकि वह चालीस बरस तक आबाद
न होगा।

12 और मैं वीरान मुल्कों के साथ मुल्क — ए — मिस्र को
वीरान करूँगा, और उजड़े शहरों के साथ उसके शहर चालीस बरस
तक उजाड़ रहेंगे। और मैं मिस्रियों को क़ौमों में तितर बितर और
मुख़तलिफ़ मुल्कों में तितर — बितर करूँगा।
13 "क्यूँकि ख़ुदावन्द ख़ुदा यूँ फ़रमाता है: कि चालीस बरस के
आख़िर में मैं मिस्रियों की उन क़ौमों के बीच से, जहाँ वह तितर
बितर हुए जमा' करूँगा;
14 और मैं मिस्र के ग़ुलामों को वापस लाऊँगा, और उनकी
फ़तरूस की ज़मीन उनके वतन में वापस पहुँचाऊँगा, और वह
वहाँ बेकार मम्लुकत होंगे।
15 यह ममलुकत तमाम मम्लुकतों से ज़्यादा बेकार होगी, और
फिर क़ौमों पर अपने आप बुलन्द न करेगी; क्यूँकि मैं उनको पस्त
करूँगा ताकि फिर क़ौमों पर हुक्मरानी न करें।
16 और वह आइंदा को बनी — इस्राईल की भरोसे की जगह
न होगी, जब वह उनकी तरफ़ देखने लगे तो उनकी बदकिरदारी
याद दिलाएँगें और जानेंगे कि मैं ख़ुदावन्द हूँ।"
17 सत्ताइसवें बरस के पहले महीने की पहली तारीख़ को,
ख़ुदावन्द का कलाम मुझ पर नाज़िल हुआ:
18 कि 'ऐ आदमज़ाद, शाह — ए — बाबुल नबूकदनज़र ने
अपनी फ़ौज से सूर की मुख़ालिफ़त में बड़ी ख़िदमत करवाई है;
हर एक सिर बेबाल हो गया और हर एक का कन्धा छिल गया,
लेकिन न उसने न उसके लश्कर ने सूर से उस ख़िदमत के वास्ते,
जो उसने उसकी मुख़ालिफ़त में की थी कुछ मजदूरी पाई।
19 इसलिए ख़ुदावन्द ख़ुदा यूँ फ़रमाता है: कि देख, मैं मुल्क —
ए — मिस्र शाह — ए — बाबुल नबूकदनज़र के हाथ में कर दूँगा,
वह उसके लोगों को पकड़ ले जाएगा, और उसको लूट लेगा और
उसकी ग़नीमत को ले लेगा, और यह उसके लश्कर की मजदूरी
होगी।

20 मैंने मुल्क — ए — मिस्र उस मेहनत के सिले में जो उसने की
उसे दिया क्यूँकि उन्होंने मेरे लिए मशक़्क़त खींची थी; ख़ुदावन्द
ख़ुदा फ़रमाता है
21 “मैं उस वक़्त इस्राईल के ख़ान्दान का सींग उगाऊँगा और
उनके बीच तेरा मुँह खोलूँगा; और वह जानेंगे कि मैं ख़ुदावन्द हूँ।”

30

[illegible]

1 और ख़ुदावन्द का कलाम मुझ पर नाज़िल हुआ।
2 कि 'ऐ आदमज़ाद, नबुव्वत कर और कह, ख़ुदावन्द ख़ुदा यूँ
फ़रमाता है कि चिल्ला कर कहो: अफ़सोस उस दिन पर!'
3 इसलिए कि वह दिन क़रीब है, हाँ, ख़ुदावन्द का दिन या'नी
बादलों का दिन क़रीब है। वह क़ौमों की सज़ा का वक़्त होगा।
4 क्यूँकि तलवार मिस्र पर आएगी, और जब लोग मिस्र में
क़त्ल होंगे और ग़ुलामी में जाएँगे और उसकी बुनियादें बर्बाद
की जायेंगी तो अहल — ए — कूश सख़्त दर्द में मुब्तिला होंगे।
5 कूश और फ़ूत और लूद और तमाम मिले जुले लोग, और कूब
और उस सरज़मीन के रहने वाले जिन्होंने मु'आहिदा किया है,
उनके साथ तलवार से क़त्ल होंगे।
6 ख़ुदावन्द यूँ फ़रमाता है: कि मिस्र के मददगार गिर जाएँगे
और उसके ताक़त का ग़ुरूर जाता रहेगा, मिजदाल से असवान
तक वह उसमें तलवार से क़त्ल होंगे, ख़ुदावन्द ख़ुदा फ़रमाता है।
7 और वह वीरान मुल्कों के साथ वीरान होंगे, और उसके शहर
उजड़े शहरों के साथ उजाड़ रहेंगे।
8 और जब मैं मिस्र में आग भड़काऊँगा, और उसके सब
मददगार हलाक किए जाएँगे तो वह मा'लूम करेंगे कि ख़ुदावन्द
मैं हूँ।

9 उस रोज़ बहुत से क़ासिद जहाज़ों पर सवार होकर, मेरी तरफ़
से रवाना होंगे कि ग़ाफ़िल कूशियों को डराएँ, और वह सख़्त दर्द
में मुब्तिला होंगे जैसे मिस्र की सज़ा के वक़्त, क्यूँकि देख वह दिन
आता है।
10 ख़ुदावन्द ख़ुदा यूँ फ़रमाता है: कि मैं मिस्र के गिरोह को
शाह — ए — बाबुल नबूकदनज़र के हाथ से बर्बाद — ओ —
हलाक कर दूँगा।
11 वह और उसके साथ उसके लोग जो क़ौमों में हैबतनाक हैं,
मुल्क उजाड़ने को भेजे जाएँगे और वह मिस्र पर तलवार खींचेंगे
और मुल्क को मक़्तूलों से भर देंगे।
12 और मैं नदियों को सुखा दूँगा और मुल्क को शरीरों के हाथ
बेचूँगा और मैं उस सर ज़मीन को और उसकी तमाम मा'मूरी को
अजनबियों के हाथ से वीरान करूँगा, मैं ख़ुदावन्द ने फ़रमाया है।
13 ख़ुदावन्द ख़ुदा यूँ फ़रमाता है: कि "मैं बुतों को भी बर्बाद —
ओ — हलाक करूँगा और नूफ़ में से मूरतों को मिटा डालूँगा और
आइंदा को मुल्क — ए — मिस्र से कोई बादशाह खड़ा न होगा,
और मैं मुल्क — ए — मिस्र में दहशत डाल दूँगा।
14 और फ़तरूस को वीरान करूँगाऔर जुअन में आग
भड़काऊँगा और नो पर फ़तवा दूँगा।
15 और मैं सीन पर जो मिस्र का किला' है, अपना क़हर नाज़िल
करूँगा और नो के गिरोह को काट डालूँगा।
16 और मैं मिस्र में आग लगा दूँगा, सीन को सख़्त दर्द होगा,
और नो में रखने हो जाएँगे और नूफ़ पर हर दिन मुसीबत होगी।
17 ओन और फ़ीबसत के जवान तलवार से क़त्ल होंगे और यह
दोनों बस्तियाँ ग़ुलामी में जाएँगी।
18 और तहफ़नहीस में भी दिन अँधेरा होगा, जिस वक़्त मैं
वहाँ मिस्र के जूओं को तोड़ूँगा और उसकी क़ुव्वत की शौकत मिट
जाएगी और उस पर घटा छा जाएगी और उसकी बेटियाँ ग़ुलाम

होकर जाएँगी।
19 इसी तरह से मिस्र को सज़ा दूँगा और वह जानेंगे कि
ख़ुदावन्द मैं हूँ।"
20 ग्यारहवें बरस के पहले महीने की सातवीं तारीख़ को,
ख़ुदावन्द का कलाम मुझ पर नाज़िल हुआ:
21 कि 'ऐ आदमज़ाद, मैंने शाह — ए — मिस्र फ़िर'औन का
बाज़ू तोड़ा, और देख, वह बाँधा न गया, दवा लगा कर उस पर
पट्टियाँ न कसी गई कि तलवार पकड़ने के लिए मज़बूत हो।
22 इसलिए ख़ुदावन्द ख़ुदा यूँ फ़रमाता है: कि देख, मैं शाह —
ए — मिस्र फ़िर'औन का मुख़ालिफ़ हूँ, और उसके बाज़ू ओं को
या'नी मज़बूत और टूटे को तोड़ूँगा, और तलवार उसके हाथ से
गिरा दूँगा।
23 और मिस्रियों को क़ौमों में तितर बितर और मुमालिक में
तितर बितर करूँगा।
24 और मैं शाह — ए — बाबुल के बाज़ूओं को क़ुव्वत बख़्शूँगा
और अपनी तलवार उसके हाथ में दूँगा, लेकिन फ़िर'औन के
बाज़ूओं को तोड़ूँगा और वह उसके आगे, उस घायल की तरह जो
मरने पर ही आहें मारेगा।
25 हाँ शाह — ए — बाबुल के बाज़ूओं को सहारा दूँगा और
फ़िर'औन के बाज़ू गिर जायेंगे और जब मैं अपनी तलवार शाह
— ए — बाबुल के हाथ में दूँगा और वह उसको मुल्क — ए —
मिस्र पर चलाएगा, तो वह जानेंगे कि मैं ख़ुदावन्द हूँ।
26 और मैं मिस्रियों को क़ौमों में तितर बितर और ममलिक में
तितर — बितर कर दूँगा, और वह जानेंगे कि मैं ख़ुदावन्द हूँ।

31

1 फिर ग्यारहवें बरस के तीसरे महीने की पहली तारीख़ को,
ख़ुदावन्द का कलाम मुझ पर नाज़िल हुआ:
2 कि 'ऐ आदमज़ाद शाह — ए — मिस्र फ़िर'औन और उसके
लोगों से कह, तुम अपनी बुज़ुर्गी में किसकी तरह हो?
3 देख असूर लुबनान का बुलन्द देवदार था, जिसकी डालियाँ
ख़ूबसूरत थीं, और पत्तियों की कसरत से वह ख़ूब सायादार था
और उसका क़द बुलन्द था, और उसकी चोटी घनी शाख़ों के बीच
थी।
4 पानी ने उसकी परवरिश की, गहराव ने उसे बढ़ाया, उसकी
नहरें चारों तरफ़ जारी थीं, और उसने अपनी नालियों को मैदान
के सब दरख़्तों तक पहुँचाया।
5 इसलिए पानी की कसरत से उसका क़द मैदान के सब दरख़्तों
से बुलन्द हुआ, और जब वह लहलहाने लगा, तो उसकी शाख़ें
फ़िरावान और उसकी डालियाँ दराज़ हुई।
6 हवा के सब परिन्दे उसकी शाख़ों पर अपने घोंसले बनाते थे,
और उसकी डालियों के नीचे सब दश्ती हैवान बच्चे देते थे, और
सब बड़ी बड़ी क़ौमें उसके साये में बसती थीं।
7 यूँ वह अपनी बुज़ुर्गी में अपनी डलियों की दराज़ी की वजह
से ख़ुशनुमा था, क्यूँकि उसकी जड़ों के पास पानी की कसरत थी।
8 ख़ुदा के बाग़ के देवदार उसे छिपा न सके, सरो उसकी शाख़ों
और चिनार उसकी डालियों के बराबर न थे और ख़ुदा के बाग़ का
कोई दरख़्त ख़ूबसूरती में उसकी तरह न था।
9 मैंने उसकी डालियों की फ़िरावानी से उसे हुस्न बख़्शा, यहाँ
तक कि अदन के सब दरख़्तों को जो ख़ुदा के बाग़ में थे उस पर
रश्क आता था।
10 इसलिए ख़ुदावन्द ख़ुदा यूँ फ़रमाता है: कि चूँकि उसने
आपको बुलन्द और अपनी चोटी को घनी शाख़ों के बीच ऊँचा
किया, और उसके दिल में उसकी बूलन्दी पर ग़ुरूर समाया।
11 इसलिए मैं उसको क़ौमों में से एक उहदे दार के हवाले कर

दूँगा, यक़ीनन वह उसका फ़ैसला करेगा, मैंने उसे उसकी शरारत
की वजह से निकाल दिया।
12 और अजनबी लोग जो क़ौमों में से हैबतनाक हैं, उसे काट
डालेंगे और फेंक देंगे पहाड़ों और सब वादियों पर उसकी शाख़ें
गिर पड़ेगी, और ज़मीन की सब नहरों के आस — पास उसकी
डालियाँ तोड़ी जाएँगी, और इस ज़मीन के सब लोग उसके साये
से निकल जाएँगे और उसे छोड़ देंगे।
13 हवा के सब परिन्दे उसके टूटे तने में बसेंगे, और तमाम दश्ती
जानवर उसकी शाख़ों पर होंगे।
14 ताकि लब — ए — आब के सब बलूतों के दरख़्तों में से कोई
अपनी बुलन्दी पर मग़रूर न हो, और अपनी चोटी घनी शाख़ों
के बीच ऊँची न करे, और उनमें से बड़े बड़े और पानी जज़्ब करने
वाले सीधे खड़े न हों, क्यूँकि वह सबके सब मौत के हवाले किए
जाएँगे, या'नी ज़मीन के तह में बनी आदम के बीच जो पाताल में
उतरते हैं।
15 ख़ुदावन्द ख़ुदा यूँ फ़रमाता है: कि जिस रोज़ वह पाताल
में उतरे मैं मातम कराऊँगा, मैं उसकी वजह से गहराव को छिपा
दूँगा और उसकी नहरों को रोक दूँगा और बड़े सैलाब थम जाएँगे;
हाँ, मैं लुबनान को उसके लिए सियाह पोश कराऊँगा, और उसके
लिए मैदान के सब दरख़्त ग़शी में आएँगे।
16 जिस वक़्त मैं उसे उन सब के साथ जो गढ़े में गिरते हैं,
पाताल में डालूँगा, तो उसके गिरने के शोर से तमाम क़ौम लरज़ाँ
होंगी; और अदन के सब दरख़्त, लुबनान के चीदा और नफ़ीस,
वह सब जो पानी जज़्ब करते हैं ज़मीन के तह में तसल्ली पाएँगे।
17 वह भी उसके साथ उन तक, जो तलवार से मारे गए, पाताल
में उतर जाएँगे और वह भी जो उसके बाज़ू थे, और क़ौमों के बीच
उसके साये में बसते थे वहीं होंगे।
18 "तू शान — ओ — शौकत में अदन के दरख़्तों में से किसकी
तरह है? लेकिन तू अदन के दरख़्तों के साथ ज़मीन के तह में डाला

जाएगा, तू उनके साथ जो तलवार से क़त्ल हुए, नामख़्तूनों के
बीच पड़ा रहेगा; यही फ़िर'औन और उसके सब लोग हैं, ख़ुदावन्द
ख़ुदा फ़रमाता है।"

32

[illegible]

1 बारहवें बरस के बारहवें महीने की पहली तारीख़ को, ख़ुदावन्द
का कलाम मुझ पर नाज़िल हुआ:
2 कि 'ऐ आदमज़ाद, शाह — ए — मिस्र फ़िर'औन पर नोहा
उठा और उसे कह: "तू क़ौमों के बीच जवान शेर — ए — बबर की
तरह था, और तू दरियाओं के घड़ियाल जैसा है; तू अपनी नहरों
में से नागाह निकल आता है, तूने अपने पाँव से पानी को तह —
बाला किया और उनकी नहरों को गदला कर दिया।
3 ख़ुदावन्द ख़ुदा यूँ फ़रमाता है: कि मैं उम्मतों के गिरोह के
साथ तुझ पर अपना जाल डालूँगा और वह तुझे मेरे ही जाल में
बाहर निकालेंगे।
4 तब मैं तुझे ख़ुश्की में छोड़ दूँगा और खुले मैदान पर तुझे
फेकूँगा, और हवा के सब परिन्दों को तुझ पर बिठाऊँगा और
तमाम इस ज़मीन के दरिन्दों को तुझ से सेर करूँगा।
5 और तेरा गोश्त पहाड़ों पर डालूँगा, और वादियों को तेरी
बुलन्दी से भर दूँगा।
6 और मैं उस सरज़मीन को जिसे पानी में तू तैरता था, पहाड़ों
तक तेरे ख़ून से तर करूँगा और नहरें तुझ से लबरेज़ होंगी।
7 और जब मैं तुझे हलाक करूँगा, तो आसमान को तारीक और
उसके सितारों को बे — नूर करूँगा सूरज को बादल से छिपाऊँगा
और चाँद अपनी रोशनी न देगा।

8 और मैं तमाम नूरानी अजराम — ए — फ़लक को तुझपर
तारीक करूँगा और मेरी तरफ़ से तेरी ज़मीन पर तारीकी छा
जायेगी ख़ुदावन्द ख़ुदा फ़रमाता।
9 और जब मैं तेरी शिकस्ता हाली की ख़बर को क़ौमों के बीच
उन मुल्कों में जिनसे तू ना वाक़िफ़ है पहुँचाऊँगा तो उम्मतों का
दिल आज़ुर्दा करूँगा
10 बल्कि बहुत सी उम्मतों को तेरे हाल से हैरान करूँगा, और
उनके बादशाह तेरी वजह से सख़्त परेशान होंगे; जब मैं उनके
सामने अपनी तलवार चमकाऊँगा, तो उनमें से हर एक अपनी
जान की ख़ातिर तेरे गिरने के दिन हर दम थरथराएगा
11 क्यूँकि ख़ुदावन्द ख़ुदा यूँ फ़रमाता है: कि शाह — ए —
बाबुल की तलवार तुझ पर चलेगी।
12 मैं तेरी जमियत को ज़बरदस्तों की तलवार से, जो सब के
सब क़ौमों में हैबतनाक हैं हलाक करूँगा, वह मिस्र की शौकत को
ख़त्म और उसकी तमाम जमियत को मिटा देंगे।
13 और मैं उसके सब जानवरों को आब — ए — कसीर के पास
से हलाक करूँगा, और आगे को न इंसान के पाँव उसे गदला करेंगे
न हैवान के खुर।
14 तब मैं उनका पानी साफ़ कर दूँगा, और उनकी नदियाँ रौग़न
की तरह जारी होंगी, ख़ुदावन्द ख़ुदा फ़रमाता है।
15 जब मैं मुल्क — ए — मिस्र को वीरान और सूनसान करूँगा
और वह अपनी मा'मूरी से ख़ाली हो जाएगा, जब मैं उसके तमाम
बाशिन्दों को हलाक करूँगा तब वह जानेंगे कि ख़ुदावन्द मैं हूँ।
16 ये वह नोहा है जिससे उस पर मातम करेंगे क़ौमों की बेटियाँ
इससे मातम करेंगी वह मिस्र और उसकी तमाम जमियत पर इसी
से मातम करेंगी, ख़ुदावन्द ख़ुदा फ़रमाता है।"
17 फिर बारहवें बरस में महीने के पन्द्रहवें दिन, ख़ुदावन्द का
कलाम मुझ पर नाज़िल हुआ:

18 कि 'ऐ आदमज़ाद, मिस्र की जमियत पर वावैला कर, और
उसको और नामदार क़ौमों की बेटियों को पाताल में उतरने वालों
के साथ ज़मीन की तह में गिरा दे
19 तू हुस्न में किस से बढ़कर था? उतर और नामख़्तूनों के साथ
पड़ा रह।
20 वह उनके बीच गिरेंगे जो तलवार से क़त्ल हुए, वह तलवार
के हवाले किया गया है, उसे और उसकी तमाम जमियत को घसीट
ले जा।
21 वह जो उहदे दारों में सब से तवाना हैं, पाताल में उस से और
उसके मददगारों से मुख़ातिब होंगे:'वह पाताल में उतर गए, वह
बे हिस पड़े हैं, या'नी वह नामख़्तून जो तलवार से क़त्ल हुए।
22 असूर और उसकी तमाम जमियत वहाँ हैं उसकी चारों तरफ़
उनकी क़ब्रें हैं सब के सब तलवार से क़त्ल हुए हैं,
23 जिनकी क़ब्रें पाताल की तह में हैं और उसकी तमाम जमियत
उसकी क़ब्र के चारो तरफ़ है; सब के सब तलवार से क़त्ल हुए, जो
ज़िन्दों की ज़मीन में हैबत का ज़रि'अ थे।
24 'ऐलाम और उसकी तमाम गिरोह, जो उसकी क़ब्र के चारो
तरफ़ हैं वहाँ हैं; सब के सब तलवार से क़त्ल हुए हैं, वह ज़मीन
की तह में नामख़्तून उतर गए जो ज़िन्दों की ज़मीन में हैबत के
ज़रिए' थे, और उन्होंने पाताल में उतरने वालों के साथ ख़जालत
उठाई है।
25 उन्होंने उसके लिए और उसकी तमाम गिरोह के लिए
मक़्तूलों के बीच बिस्तर लगाया है, उसकी क़ब्रें उसके चारों तरफ़
हैं, सब के सब नामख़्तून तलवार से क़त्ल हुए हैं; वह ज़िन्दों की
ज़मीन में हैबत की वजह थे, और उन्होंने पाताल में उतरने वालों
के साथ रुस्वाई उठाई, वह मक़्तूलों में रख्खे गए।
26 मस्क और तूबल और उसकी तमाम ज'मिय्यत वहाँ हैं,
उसकी क़ब्रें उसके चारों तरफ़ हैं, सब के सब नामख़्तून और तलवार

के मक़्तूल हैं; अगरचे ज़िन्दों की ज़मीन में हैबत के ज़रिए' थे।
27 क्या वह उन बहादुरों के साथ जो नामख़्तूनों में से क़त्ल हुए,
जो अपने जंग के हथियारों के साथ पाताल में उतर गए पड़े न
रहेंगे? उनकी तलवारें उनके सिरों के नीचे रख्खी हैं, और उनकी
बदकिरदारी उनकी हड्डियों पर है; क्यूँकि वह ज़िन्दों की ज़मीन में
बहादुरों के लिए हैबत का ज़रि'अ थे।
28 और तू नामख़्तूनों के बीच तोड़ा जाएगा, और तलवार के
मक़्तूलों के साथ पड़ा रहेगा।
29 वहाँ अदोम भी है, उसके बादशाह और उसके सब 'उमरा जो
बावजूद अपनी कुव्वत के तलवार के मक़्तूलोंमें रख्खे गए हैं; वह
नामख़्तूनों और पाताल में उतरने वालों के साथ पड़े रहेंगे।
30 उत्तर के तमाम 'उमरा और तमाम सैदानी, जो मक़्तूलों के
साथ पाताल में उतर गए, बावजूद अपने रौब के अपनी ताक़तवरों
से शर्मिन्दा हुए; वह तलवार के मक़्तूलों के साथ नामख्तून पड़े
रहेंगे और पाताल में उतरने वालों के साथ रुसवाई उठायेंगे
31 फ़िर'औन उनको देख कर अपनी तमाम जमियत के ज़रिए'
तसल्ली पज़ीर होगा हाँ फ़िर'औन और तमाम लश्कर जो तलवार
से क़त्ल हुए, ख़ुदावन्द ख़ुदा फ़रमाता है।
32 क्यूँकि मैंने ज़िन्दों की ज़मीन में उसकी हैबत क़ाईम की और
वह तलवार के मक़्तूलों के साथ नामख़्तूनों में रख्खा जाएगा; हाँ,
फ़िर'औन और उसकी जमियत, ख़ुदावन्द ख़ुदा फ़रमाता है।

33

[illegible]

1 फिर ख़ुदावन्द का कलाम मुझ पर नाज़िल हुआ:
2 कि 'ऐआदमज़ाद, तू अपनी क़ौम के फ़र्ज़न्दों से मुख़ातिब हो
और उनसे कह, जिस वक़्त मैं किसी सरज़मीन पर तलवार चलाऊँ,

और उसके लोग अपने बहादुरों में से एक को लें और उसे अपना
निगहबान ठहराएँ।
3 और वह तलवार को अपनी सरज़मीन पर आते देख कर
नरसिंगा फूँके और लोगों को होशियार करे।
4 तब जो कोई नरसिंगे की आवाज़ सुने और होशियार न हो,
और तलवार आए और उसे क़त्ल करे, तो उसका ख़ून उसी की
गर्दन पर होगा।
5 उसने नरसिंगे की आवाज़ सुनी और होशियार न हुआ, उसका
ख़ून उसी पर होगा, हालाँकि अगर वह होशियार होता तो अपनी
जान बचाता।
6 लेकिन अगर निगहबान तलवार को आते देखे और नरसिंगा
न फूँके, और लोग होशियार न किए जाएँ, और तलवार आए और
उनके बीच से किसी को ले जाए, तो वह तो अपनी बदकिरदारी में
हलाक हुआ लेकिन मैं निगहबान से उसके ख़ून का सवाल — ओ
— जवाब करूँगा।
7 फ़िर तू ऐ आदमज़ाद, इसलिए कि मैंने तुझे बनी — इस्राईल
का निगहबान मुक़र्रर किया, मेरे मुँह का कलाम सुन रख और मेरी
तरफ़ से उनको होशियार कर।
8 जब मैं शरीर से कहूँ, ऐ शरीर, तू यक़ीनन मरेगा, उस वक़्त
अगर तू शरीर से न कहे और उसे उसके चाल चलन से आगाह न
करे, तो वह शरीर तो अपनी बदकिरदारी में मरेगा लेकिन मैं तुझ
से उसके ख़ून की सवाल — ओ — जवाब करूँगा।
9 लेकिन अगर तू उस शरीर को जताए कि वह अपनी चाल
चलन से बाज़ आए और वह अपनी चाल चलन से बाज़ न आए,
तो वह तो अपनी बदकिरदारी में मरेगा लेकिन तूने अपनी जान
बचा ली।
10 इसलिए ऐ आदमज़ाद, तू बनी इस्राईल से कह तुम यूँ कहते
हो कि हक़ीक़त में हमारी ख़ताएँ और हमारे गुनाह हम पर हैं और
हम उनमें घुलते रहते हैं पस हम क्यूँकर ज़िन्दा रहेंगे।

11 तू उनसे कह ख़ुदावन्द ख़ुदा फ़रमाता है, मुझे अपनी हयात
की क़सम शरीर के मरने में मुझे कुछ ख़ुशी नहीं बल्कि इसमें है कि
शरीर अपनी राह से बाज़ आए और ज़िन्दा रहे ऐ बनी इस्राईल
बाज़ आओ तुम अपनी बुरी चाल चलन से बाज़ आओ तुम क्यूँ
मरोगे।
12 "इसलिए ऐ आदमज़ाद, अपनी क़ौम के फ़र्ज़न्दों से यूँ कह,
कि सादिक़ की सदाक़त उसकी ख़ताकारी के दिन उसे न बचाएगी,
और शरीर की शरारत जब वह उससे बाज़ आए तो उसके गिरने
की वजह न होगी; और सादिक़ जब गुनाह करे तो अपनी सदाक़त
की वजह से ज़िन्दा न रह सकेगा।
13 जब मैं सादिक़ से कहूँ कि तू यक़ीनन ज़िन्दा रहेगा, अगर
वह अपनी सदाक़त पर भरोसा करके बदकिरदारी करे तो उसकी
सदाक़त के काम फ़रामोश हो जाएँगे, और वह उस बदकिरदारी
की वजह से जो उसने की है मरेगा।
14 और जब शरीर से कहूँ, तू यक़ीनन मरेगा, अगर वह अपने
गुनाह से बाज़ आए और वही करे जायज़ — ओ — रवा है।
15 अगर वह शरीर गिरवी वापस कर दे और जो उसने लूट लिया
है वापस दे दे, और ज़िन्दगी के क़ानून पर चले और नारास्ती न
करे, तो वह यक़ीनन ज़िन्दा रहेगा वह नहीं मरेगा।
16 जो गुनाह उसने किए हैं उसके ख़िलाफ़ महसूब न होंगे, उसने
वही किया जो जायज़ — ओ — रवा है, वह यक़ीनन ज़िन्दा
रहेगा।
17 'लेकिन तेरी क़ौम के फ़र्ज़न्द कहते हैं, कि ख़ुदावन्द के चाल
चलन रास्त नहीं, हालाँकि ख़ुद उन ही के चाल चलन नारास्त है।
18 अगर सादिक़ अपनी सदाक़त छोड़कर बदकिरदारी करे, तो
वह यक़ीनन उसी की वजह से मरेगा।
19 और अगर शरीर अपनी शरारत से बाज़ आए और वही करे
जो जायज़ — ओ — रवा है, तो उसकी वजह से ज़िन्दा रहेगा।

20 फिर भी तुम कहते हो कि ख़ुदावन्द के चाल चलन रास्त
नहीं है। ऐ बनी — इस्राईल मैं तुम में से हर एक की चाल चलन
के मुताबिक़ तुम्हारी 'अदालत करूँगा।"
21 हमारी ग़ुलामी के बारहवें बरस के दसवें महीने की पाँचवीं
तारीख़ को, यूँ हुआ कि एक शख़्स जो येरूशलेम से भाग निकला
था, मेरे पास आया और कहने लगा, कि "शहर मुसख़र हो गया।"
22 और शाम के वक़्त उस भगोड़े के पहुँचने से पहले ख़ुदावन्द
का हाथ मुझ पर था; और उसने मेरा मुँह खोल दिया। उसने सुबह
को उसके मेरे पास आने से पहले मेरा मुँह खोल दिया और मैं फिर
गूंगा न रहा।
23 तब ख़ुदावन्द का कलाम मुझ पर नाज़िल हुआ:
24 कि 'ऐ आदमज़ाद, मुल्क — ए — इस्राईल के वीरानों के
बाशिन्दे यूँ कहते हैं, कि अब्रहाम एक ही था और वह इस मुल्क
का वारिस हुआ, लेकिन हम तो बहुत से हैं; मुल्क हम को मीरास
में दिया गया है।
25 इसलिए तू उनसे कह दे, ख़ुदावन्द ख़ुदा यूँ फ़रमाता है: कि
तुम ख़ून के साथ खाते और अपने बुतों की तरफ़ आँख उठाते हो
और ख़ूँरेज़ी करते हो क्या तुम मुल्क के वारिस होगे?
26 तुम अपनी तलवार पर भरोसा करते हो, तुम मकरूह काम
करते हो और तुम में से हर एक अपने पड़ोसी की बीवी को नापाक
करता है; क्या तुम मुल्क के वारिस होगे?
27 तू उनसे यूँ कहना, कि ख़ुदावन्द ख़ुदा यूँ फ़रमाता है: कि
मुझे अपनी हयात की क़सम वह जो वीरानों में हैं, तलवार से
क़त्ल होंगे; और उसे जो खुले मैदान में हैं, दरिन्दों को दूँगा कि
निगल जाएँ; और वह जो किलों' और गारों में हैं, वबा से मरेंगे।
28 क्यूँकि मैं इस मुल्क को उजाड़ा और हैरत का ज़रि'अ
बनाऊँगा, और इसकी ताक़त का ग़ुरूर जाता रहेगा, और इस्राईल
के पहाड़ वीरान होंगे यहाँ तक कि कोई उन पर से गुज़र नहीं

करेगा।

29 और जब मैं उनके तमाम मकरूह कामों की वजह से जो
उन्होंने किए हैं, मुल्क को वीरान और हैरत का ज़रि'अ बनाऊँगा,
तो वह जानेंगे कि मैं ख़ुदावन्द हूँ।

30 'लेकिन ऐ आदमज़ाद, फ़िलहाल तेरी कौम के फ़र्ज़न्द
दीवारों के पास और घरों के आस्तानों पर तेरे ज़रिए' गुफ़्तगू करते
हैं, और एक दूसरे से कहते हैं, हाँ, हर एक अपने भाई से यूँ कहता
है, 'चलो, वह कलाम सुनें जो ख़ुदावन्द की तरफ़ से नाज़िल हुआ
है।

31 वह उम्मत की तरह तेरे पास आते और मेरे लोगों की तरह
तेरे आगे बैठते और तेरी बातें सुनते हैं, लेकिन उन लेकिन 'अमल
नहीं करते; क्यूँकि वह अपने मुँह से तो बहुत मुहब्बत ज़ाहिर करते
हैं, पर उनका दिल लालच पर दौड़ता है।

32 और देख, तू उनके लिए बहुत मरग़ूब सरोदी की तरह है, जो
ख़ुश इल्हान और माहिर साज़ बजाने वाला हो, क्यूँकि वह तेरी
बातें सुनते हैं लेकिन उन पर 'अमल नहीं करते।

33 और जब यह बातें वजूद में आएँगी देख, वह जल्द वजूद में
आने वाली हैं, तब वह जानेंगे कि उनके बीच एक नबी था।

34

[illegible]

1 और ख़ुदावन्द का कलाम उसपर नाज़िल हुआ।

2 कि 'ऐ आदमज़ाद, इस्राईल के चरवाहों के ख़िलाफ़ नबुव्वत
कर, हाँ नबुव्वत कर और उनसे कह ख़ुदावन्द ख़ुदा, चरवाहों को यूँ
फ़रमाता है: कि इस्राईल के चरवाहों पर अफ़सोस, जो अपना ही
पेट भरते हैं! क्या चरवाहों को मुनासिब नहीं कि भेड़ों को चराएँ?

3 तुम चिकनाई खाते और ऊन पहनते हो और जो मोटे हैं उनको
ज़बह करते हो, लेकिन गल्ला नहीं चराते।

4 तुम ने कमज़ोरों को तवानाई और बीमारों की शिफ़ा नहीं
दी और टूटे हुए को नहीं बाँधा, और वह जो निकाल दिए गए
उनको वापस नहीं लाए और गुमशुदा की तलाश नहीं की, बल्कि
ज़बरदस्ती और सख़्ती से उन पर हुकूमत की।
5 और वह तितर — बितर हो गए क्यूँकि कोई पासबान न था,
और वह तितर बितर होकर मैदान के सब दरिन्दों की ख़ुराक हुए।
6 मेरी भेड़े तमाम पहाड़ों पर और हर एक ऊँचे टीले पर भटकती
फिरती थीं; हाँ, मेरी भेड़े तमाम इस ज़मीन पर तितर — बितर
हो गई और किसी ने न उनको ढूँढा न उनकी तलाश की।
7 इसलिए ऐ पासबानो, ख़ुदावन्द का कलाम सुनो:
8 ख़ुदावन्द ख़ुदा फ़रमाता है, मुझे अपनी हयात की क़सम चूँकि
मेरी भेंड़े शिकार हो गई; हाँ, मेरी भेड़े हर एक जंगली दरिन्दे की
ख़ुराक हुई, क्यूँकि कोई पासबान न था और मेरे पासबानों ने मेरी
भेड़ों की तलाश न की, बल्कि उन्होंने अपना पेट भरा और मेरी
भेड़ों को न चराया।
9 इसलिए ऐ पासबानो, ख़ुदावन्द का कलाम सुनो
10 ख़ुदावन्द ख़ुदा यूँ फ़रमाता है: कि देख, मैं चरवाहों का
मुख़ालिफ़ हूँ और अपना गल्ला उनके हाथ से तलब करूँगा और
उनको गल्लेबानी से माज़ूल करूँगा, और चरवाहे आइंदा को
अपना पेट न भर सकेंगे क्यूँकि मैं अपना गल्ला उनके मुँह से छुड़ा
लूँगा, ताकि वह उनकी ख़ुराक न हो।
11 क्यूँकि ख़ुदावन्द ख़ुदा फ़रमाता है: देख, मैं ख़ुद अपनी भेड़ों
की तलाश करूँगा और उनको ढूँढ निकालूगा।
12 जिस तरह चरवाहा अपने गल्ले की तलाश करता है, जबकि
वह अपनी भेड़ों के बीच हो जो तितर बितर हो गई हैं; उसी तरह
मैं अपनी भेड़ों को ढूँढूँगा, और उनको हर जगह से जहाँ वह बादल
तारीकी के दिन तितर बितर हो गई हैं छुड़ा लाऊँगा।
13 और मैं उनको सब उम्मतों के बीच से वापस लाऊँगा, और

सब मुल्कों में से जमा' करूँगा और उन ही के मुल्क में पहुचाऊँगा,
और इस्राईल के पहाड़ों पर नहरों के किनारे और ज़मीन के तमाम
आबाद मकानों में चराऊँगा।
14 और उनको अच्छी चरागाह में चराऊँगा और उनकी
आरामगाह इस्राईल के ऊँचे पहाड़ों पर होगी, वहाँ वह 'उम्दा
आरामगाह में लेटेंगी और हरी चराहगाह में इस्राईल के पहाड़ों
पर चरेंगी।
15 मैं ही अपने गल्ले को चराऊँगा और उनको लिटाऊँगा
ख़ुदावन्द ख़ुदा फ़रमाता है।
16 मैं गुमशुदा की तलाश करूँगा और ख़ारिज शुदा को वापस
लाऊँगा और शिकस्ता को बाधूँगा और बीमारों को तक़वियत
दूँगा, लेकिन मोटों और ज़बरदस्तों को हलाक करूँगा, मैं उनकी
सियासत का खाना खिलाऊँगा।
17 और तुम्हारे हक़ में ख़ुदावन्द ख़ुदा यूँ फ़रमाता है: ऐ
मेरी भेड़ो, देखो, मैं भेड़ बकरियों और मेंढों और बकरों के बीच
इम्तियाज़ करके इन्साफ़ करूँगा।
18 क्या तुम को यह हल्की सी बात मा'लूम हुई कि तुम अच्छा
सब्ज़ाज़ार खाजाओ और बाक़ी मान्दा को पाँवों से लताड़ो, और
साफ़ पानी में से पिओ और बाक़ी मान्दा को पाँवों से गंदला करो?
19 और जो तुम ने पाँव से लताड़ा है वह मेरी भेड़ें खाती हैं, और
जो तुम ने पाँव से गंदला किया पीती हैं।
20 'इसलिए ख़ुदावन्द ख़ुदा उनको यूँ फ़रमाता है: देखो, मैं हाँ
मैं, मोटी और दुबली भेड़ों के बीच इन्साफ़ करूँगा।
21 क्यूँकि तुम ने पहलू और कन्धे से धकेला है और तमाम
बीमारों को अपने सींगों से रेला है, यहाँ तक कि वह तितर —
बितर हुए।
22 इसलिए मैं अपने गल्ले को बचाऊँगा, वह फिर कभी शिकार
न होंगे और मैं भेड़ बकरियों के बीच इन्साफ़ करूँगा।
23 और मैं उनके लिए एक चौपान मुक़र्रर करूँगा और वह उनको

चराएगा, या'नी मेरा बन्दा दाऊद, वह उनको चराएगा और वही उनका चौपान होगा।

24 और मैं ख़ुदावन्द उनका ख़ुदा हूँगा और मेरा बन्दा दाऊद उनके बीच फ़रमारवा होगा, मैं ख़ुदावन्द ने यूँ फ़रमाया है।

25 मैं उनके साथ सुलह का 'अह्द बाधूँगा और सब बुरे दरिन्दों को मुल्क से हलाक करूँगा, और वह वीरान में सलामती से रहा करेंगे और जंगलों में सोएँगे।

26 और मैं उनको और उन जगहों को जो मेरे पहाड़ के आसपास हैं, बरकत का ज़रि'अ बनाऊँगा; और मैं वक़्त पर मेंह बरसाऊँगा, बरकत की बारिश होगी।

27 और मैदान के दरख़्त अपना मेवा देंगे और ज़मीन अपनी पैदावार देगी, और वह सलामती के साथ अपने मुल्क में बसेंगे और जब मैं उनके जुए का बन्धन तोड़ूँगा और उनके हाथ से जो उनसे ख़िदमत करवाते हैं छुड़ाऊँगा, तो वह जानेंगे कि मैं ख़ुदावन्द हूँ।

28 और वह आगे को क़ौमों का शिकार न होंगे और ज़मीन के दरिन्दे उनको निगल न सकेंगे, बल्कि वह अम्न से बसेंगे और उनको कोई न डराएगा।

29 और मैं उनके लिए एक नामवर पौदा खड़ा करूँगा, और वह फिर कभी अपने मुल्क में सूखे से हलाक न होंगे और आगे को क़ौमों का ताना न उठाएँगे।

30 और वह जानेंगे कि मैं ख़ुदावन्द उनका ख़ुदा उनके साथ हूँ, और वह या'नी बनी — इस्राईल मेरे लोग हैं, ख़ुदावन्द ख़ुदा फ़रमाता है।

31 और तुम ऐ मेरे भेंड़ो मेरी चरागाह की भेड़ो इंसान हो और मैं तुम्हारा ख़ुदा हूँ फ़रमाता है ख़ुदावन्द ख़ुदा फ़रमाता है।

35

[illegible]

1 और ख़ुदावन्द का कलाम मुझ पर नाज़िल हुआ
2 कि 'ऐ आदमज़ाद, कोह — ए — श'ईर की तरफ़ मुतवज्जिह
हो और उसके ख़िलाफ़ नबुव्वत कर,
3 और उससे कह, ख़ुदावन्द ख़ुदा यूँ फ़रमाता है: कि देख, ऐ
कोह — ए — श'ईर, मैं तेरा मुख़ालिफ़ हूँ और तुझ पर अपना
हाथ चलाऊँगा, और तुझे वीरान और बेचराग़ करूँगा।
4 मैं तेरे शहरों को उजाड़ूँगा, और तू वीरान होगा और जानेगा
कि ख़ुदावन्द मैं हूँ।
5 चूँकि तू पहले से 'अदावत रखता है, और तूने बनी —
इस्राईल को उनकी मुसीबत के दिन उनकी बदकिरदारी के आख़िर
में तलवार की धार के हवाले किया है।
6 इसलिए ख़ुदावन्द ख़ुदा फ़रमाता है: कि मुझे अपनी हयात
की क़सम, मैं तुझे ख़ून के लिए हवाले करूँगा और ख़ून तुझे
दौड़ाएगा; चूँकि तूने ख़ूँरेज़ी से नफ़रत न रख्खी, इसलिए ख़ून
तेरा पीछा करेगा।
7 यूँ मैं कोह — ए — श'ईर को वीरान और बेचराग़ करूँगा, और
उसमें से गुज़रने वाले और वापस आने वाले को हलाक करूँगा।
8 और उसके पहाड़ों को उसके मक़्तूलों से भर दूँगा, तलवार के
मक़्तूल तेरे टीलों और तेरी वादियों और तेरी तमाम नदियों में
गिरेंगे।
9 मैं तुझे हमेशा तक वीरान रख्खूँगा और तेरी बस्तियाँ फिर
आबाद न होंगी, और तुम जानोगे कि मैं ख़ुदावन्द हूँ।
10 चूँकि तूने कहा, कि 'यह दो क़ौमें और यह दो मुल्क मेरे होंगे,
और हम उनके मालिक होंगे, बावजूद यह कि ख़ुदावन्द वहाँ था।
11 इसलिए ख़ुदावन्द ख़ुदा फ़रमाता है, मुझे अपनी हयात
की क़सम, मैं तेरे क़हर और हसद के मुताबिक़, जो तूने अपनी
कीनावरी से उनके ख़िलाफ़ ज़ाहिर किया, तुझ से सुलूक करूँगा

और जब मैं तुझ पर फ़तवा दूँगा तो उनके बीच मशहूर हूँगा।
12 और तू जानेगा कि मैं ख़ुदावन्द ने तेरी तमाम हिक़ारत की
बातें, जो तूने इस्राईल के पहाड़ों की मुख़ालिफ़त में कहीं, कि 'वह
वीरान हुए, और हमारे क़ब्ज़े में कर दिए गए कि हम उनको निगल
जाएँ,' सुनी हैं।
13 इसी तरह तुम ने मेरे ख़िलाफ़ अपनी ज़बान से लाफ़ज़नी
की और मेरे सामने बकवास की है, जो मैं सुन चुका हूँ।
14 ख़ुदावन्द ख़ुदा यूँ फ़रमाता है: कि जब तमाम दुनिया ख़ुशी
करेगी, मैं तुझे वीरान करूँगा।
15 जिस तरह तूने बनी इस्राईल की मीरास पर, इसलिए कि
वह वीरान थी, ख़ुशी की उसी तरह मैं भी तुझ से करूँगा, ऐ कोह
— ए — श'ईर, तू और तमाम अदोम बिल्कुल वीरान होंगे, और
लोग जानेंगे कि मैं ख़ुदावन्द हूँ।

36

[illegible]

1 कि 'ऐ आदमज़ाद! इस्राईल के पहाड़ों से नबुव्वत कर और
कह, ऐ इस्राईल के पहाड़ो, ख़ुदावन्द का कलाम सुनो।
2 ख़ुदावन्द ख़ुदा यूँ फ़रमाता है: कि चूँकि दुश्मन ने तुम पर,
'अहा हा!' कहा और यह कि, 'वह ऊँचे ऊँचे पुराने मक़ाम हमारे
ही हो गए।
3 इसलिए नबुव्वत कर और कह, ख़ुदावन्द ख़ुदा यूँ फ़रमाता
है: कि इस वजह से, हाँ, इसी वजह से कि उन्होंने तुम को वीरान
किया और हर तरफ़ से तुम को निगल गए, ताकि जो क़ौमों में
से बाक़ी हैं तुम्हारे मालिक हों और तुम्हारे हक़ में बकवासियों ने
ज़बान खोली है, और तुम लोगों में बदनाम हुए हो।
4 इसलिए ऐ इस्राईल के पहाड़ो, ख़ुदावन्द ख़ुदा का कलाम
सुनो, ख़ुदावन्द ख़ुदा पहाड़ों और टीलों नालों और वादियों और

उजाड़ वीरानों से और मत्रूक शहरों से जो आसपास की क़ौमों के
बाक़ी लोगों के लिए लूट और मज़ाक़ की जगह हुए हैं, यूँ फ़रमाता
है।
5 हाँ, इसी लिए ख़ुदावन्द ख़ुदा यूँ फ़रमाता है: कि यक़ीनन
मैंने क़ौम के बाक़ी लोगों का और तमाम अदोम का मुख़ालिफ़
होकर जिन्होंने अपने पूरे दिल की ख़ुशी से और क़ल्बी 'अदावत
से अपने आपको मेरी सर — ज़मीन के मालिक ठहराया ताकि
उनके लिए ग़नीमत हो, अपनी ग़ैरत के जोश में फ़रमाया है।
6 इसलिए तू इस्राईल के मुल्क के बारे में नबुव्वत कर और
पहाड़ों और टीलों और नालों और वादियों से कह, ख़ुदावन्द ख़ुदा
यूँ फ़रमाता है: कि देखो, मैंने अपनी ग़ैरत और अपने क़हर में
कलाम किया, कि इसलिए कि तुम ने क़ौमों की मलामत उठाई
है।
7 तब ख़ुदावन्द ख़ुदा यूँ फ़रमाता है: कि मैंने क़सम खाई है कि
यक़ीनन तुम्हारे आसपास की क़ौम ख़ुद ही मलामत उठाएँगीं।
8 “लेकिन तुम ऐ इस्राईल के पहाड़ों, अपनी शाख़ें निकालोगे
और मेरी उम्मत इस्राईल के लिए फल लाओगे, क्यूँकि वह जल्द
आने वाले हैं।
9 इसलिए देखो, मैं तुम्हारी तरफ़ हूँ और तुम पर तवज्जुह
करूँगा, और तुम जोते और बोए जाओगे;
10 और मैं आदमियों को, हाँ, इस्राईल के तमाम घराने को, तुम
पर बहुत बढ़ाऊँगा और शहर आबाद होंगे और खंडर फिर ता'मीर
किए जाएँगे।
11 और मैं तुम पर इंसान — ओ — हैवान की फ़िरावानी
करूँगाऔर वह बहुत होंगे, और फैलेंगे और मैं तुम को ऐसे आबाद
करूँगा जैसे तुम पहले थे, और तुम पर तुम्हारी शुरू' के दिनों से
ज़्यादा एहसान करूँगा, और तुम जानोगे कि मैं ख़ुदावन्द हूँ।
12 हाँ, मैं ऐसा करूँगा कि आदमी या'नी मेरे इस्राईली लोग

तुम पर चलें फिरेंगे, और तुम्हारे मालिक होंगे और तुम उनकी
मीरास होगे और फिर उनको बेऔलाद न करोगे।
13 ख़ुदावन्द ख़ुदा यूँ फ़रमाता है: कि चूँकि वह तुझ से कहते
हैं, 'ऐ ज़मीन, तू इंसान को निगलती है और तूने अपनी क़ौमों को
बेऔलाद किया।
14 इसलिए आइन्दा न तू इंसान को निगलेगी न अपनी क़ौमों
को बेऔलाद करेगी, ख़ुदावन्द ख़ुदा फ़रमाता है।
15 और मैं ऐसा करूँगा कि लोग तुझ पर कभी दीगर क़ौम
का ता'ना न सुनेंगे, और तू क़ौमों की मलामत न उठाएगी और
फिर अपने लोगों की ग़लती का ज़रि'अ न होगी, ख़ुदावन्द ख़ुदा
फ़रमाता है।"
16 और ख़ुदावन्द का कलाम मुझ पर नाज़िल हुआ:
17 कि 'ऐ आदमज़ाद, जब बनी इस्राईल अपने मुल्क में बसते थे
उन्होंने अपनी चाल चलन और अपने 'आमाल से उसको नापाक
किया उनके चाल चलन मेरे नज़दीक 'औरत की नापाकी की
हालत की तरह थी।
18 इसलिए मैंने उस ख़ूँरेज़ी की वजह से जो उन्होंने उस मुल्क
में की थी, और उन बुतों की वजह से जिनसे उन्होंने उसे नापाक
किया था, अपना क़हर उन पर नाज़िल किया।
19 और मैंने उनको क़ौमों में तितर बितर किया, और वह मुल्कों
में तितर — बितर हो गए, और उनके चाल चलन और उनके
'आमाल के मुताबिक़ मैंने उनकी 'अदालत की।
20 और जब वह दीगर क़ौमों के बीच जहाँ — जहाँ वह गए थे
पहुँचे, तो उन्होंने मेरे मुक़द्दस नाम को नापाक किया, क्यूँकि लोग
उनकी बारे में कहते थे, 'यह ख़ुदावन्द के लोग हैं, और उसके मुल्क
से निकल आए हैं।
21 लेकिन मुझे अपने पाक नाम पर, जिसको बनी — इस्राईल
ने उन क़ौमों के बीच जहाँ वह गए थे नापाक किया, अफ़सोस
हुआ।

22 इसलिए तू बनी — इस्राईल से कह दे, कि ख़ुदावन्द ख़ुदा
यूँ फ़रमाता है: ऐ बनी इस्राईल तुम्हारी ख़ातिर नहीं बल्कि अपने
पाक नाम की ख़ातिर, जिसको तुम ने उन क़ौमों के बीच जहाँ तुम
गए थे नापाक किया, यह करता हूँ।
23 मैं अपने बुज़ुर्ग़ नाम की, जो क़ौमों के बीच नापाक किया
गया, जिसको तुम ने उनके बीच नापाक किया था तक़दीस करूँगा
और जब उनकी आँखों के सामने तुम से मेरी तक़दीस होगी तब
वह क़ौमें जानेंगी कि मैं ख़ुदावन्द हूँ, ख़ुदावन्द ख़ुदा फ़रमाता है।
24 क्यूँकि मैं तुम को उन क़ौमों में से निकाल लूँगा और तमाम
मुल्कों में से जमा' करूँगा, और तुम को तुम्हारे वतन में वापस
लाऊँगा।
25 तब तुम पर साफ़ पानी छिड़कूँगा और तुम पाक साफ़ होगे,
और मैं तुम को तुम्हारी तमाम गन्दगी से और तुम्हारे सब बुतों से
पाक करूँगा।
26 और मैं तुम को नया दिल बख़्शूँगा और नई रूह तुम्हारे
बातिन में डालूँगा, और तुम्हारे जिस्म में से शख़्त दिल को निकाल
डालूँगा और गोश्त का दिल तुम को 'इनायत करूँगा।
27 और मैं अपनी रूह तुम्हारे बातिन में डालूँगा, और तुम
सेअपने क़ानून की पैरवी कराऊँगा और तुम मेरे हुक्मों पर 'अमल
करोगे और उनको बजा लाओगे।
28 तुम उस मुल्क में जो मैंने तुम्हारे बाप — दादा को दिया
सुकूनत करोगे, और तुम मेरे लोग होगे और मैं तुम्हारा ख़ुदा हूँगा।
29 और मैं तुम को तुम्हारी तमाम नापाकी से छुड़ाऊँगा और
अनाज मंगवाऊँगा और इफ़रात बख़्शूँगा और तुम पर सूखा न
भेजूँगा।
30 और मैं दरख़्त के फलों में और खेत के हासिल में अफ़ज़ाइश
बख़्शूँगा, यहाँ तक कि तुम आइंदा को क़ौमों के बीच क़हत की
वजह से मलामत न उठाओगे।

31 तब तुम अपनी बुरी चाल चलन और बद'आमाली को याद
करोगे और अपनी बदकिरदारी व मकरूहात की वजह से अपनी
नज़र में घिनौने ठहरोगे।
32 मैं यह तुम्हारी ख़ातिर नहीं करता हूँ, ख़ुदावन्द ख़ुदा
फ़रमाता है, यह तुम को याद रहे। तुम अपनी राहों की वजह
से ख़िजालत उठाओ और शर्मिन्दा हो, ऐ बनी इस्राईल।
33 ख़ुदावन्द ख़ुदा यूँ फ़रमाता है: जिस दिन मैं तुम को तुम्हारी
तमाम बदकिरदारी से पाक करूँगा, उसी दिन तुम को तुम्हारे
शहरों में बसाऊँगा और तुम्हारे खण्डर ता'मीर हो जाएँगे।
34 और वह वीरान ज़मीन जो तमाम राह गुज़रों की नज़र में
वीरान पड़ी थी जोती जाएगी।
35 और वह कहेंगे, कि 'ये सरज़मीन जो ख़राब पड़ी थी, बाग —
ए — 'अदन की तरह हो गई, और उजाड़ और वीरान और ख़राब
शहर मुहकम और आबाद हो गए।
36 तब वह क़ौमें जो तुम्हारे आसपास बाक़ी हैं, जानेंगी कि
मैं ख़ुदावन्द ने उजाड़ मकानों को ता'मीर किया है और वीराने
को बाग़ बनाया है; मैं ख़ुदावन्द ने फ़रमाया है और मैं ही कर
दिखाऊँगा।
37 "ख़ुदावन्द ख़ुदा यूँ फ़रमाता है: कि बनी — इस्राईल मुझ
से यह दरख़्वास्त भी कर सकेंगे, और मैं उनके लिए ऐसा करूँगा
कि उनके लोगों को भेड़ — बकरियों की तरह फ़िरावान करूँ।
38 जैसा पाक गल्ला था और जिस तरह येरूशलेम का गल्ला
उसकी मुक़र्ररा 'ईदों में था, उसी तरह उजाड़ शहर आदमियों के
ग़ोलों से मा'मूर होंगे, और वह जानेंगे कि मैं ख़ुदावन्द हूँ।"

37

1 ख़ुदावन्द का हाथ मुझ पर था, और उसने मुझे अपनी रूह
में उठा लिया और उस वादी में जो हड्डियों से पुर थी, मुझे उतार
दिया।
2 और मुझे उनके आसपास चारों तरफ़ फिराया, और देख, वह
वादी के मैदान में ब — कसरत और बहुत सूखी थीं।
3 और उसने मुझे फ़रमाया, कि 'ऐ आदमज़ाद, क्या यह हड्डियाँ
ज़िन्दा हो सकती हैं मेंने जवाब दिया, कि 'ऐ ख़ुदावन्द ख़ुदा, तू
ही जानता है।
4 फिर उसने मुझे फ़रमाया, तू इन हड्डियों पर नबुव्वत कर और
इनसे कह, ऐ सूखी हड्डियों, ख़ुदावन्द का कलाम सुनो।
5 ख़ुदावन्द ख़ुदा इन हड्डियों को यूँ फ़रमाता है: कि मैं तुम्हारे
अन्दर रूह डालूँगा और तुम ज़िन्दा हो जाओगी।
6 और तुम पर नसें फैलाऊँगा और गोश्त चढ़ाऊँगा, और तुम
को चमड़ा पहनाऊँगा और तुम में दम फूकूँगा, और तुम ज़िन्दा
होगी और जानोगी कि मैं ख़ुदावन्द हूँ।
7 तब मैंने हुक्म के मुताबिक़ नबुव्वत की, और जब मैं नबुव्वत
कर रहा था तो एक शोर हुआ, और देख, ज़लज़ला आया और
हड्डियाँ आपस में मिल गई, हर एक हड्डी अपनी हड्डी से।
8 और मैंने निगाह की तो क्या देखता हूँ कि नसें और गोश्त उन
पर चढ़ आए, और उन पर चमड़े की पोशिश हो गई, लेकिन उनमें
दम न था।
9 तब उसने मुझे फ़रमाया, नबुव्वत कर, तू हवा से नबुव्वत कर
ऐ आदमज़ाद, और हवा से कह, ख़ुदावन्द ख़ुदा यूँ फ़रमाता है: कि
ऐ दम, तू चारों तरफ़ से आ और इन मक़्तूलों पर फूँक कि ज़िन्दा
हो जाएँ।
10 इसलिए मैंने हुक्म के मुताबिक़ नबुव्वत की और उनमें दम
आया, और वह ज़िन्दा होकर अपने पाँव पर खड़ी हुई; एक बहुत
बड़ा लश्कर!

11 तब उसने मुझे फ़रमाया, कि 'ऐ आदमज़ाद, यह हड्डियाँ
तमाम बनी — इस्राईल हैं; देख, यह कहते हैं, 'हमारी हड्डियाँ
सूख गई और हमारी उम्मीद जाती रही, हम तो बिल्कुल फ़ना हो
गए।
12 इसलिए तू नबुव्वत कर और इनसे कह ख़ुदावन्द ख़ुदा यूँ
फ़रमाता है कि ऐ मेरे लोगो, देखो मैं तुम्हारी क़ब्रों को खोलूँगा
और तुम को उनसे बाहर निकालूँगा और इस्राईल के मुल्क में
लाऊँगा।
13 और ऐ मेरे लोगों जब मैं तुम्हारी क़ब्रों को खोलूँगा और तुम
को उनसे बाहर निकालूँगा, तब तुम जानोगे कि ख़ुदावन्द मैं हूँ।
14 और मैं अपनी रूह तुम में डालूँगा और तुम ज़िन्दा हो
जाओगे, और मैं तुम को तुम्हारे मुल्क में बसाऊँगा, तब तुम
जानोगे कि मैं ख़ुदावन्द ने फ़रमाया और पूरा किया, ख़ुदावन्द
फ़रमाता है।
15 फिर ख़ुदा वन्द का कलाम मुझ पर नाज़िल हुआ:
16 कि 'ऐ आदमज़ाद, एक छड़ी ले और उस पर लिख, 'यहूदाह
और उसके रफ़ीक़ बनी — इस्राईल के लिए; फिर दूसरी छड़ी ले
और उस पर यह लिख, 'इफ़्राईम की छड़ी यूसुफ़ और उसके रफ़ीक़
तमाम बनी इस्राईल के लिए।
17 और उन दोनों को जोड़ दे कि एक ही छड़ी तेरे लिए हों, और
वह तेरे हाथ में एक होंगी।
18 और जब तेरी क़ौम के लोग तुझ से पूछें और कहें, कि “इन
कामों से तेरा क्या मतलब है? क्या तू हमें नहीं बताएगा?”
19 तो तू उनसे कहना, कि ख़ुदावन्द ख़ुदा यूँ फ़रमाता है: कि
देख, मैं यूसुफ़ की छड़ी को जो इफ़्राईम के हाथ में है, और उसके
रफ़ीकों को जो इस्राईल के क़बीले हैं, लूँगा और यहूदाह की छड़ी
के साथ जोड़ दूँगा और उनको एक ही छड़ी बना दूँगा और वह
मेरे हाथ में एक होंगी।

20 और वह छड़ियाँ जिन पर तू लिखता है, उनकी आँखों के
सामने तेरे हाथ में होंगी।
21 और तू उनसे कहना, कि ख़ुदावन्द ख़ुदा यूँ फ़रमाता है: कि
मैं बनी इस्राईल को क़ौमों के बीच से जहाँ जहाँ वह गए हैं निकाल
लाऊँगा और हर तरफ़ से उनको इकट्ठा करूँगा और उनको उनके
मुल्क में लाऊँगा।
22 और मैं उनको उस मुल्क में इस्राईल के पहाड़ों पर एक ही
क़ौम बनाऊँगा, और उन सब पर एक ही बादशाह होगा, और वह
आगे को न दो क़ौमें होंगे और न दो मम्लकतों में तक़सीम किए
जाएँगे।
23 और वह फिर अपने बुतों से और अपनी नफ़रत अन्गेज़
चीज़ों से और अपनी ख़ताकारी से, अपने आपको नापाक न करेंगे
बल्कि मैं उनको उनके तमाम घरों से, जहाँ उन्होंने गुनाह किया है,
छुड़ाऊँगा और उनको पाक करूँगा और वह मेरे लोग होंगे और
मैं उनका ख़ुदा हूँगा।
24 'और मेरा बन्दा दाऊद उनका बादशाह होगा और उन
सबका एक ही चरवाहा होगा, और वह मेरे हुक्मों पर चलेंगे और
मेरे क़ानून को मानकर उन पर 'अमल करेंगे।
25 और वह उस मुल्क में जो मैंने अपने बन्दा या'क़ूब को दिया
जिसमें तुम्हारे बाप दादा बसते थे, बसेंगे और वह और उनकी
औलाद और उनकी औलाद की औलाद हमेशा तक उसमें सुकूनत
करेंगे और मेरा बन्दा दाऊद हमेशा के लिए उनका फरमारवा
होगा।
26 और मैं उनके साथ सलामती का 'अहद बाधूँगा जो उनके
साथ हमेशा का 'अहद होगा, और मैं उनको बसाऊँगा और
फ़िरावानी बख़्शूँगा और उनके बीच अपने हैकल को हमेशा के
लिए क़ाईम करूँगा।
27 मेरा ख़ेमा भी उनके साथ होगा, मैं उनका ख़ुदा हूँगा और

वह मेरे लोग होंगे।
28 और जब मेरा हैकल हमेशा के लिए उनके बीच रहेगा तो
क़ौमें जानेंगी कि मैं ख़ुदावन्द इस्राईल को पाक करता हूँ।

38

??? ?? ????? ?????

1 और ख़ुदावन्द का कलाम मुझ पर नाज़िल हुआ:
2 कि 'ऐ आदमज़ाद, जूज की तरफ़ जो माजूज की सरज़मीन का
है, और रोश और मसक और तूबल का फ़रमारवा है, मुतवज्जिह
हो और उसके ख़िलाफ़ नबुव्वत कर,
3 और कह, ख़ुदावन्द ख़ुदा यूँ फ़रमाता है: कि देख, ऐ जूज,
रोश और मसक और तूबल के फ़रमारवा, मैं तेरा मुख़ालिफ़ हूँ।
4 और मैं तुझे फिरा दूँगा, और तेरे जबड़ों में आँकड़े डालकर
तुझे और तेरे तमाम लश्कर और घोड़ों और सवारों को, जो सब के
सब मुसल्लह लश्कर हैं, जो फरियाँ और सिपरें लिए हैं और सब
के सब तेग़ज़न हैं खींच निकालूँगा।
5 और उनके साथ फ़ारस और कूश और फ़ूत, जो सब के सब
सिपर बरदार और ख़ूदपोश हैं,
6 ज़ुमर और उसका तमाम लश्कर, और उत्तर की दूर अतराफ़
के अहल — ए — तुजरमा और उनका तमाम लश्कर, या'नी बहुत
से लोग जो तेरे साथ हैं।
7 तू तैयार हो और अपने लिए तैयारी कर, तू और तेरी तमाम
जमा'अत जो तेरे पास जमा' हुई है, और तू उनका रहनुमा हो।
8 और बहुत दिनों के बाद तू याद किया जाएगा, और आख़िरी
बरसों में उस सरज़मीन पर जो तलवार के ग़ल्बे से छुड़ाई गई है
और जिसके लोग बहुत सी क़ौमों के बीच से जमा' किए गए हैं,
इस्राईल के पहाड़ों पर जो पहले से वीरान थे, चढ़ आएगा; लेकिन

वह तमाम क़ौम से आज़ाद है, और वह सब के सब अमन — ओ — अमान से सुकूनत करेंगे।

9 और तू चढ़ाई करेगा और आँधी की तरह आएगा, तू बादल
की तरह ज़मीन को छिपाएगा, तू और तेरा तमाम लश्कर और
बहुत से लोग तेरे साथ।

10 ख़ुदावन्द ख़ुदा यूँ फ़रमाता है: कि उस वक़्त यूँ होगा कि
बहुत से ख़याल तेरे दिल में आएँगे और तू एक बुरा मंसूबा
बाँधेगा;

11 और तू कहेगा, कि 'मैं देहात की सरज़मीन पर हमला करूँगा,
मैं उन पर हमला करूँगा जो राहत — ओ — आराम से बसते हैं;
जिनकी न फ़सील है और न अड़बंगे और न फाटक हैं।

12 ताकि तू लूटे और माल को छीन ले, और उन वीरानों पर जो
अब आबाद हैं, और उन लोगों पर जो तमाम क़ौमों में से जमा'
हुए हैं, जो मवेशी और माल के मालिक हैं और ज़मीन की नाफ़
पर बसते हैं, अपना हाथ चलाए।

13 सबा और ददान और तरसीस के सौदागर और उनके तमाम
जवान शेर — ए — बबर तुझ से पूछेंगे, 'क्या तू ग़ारत करने आया
है? क्या तूने अपना ग़ोल इसलिए जमा' किया है कि माल छीन
ले, और चाँदी सोना लूटे और मवेशी और माल ले जाए और बड़ी
ग़नीमत हासिल करे।

14 'इसलिए, ऐ आदमज़ाद, नबुव्वत कर और जूज से कह,
ख़ुदावन्द ख़ुदा यूँ फ़रमाता है: कि जब मेरी उम्मत इस्राईल, अम्न
से बसेगी क्या तुझे ख़बर न होगी।

15 और तू अपनी जगह से उत्तर की दूर अतराफ़ से आएगा, तू
और बहुत से लोग तेरे साथ, जो सब के सब घोड़ों पर सवार होंगे
एक बड़ी फ़ौज और भारी लश्कर।

16 तू मेरी उम्मत इस्राईल के सामने को निकलेगा और ज़मीन
को बादल की तरह छिपा लेगा; यह आख़िरी दिनों में होगा

और मैं तुझे अपनी सरज़मीन पर चढ़ा लाऊँगा, ताकि क़ौमें मुझे
जाने जिस वक़्त मैं ऐ जूज उनकी आँखों के सामने तुझसे अपनी
तक़दीस कराऊँ
17 ख़ुदावन्द ख़ुदा यूँ फ़रमाता है: कि क्या में वही नहीं जिसके
बारे में मैंने पहले ज़माने में अपने ख़िदमत गुज़ार इस्राईली नबियों
के ज़रिए', जिन्होंने उन दिनों में सालों साल तक नबुव्वत की
फ़रमाया था कि मैं तुझे उन पर चढ़ा लाऊँगा?
18 और यूँ होगा कि जब जूज इस्राईल की मम्लुकत पर चढ़ाई
करेगा तो मेरा क़हर मेरे चेहरे से नुमाया होगा, ख़ुदावन्द ख़ुदा
फ़रमाता है।
19 क्यूँकि मैंने अपनी ग़ैरत और आतिशी क़हर में फ़रमाया
कि यक़ीनन उस रोज़ इस्राईल की सरज़मीन में सख़्त ज़लज़ला
आएगा।
20 यहाँ तक कि समन्दर की मछलियाँ और आसमान के परिन्दे
और मैदान के चरिन्दे, और सब कीड़े मकौड़े जो ज़मीन पर रेंगते
फिरते हैं और तमाम इंसान जो इस ज़मीन पर हैं, मेरे सामने
थरथराएँगे और पहाड़ गिर पड़ेंगे और किनारे बैठ जायेंगे और
हर एक दीवार ज़मीन पर गिर पड़ेगी।
21 और मैं अपने सब पहाड़ों से उस पर तलवार तलब करूँगा,
ख़ुदावन्द ख़ुदा फ़रमाता है, और हर एक इंसान की तलवार उसके
भाई पर चलेगी।
22 और मैं वबा भेजकर और ख़ूँरेज़ी करके उसे सज़ा दूँगा, और
उस पर और उसके लश्करों पर और उन बहुत से लोगों पर जो
उसके साथ हैं शिद्दत का मेंह और बड़े — बड़े — ओले और आग
और गन्धक बरसाऊँगा।
23 और अपनी बुज़ुर्गी और अपनी तक़्दीस कराऊँगा, और बहुत
सी क़ौमों की नज़रों में मशहूर होंगे और वह जानेगे कि ख़ुदावन्द
मैं हूँ।

39

[illegible]

1 इसलिए ऐ आदमज़ाद, तू जूज के ख़िलाफ़ नबुव्वत कर और कह, कि ख़ुदावन्द ख़ुदा यूँ फ़रमाता है: देख, ऐ जूज, रोश और मसक और तूबल के फ़रमारवा, मैं तेरा मुख़ालिफ़ हूँ।

2 और मैं तुझे फिरा दूँगा और तुझे लिए फिरूँगा और उत्तर की दूर 'अतराफ़ से चढ़ा लाऊँगा और तुझे इस्राईल के पहाड़ों पर पहुचाऊँगा।

3 और तेरी कमान तेरे बाएँ हाथ से छुड़ा दूँगा और तेरे तीर तेरे दहने हाथ से गिरा दूँगा।

4 तू इस्राईल के पहाड़ों पर अपने सब लश्कर और हिमायतियों के साथ गिर जाएगा, और मैं तुझे हर क़िस्म के शिकारी परिन्दों और मैदान के दरिन्दों को दूँगा कि खा जाएँ।

5 तू खुले मैदान में गिरेगा, क्यूँकि मैंने ही कहा, ख़ुदावन्द ख़ुदा फ़रमाता है।

6 और मैं माजूज पर और उन पर जो समन्दरी मुल्कों में अमन से सुकूनत करते हैं, आग भेजूँगा और वह जानेंगे कि मैं ख़ुदावन्द हूँ।

7 और मैं अपने मुक़द्दस नाम को अपनी उम्मत इस्राईल में ज़ाहिर करूँगा, और फिर अपने मुक़द्दस नाम की बेहुरमती न होने दूँगा; और क़ौमे जानेंगी कि मैं ख़ुदावन्द इस्राईल का क़ुददूस हूँ।

8 देख, वह पहुँचा और वजूद में आया, ख़ुदावन्द ख़ुदा फ़रमाता है; यह वही दिन है जिसके ज़रिए' मैंने फ़रमाया था।

9 तब इस्राईल के शहरों के बसने वाले निकलेंगे और आग लगाकर हथियारों को जलाएँगे, या'नी सिपरों और फरियों को, कमानों और तीरों को, और भालों और बर्छियों को, और वह सात बरस तक उनको जलाते रहेंगे।

10 यहाँ तक कि न वह मैदानों से लकड़ी लाएँगे और न जंगलों
से काटेंगे क्यूँकि वह हथियार ही जलाएँगे, और वह अपने लूटने
वालों को लूटेंगे और अपने ग़ारत करने वालों को ग़ारत करेंगे,
ख़ुदावन्द ख़ुदा फ़रमाता है।
11 और उसी दिन यूँ होगा कि मैं वहाँ इस्राईल में जूज को एक
क़ब्रिस्तान दूँगा, या'नी रहगुज़रों की वादी जो समन्दर के पूरब
में वहाँ जूज को और उसकी तमाम जमियत को दफ़न करेंगे, और
जमियत — ए — जूज की वादी उसका नाम रख्खेंगे।
12 और सात महीनों तक बनी इस्राईल उनको दफ़न करते रहेंगे
ताकि मुल्क को साफ़ करें।
13 हाँ, उस मुल्क के सब लोग उनको दफ़न करेंगे; और यह उनके
लिए उनका भी नाम होगा जिस रोज़ मेरी बड़ाई होगी, ख़ुदावन्द
ख़ुदा फ़रमाता है।
14 और वह चन्द आदमियों को चुन लेंगे जो इस काम में हमेशा
मशग़ूल रहेंगे, और वह ज़मीन पर से गुज़रते हुए रहगुज़रों की
मदद से, उनको जो सतह — ए — ज़मीन पर पड़े रह गए हों,
दफ़न करेंगे ताकि उसे साफ़ करें, पूरे सात महीनों के बाद तलाश
करेंगे।
15 और जब वह मुल्क में से गुज़रें और उनमें से कोई किसी
आदमी की हड्डी देखे, तो उसके पास एक निशान खड़ा करेगा, जब
तक दफ़न करने वाले जमियत — ए — जूज की वादी में उसे
दफ़न न करें।
16 और शहर भी ज'मिय्यत कहलाएगा। यूँ वह ज़मीन को पाक
करेंगे।
17 और ऐ आदमज़ाद, ख़ुदावन्द ख़ुदा फ़रमाता है: कि हर
क़िस्म के परिन्दे और मैदान के हर एक जानवर से कह, जमा' होकर
आओ, मेरे उस ज़बीहे पर जिसे मैं तुम्हारे लिए ज़बह करता हूँ;
हाँ, इस्राईल के पहाड़ों पर एक बड़े ज़बीहे पर हर तरफ़ से जमा'

हो, ताकि तुम गोश्त खाओ और ख़ून पियो।

18 तुम बहादुरों का गोश्त खाओगे और ज़मीन के 'उमरा का
ख़ून पिओगे, हाँ, मेंढों, बर्रों, बकरों और बैलों का वह सब के सब
बसन के फ़र्बा हैं।

19 और तुम मेरे ज़बीहे की जिसे मैंने तुम्हारे लिए ज़बह किया
यहाँ तक खाओगे कि सेर हो जाओगे, और इतना ख़ून पिओगे कि
मस्त हो जाओगे।

20 और तुम मेरे दस्तरख़्वान पर घोड़ों और सवारों से, और
बहादुरों और तमाम जंगीमर्दों से सेर होगे, ख़ुदावन्द ख़ुदा
फ़रमाता है।

21 'और मैं क़ौमों के बीच अपनी बुज़ुर्गी ज़ाहिर करूँगा और
तमाम क़ोमें मेरी सज़ा को जो मैंने दी और मेरे हाथ को जो मैंने
उन पर रख्खा देखेंगी।

22 और बनी — इस्राईल जानेंगे कि उस दिन से लेकर आगे को
मैं ही ख़ुदावन्द उनका ख़ुदा हूँ।

23 और क़ौमें जानेंगी कि बनी — इस्राईल अपनी बदकिरदारी
की वजह से ग़ुलामी में गए, चूँकि वह मुझ से बाग़ी हुए, इसलिए
मैंने उनसे मुँह छिपाया; और उनको उनके दुश्मनों के हाथ में कर
दिया, और वह सब के सब तलवार से क़त्ल हुए।

24 उनकी नापाकी और ख़ताकारी के मुताबिक़, मैंने उनसे सुलूक
किया और उनसे अपना मुँह छिपाया।

25 लेकिन ख़ुदावन्द ख़ुदा यूँ फ़रमाता है: कि अब मैं या'क़ूब
की ग़ुलामी को ख़त्म करूँगा, और तमाम बनी इस्राईल पर रहम
करूँगा और अपने पाक नाम के लिए ग़य्यूर हूँगा।

26 और वह अपनी रुस्वाई और तमाम ख़ताकारी, जिससे वह
मेरे गुनहगार हुए बर्दाश्त करेंगे; जब वह अपनी सरज़मीन में
अमन से क़याम करेंगे, तो कोई उनको न डराएगा।

27 जब मैं उनकी उम्मतों में से वापस लाऊँगा, और उनके

दुश्मनों के मुल्कों से जमा' करूँगा, और बहुत सी क़ौमों की नज़रों
में उनके बीच मेरी तक़दीस होगी।
28 तब वह जानेंगे कि मैं ख़ुदावन्द उनका ख़ुदा हूँ, इसलिए कि
मैंने उनको क़ौम के बीच ग़ुलामी में भेजा और मैं ही ने उनको उनके
मुल्क में जमा' किया और उनमें से एक को भी वहाँ न छोड़ा।
29 और मैं फिर कभी उनसे मुँह न छिपाऊँगा, क्यूँकि मैंने अपनी
रूह बनी — इस्राईल पर नाज़िल की है ख़ुदावन्द ख़ुदा फ़रमाता
है।

40

[illegible]

1 हमारी ग़ुलामी के पच्चीसवें बरस के शुरू' में और महीने की
दसवीं तारीख़ को, जो शहर की तस्ख़ीर का चौदहवाँ साल था,
उसी दिन ख़ुदावन्द का हाथ मुझ पर था, और वह मुझे वहाँ ले
गया।
2 वह मुझे ख़ुदा की रोयतों में इस्राईल के मुल्क में ले गया
और उसने मुझे एक बहुत बुलन्द पहाड़ पर उतारा, और उसी पर
दक्खिन की तरफ़ जैसे एक शहर का सा नक़्शा था।
3 जब वह मुझे वहाँ ले गया तो क्या देखता हूँ कि एक शख़्स
है जिसकी झलक पीतल के जैसी है, और वह सन की डोरी और
पैमाइश का सरकण्डा हाथ में लिए फाटक पर खड़ा है।
4 और उस शख़्स ने मुझे कहा, कि 'ऐ आदमज़ाद, अपनी आँखों
से देख और कानों से सुन, और जो कुछ मैं तुझे दिखाऊँ उस सब
पर ख़ूब ग़ौर कर, क्यूँकि तू इसी लिए यहाँ पहुँचाया गया है कि मैं
यह सब कुछ तुझे दिखाऊँ; इसलिए जो कुछ तू देखता है, बनी
इस्राईल से बयान कर।
5 और क्या देखता हूँ कि घर के चारों तरफ़ दीवार है, और उस
शख़्स के हाथ में पैमाइश का सरकण्डा है, छः हाथ लम्बा और
हर एक हाथ पूरे हाथ से चार उँगल बड़ा था; इसलिए उसने उस

दीवार की चौड़ाई नापी, वह एक सरकण्डा हुई और ऊँचाई एक सरकण्डा।
6 तब वह पूरब रूया फाटक पर आया, और उसकी सीढ़ी पर
चढ़ा और उस फाटक के आस्ताने को नापा, जो एक सरकण्डा
चौड़ा था और दूसरे आस्ताने का 'अर्ज़ भी एक सरकण्डा था।
7 और हर एक कोठरी एक सरकण्डा लम्बी और एक सरकण्डा
चौड़ी थी, और कोठरियों के बीच पाँच पाँच हाथ का फ़ासिला
था, और फाटक की डयोढ़ी के पास अन्दर की तरफ़ फाटक का
आस्ताना एक सरकण्डा था।
8 और उसने फाटक के आँगन अन्दर से एक सरकण्डा नापी।
9 तब उसने फाटक के आँगन आठ हाथ नापी, और उसके सुतून
दो हाथ और फाटक के आँगन अन्दर की तरफ़ थी।
10 और पूरब रूया फाटक की कोठरियाँ तीन इधर और तीन
उधर थीं, यह तीनों पैमाइश में बराबर थीं, और इधर — उधर के
सुतूनों का एक ही नाप था।
11 और उसने फाटक के दरवाज़े की चौड़ाई दस हाथ और
लम्बाई तेरह हाथ नापी।
12 और कोठरियों के आगे का हाशिया हाथ भर इधर और हाथ
भर उधर था, और कोठरियाँ छ: हाथ इधर और छ: हाथ उधर
थीं।
13 तब उसने फाटक की एक कोठरी की छत से दूसरी की छत
तक पच्चीस हाथ चौड़ा नापा दरवाज़े के सामने का दरवाज़ा।
14 और उसने सुतून साठ हाथ नापे और सहन के सुतून दरवाज़े
के चारों तरफ़ थे।
15 और मदख़ल के फाटक के सामने से लेकर, अन्दरूनी फाटक
के आँगन तक पचास हाथ का फ़ासिला था।
16 और कोठरियों में और उनके सुतूनों में फाटक के अन्दर चारों
तरफ़ झरोके थे, वैसे ही आँगन के अन्दर भी चारों तरफ़ झरोके थे,
और सुतूनों पर खजूर की सूरतें थीं।
17 फिर वह मुझे बाहर के सहन में ले गया, और क्या देखता हूँ

कि कमरे हैं और चारों तरफ़ सहन में फ़र्श लगा था, और उस फ़र्श
पर तीस कमरे थे।
18 और वह फ़र्श या'नी नीचे का फ़र्श फाटकों के साथ साथ
बराबर लगा था।
19 तब उसने उसकी चौड़ाई नीचे के फाटक के सामने से अन्दर
के सहन के आगे, पूरब और उत्तर की तरफ़ बाहर बाहर सौ हाथ
नापी।
20 फिर उसने बाहर के सहन के उत्तर रूया फाटक की लम्बाई
और चौड़ाई नापी।
21 और उसकी कोठरियाँ तीन इस तरफ़ और तीन उस तरफ़
और उसके सुतून और मेहराब पहले फाटक के नाप के मुताबिक़
थे; उसकी लम्बाई पचास हाथ और चौड़ाई पच्चीस हाथ थी।
22 और उसके दरीचे और आँगन और खजूर के दरख़्त पूरब रूया
फाटक के नाप के मुताबिक़ थे, और ऊपर जाने के लिए सात ज़ीने
थे; उसके आँगन उनके आगे थी।
23 और अन्दर के सहन का फाटक उत्तर रूया और पूरब रूया
फाटकों के सामने था, और उसने फाटक से फाटक तक सौ हाथ
नापा।
24 और वह मुझे दक्खिन की राह से ले गया, और क्या देखता
हूँ कि दक्खिन की तरफ़ एक फाटक है, और उसने उसके सुतूनों को
और उसके आँगन को इन्हीं नापों के मुताबिक़ नापा।
25 और उसमें और उसके आँगन में चारों तरफ़ उन दरीचों की
तरह दरीचे थे; लम्बाई पचास हाथ, चौड़ाई पच्चीस हाथ।
26 और उसके ऊपर जाने के लिए सात ज़ीने थे, और उसके
आँगन उनके आगे थी और सुतूनों पर खजूर की सूरते थीं, एक
इस तरफ़ और एक उस तरफ़।
27 और दक्खिन की तरफ़ अन्दरूनी सहन का फाटक था, और
उसने दक्खिन की तरफ़ फाटक से फाटक तक सौ हाथ नापा।
28 और वह दक्खिनी फाटक की रास्ते से मुझे अन्दरूनी सहन
में लाया, और इन्हीं नापों के मुताबिक़ उसने दक्खिनी फाटक को

नापा।
29 और उसकी कोठरियों और उसके सुतूनों और उसके आँगन
को इन्हीं नापों के मुताबिक पाया और उसमें और उसके आँगन
में चारों तरफ़ दरीचे थे; लम्बाई पचास हाथ और चौड़ाई पच्चीस
हाथ थी।
30 और आँगन चारों तरफ़ पच्चीस हाथ लम्बी और पाँच हाथ
चौड़ी थी।
31 उसकी आँगन बैरूनी सहन की तरफ़ थी और उसके सुतूनों
पर खजूर की सूरतें थीं और ऊपर जाने के लिए आठ ज़ीने थे।
32 और वह मुझे पूरब की तरफ़ अन्दरूनी सहन में लाया और
इन्हीं नापों के मुताबिक़ फाटक को पाया।
33 और उसकी कोठरियों और सुतूनों और आँगन को इन्हीं नापों
के मुताबिक़ पाया, और उसमें और उसके आँगन में चारों तरफ़
दरीचे थे; लम्बाई पचास हाथ चौड़ाई पच्चीस हाथ थी।
34 और उसका आँगन बैरूनी सहन की तरफ़ था और उसके
सुतूनों पर इधर — उधर खजूर की सूरतें थीं, और ऊपर जाने के
लिए आठ ज़ीने थे।
35 और वह मुझे उत्तरी फाटक की तरफ़ ले गया और इन्हीं नापों
के मुताबिक़ उसे पाया।
36 उसकी कोठरियों और उसके सुतूनों और उसके आँगन को
जिनमें चारों तरफ़ दरीचे थे, लम्बाई पचास हाथ चौड़ाई पच्चीस
हाथ थी।
37 और उसके सुतून बैरूनी सहन की तरफ़ थे, और उसके सुतूनों
पर इधर उधर खजूर की सूरतें थीं और ऊपर जाने के लिए आठ
जीने थे।
38 और फाटकों के सुतूनों के पास दरवाज़ेदार हुजरा था, जहाँ
सोख़्तनी क़ुर्बानियाँ धोते थे।
39 और फाटक के आँगन में दो मेज़े इस तरफ़ और दो उस तरफ़
थीं, कि उन पर सोख़्तनी क़ुर्बानी और ख़ता की क़ुर्बानी और जुर्म

की क़ुर्बानी ज़बह करें।

40 और बाहर की तरफ़ उत्तरी फाटक के मदख़ल के पास दो मेज़ें
थीं, और फाटक की डयोढ़ी की दूसरी तरफ़ दो मेजें।

41 फाटक के पास चार मेज़ें इस तरफ़ और चार उस तरफ़ थीं,
या'नी आठ मेज़े जिन पर ज़बह करें।

42 सोख़्तनी क़ुर्बानी के लिए तराशे हुए पत्थरों की चार मेजें
थीं, जो डेढ़ हाथ लम्बी और डेढ़ हाथ चौड़ी और एक हाथ ऊँची
थीं, जिन पर वह सोख़्तनी क़ुर्बानी और ज़बीहे को ज़बह करने के
हथियार रखते थे।

43 और उसके अन्दर चारों तरफ़ चार उंगल लम्बी अंकड़ियाँ
लगी थीं और क़ुर्बानी का गोश्त मेज़ों पर था।

44 और अन्दरूनी फाटक से बाहर अन्दरूनी सहन में जो उत्तरी
फाटक की जानिब था, गाने वालों के कमरे थे और उनका रुख़
दक्खिन की तरफ़ था, और एक पूरबी फाटक की जानिब था
जिसका रुख़ उत्तर की तरफ़ था।

45 और उसने मुझ से कहा, कि "यह कमरा जिसका रुख़ दक्खिन
की तरफ़ है, उन काहिनों के लिए है जो घर की निगहबानी करते
हैं;

46 और वह कमरा जिसका रुख़ उत्तर की तरफ़ है, उन काहिनों के
लिए है जो मज़बह की मुहाफ़िज़त में हाज़िर हैं; यह बनी सदूक़
हैं जो बनी लावी में से ख़ुदावन्द के सामने आते हैं कि उसकी
ख़िदमत करें।"

47 और उसने सहन को सौ हाथ लम्बा और सौ हाथ चौड़ा
मुरब्बा नापा और मज़बह घर के सामने था।

48 फिर वह मुझे घर के आँगन में लाया और आँगन को नापा;
पाँच हाथ इधर पाँच हाथ उधर और फाटक की चौड़ाई तीन हाथ
इस तरफ़ थी और तीन हाथ उस तरफ़।

49 आँगन की लम्बाई बीस हाथ और चौड़ाई ग्यारह हाथ की
और सीढ़ी के ज़ीने जिनसे उस पर चढ़ते थे और सुतूनों के पास

पील पाए थे, एक इस तरफ़ और एक उस तरफ़।

41

1 और वह मुझे हैकल में लाया और सुतूनों को नापा, छ: हाथ
की चौड़ाई एक तरफ़ और छ: हाथ की दूसरी तरफ़, यही ख़ेमे की
चौड़ाई थी।
2 और दरवाज़े की चौड़ाई दस हाथ, और उसका एक पहलू
पाँच हाथ का और दूसरा भी पाँच हाथ का था; और उसने उसकी
लम्बाई चालीस हाथ और चौड़ाई बीस हाथ नापी।
3 तब वह अन्दर गया और दरवाज़े के हर सुतून को दो हाथ
नापा, और दरवाज़े को छ: हाथ और दरवाज़े की चौड़ाई सात
हाथ थी।
4 और उसने हैकल के सामने की लम्बाई को बीस हाथ और
चौड़ाई को बीस हाथ नापा, और मुझ से कहा, कि "यही पाक —
तरीन मक़ाम है।
5 और उसने घर की दीवार छ: हाथ नापी, और पहलू के हर
एक कमरे की चौड़ाई घर के चारों तरफ़ चार हाथ थी।
6 और पहलू के कमरे तीन मंज़िला थे; कमरे के ऊपर कमरा
क़तार में तीस, और वह उस दीवार में जो घर के चारों तरफ़ के
कमरों के लिए थी, दाख़िल किए गए थे ताकि मज़बूत हों; लेकिन
वह घर की दीवार से मिले हुए न थे।
7 और वह पहलू पर के कमरे ऊपर तक चारों तरफ़ ज़्यादा चौड़े
होते जाते थे, क्यूँकि घर चारों तरफ़ से ऊँचा होता चला जाता
था। घर की चौड़ाई ऊपर तक बराबर थी, और ऊपर के कमरों का
रास्ता बीच के कमरों के बीच से था।
8 और मैंने घर के चारों तरफ़ ऊँचा चबूतरा देखा, पहलू के कमरों
की बुनियाद छ: बड़े हाथ के पूरे सरकण्डे की थी।
9 और पहलू के कमरों की बैरूनी दीवार की चौड़ाई पाँच हाथ
थी, और जो जगह बाक़ी बची वह घर के पहलू के कमरों के बीच

थी।
10 और कमरों के बीच घर के चारों तरफ़ बीस हाथ का फ़ासला
था।
11 और पहलू के कमरों के दरवाज़े उस ख़ाली जगह की तरफ़
थे, एक दरवाज़ा उत्तर की तरफ़ और एक दक्खिन की तरफ़ और
ख़ाली जगह की चौड़ाई चारों तरफ़ पाँच हाथ थी।
12 और वह 'इमारत जो अलग जगह के सामने पश्चिम की
तरफ़ थी उसकी चौड़ाई सत्तर हाथ थी और उस 'इमारत की दीवार
चारों तरफ़ पाँच हाथ मोटी और नब्बे हाथ लम्बी थी।
13 इसलिए उसने घर को सौ हाथ लम्बा नापा और अलग
जगह और 'इमारत उसकी दीवारों के साथ सौ हाथ लम्बी थी।
14 नेज़, घर के सामने की तरफ़ उस पूरबी जानिब की अलग
जगह की चौड़ाई सौ हाथ थी।
15 और अलग जगह के सामने की 'इमारत की लम्बाई को, जो
उसके पीछे थी, और उसकी जानिब के बरामदे इस तरफ़ से और
उस तरफ़ से, और अन्दर की तरफ़ हैकल को और सहन के आँगनों
को उसने सौ हाथ नापा।
16 आस्तानों और झरोकों और चारों तरफ़ के बरामदों को जो
सहमंज़िला और आस्तानों के सामने थे, और चारों तरफ़ लकड़ी
से मढ़े हुए थे, और ज़मीन से खिड़कियों तक और खिड़कियाँ भी
मढ़ी हुई थीं।
17 दरवाज़े के ऊपर तक और अन्दरूनी घर तक और उसके बाहर
भी, चारों तरफ़ की तमाम दीवार तक घर के अन्दर बाहर सब ठीक
अन्दाज़े से थे।
18 और करूबी और खजूर बने थे, और एक खजूर दो करूबियों
के बीच में था और हर एक करूबी के दो चेहरे थे।
19 चुनाँचे एक तरफ़ इंसान का चेहरा खजूर की तरफ़ था, और
दूसरी तरफ़ जवान शेर — ए — बबर का चेहरा भी खजूर की तरफ़
था; घर की चारों तरफ़ इसी तरह का काम था।
20 ज़मीन से दरवाजे के ऊपर तक, और हैकल की दीवार पर

करूबी और खजूर बने थे।
21 और हैकल के दरवाज़े के सुतून चहार गोशा थे, और हैकल
के सामने की सूरत भी इसी तरह की थी।
22 मज़बह लकड़ी का था, उसकी ऊँचाई तीन हाथ और लम्बाई
दो हाथ थी, और उसके कोने और उसकी कुर्सी और उसकी दीवारें
लकड़ी की थीं, और उसने मुझ से कहा, यह ख़ुदावन्द के सामने
की मेज़ है।”
23 और हैकल और हैकल के दो दो दरवाज़े थे।
24 और दरवाज़ों के दो दो पल्ले थे जो मुड़ सकते थे; दो पल्ले
एक दरवाज़े के लिए और दो दूसरे के लिए।
25 और उन पर या'नी हैकल के दरवाज़ों पर करूबी और खजूर
बने थे, जैसे कि दीवारों पर बने थे और बाहर के आँगन के रुख़ पर
तख़्ता बन्दी थी।
26 और आँगन की अन्दरूनी और बैरूनी जानिब पहलू में
झरोके और खजूर के दरख़्त बने थे, और हैकल के पहलू के कमरों
और तख़्ता बन्दी की यही सूरत थी।

42

[illegible]

1 फिर वह मुझे उत्तरी रास्ते से बैरूनी सहन में ले गया, और
उस कोठरी में जो अलग जगह और 'इमारत के सामने उत्तर की
तरफ़ थी ले आया।
2 सौ हाथ की लम्बाई की जगह के सामने उत्तरी दरवाज़ा था,
और उसकी चौड़ाई पचास हाथ थी।
3 बीस हाथ के सामने जो अन्दरूनी सहन के लिए थे, और
बैरूनी सहन के फ़र्श के सामने कोठरियाँ तीन तबक़ों में एक दूसरे
के सामने थीं।

4 और कोठरियों के सामने अन्दर की तरफ़ दस हाथ चौड़ा
रास्ता था, और एक रास्ता एक हाथ का और उनके दरवाज़े उत्तर
की तरफ़ थे।
5 ऊपर की कोठरियाँ छोटी थीं, क्यूँकि उनके बरामदों ने
'इमारत की निचली और बीच की मंज़िल के सामने इनसे ज़्यादा
जगह रोक ली थी।
6 क्यूँकि वह तीन दर्जों की थीं, लेकिन उनके सुतून सहन के
सुतूनों की तरह न थे; इसलिए वह निचली और बीच मंज़िन्ल से
तंग थीं।
7 और कोठरियों के पास की बैरूनी सहन की तरफ़, कोठरियों
के सामने की बैरूनी दीवार पचास हाथ लम्बी थी।
8 क्यूँकि बैरूनी सहन की कोठरियों की लम्बाई पचास हाथ थी,
और हैकल के सामने सौ हाथ की लम्बाई थी।
9 और उन कोठरियों के नीचे पूरब की तरफ़ वह मदख़ल था,
जहाँ से बैरूनी सहन से दाख़िल होते थे।
10 पूरबी सहन की चौड़ी दीवार में और अलग जगह और उस
'इमारत के सामने कोठरियाँ थीं।
11 और उनके सामने एक ऐसा रास्ता था, जैसा उत्तर की तरफ़
की कोठरियों के सामने था; उनकी लम्बाई और चौड़ाई बराबर
थी, और उनके तमाम मख़रज उनकी तरतीब और उनके दरवाज़ों
के मुताबिक़ थे।
12 और दक्खिन की तरफ़ की कोठरियों के दरवाज़ों के मुताबिक़
एक दरवाज़ा रास्ते के सिरे पर था, या'नी सीधी दीवार के रास्ते
पर पूरब की तरफ़ जहाँ से उनमें दाख़िल होते थे।
13 और उसने मुझ से कहा, कि “उत्तरी और दक्खिनी कोठरियाँ
जो अलग जगह के मुक़ाबिल हैं पाक कोठरियाँ हैं जहाँ काहिन
जो ख़ुदावन्द के सामने जाते हैं अक़दस चीजें खायेंगे और अक़दस
चीज़ें और नज़र की क़ुर्बानी और ख़ता की क़ुर्बानी और जुर्म की
क़ुर्बानी वहाँ रख्खेंगे, क्यूँकि वह मकान पाक है।

14 जब काहिन दाख़िल हों तो वह हैकल से बैरूनी सहन में न
जाएँ, बल्कि अपनी ख़िदमत के लिबास वहीं उतार दें क्यूँकि वह
पाक हैं, और वह दूसरे कपड़े पहन कर 'आम मकान में जाएँ।"
15 फिर जब वह अन्दरूनी घर को नाप चुका, तो मुझे उस
फाटक के रास्ते से लाया जिसका रुख़ पूरब की तरफ़ है और घर
को चारों तरफ़ से नापा।
16 उसने पैमाइश के सरकण्डे से पूरब की तरफ़ चारो तरफ़ पाँच
सौ सरकण्डे नापे।
17 उसने पैमाइश के सरकण्डे से उत्तर की तरफ़ चारो तरफ़ पाँच
सौ सरकण्डे नापे।
18 उसने पैमाइश के सरकण्डे से दक्खिन की तरफ़ भी पाँच सौ
सरकण्डे नापे।
19 उसने पच्छिम की तरफ़ मुड़ कर पैमाइश के सरकण्डे से पाँच
सौ सरकण्डे नापे।
20 उसने उसको चारों तरफ़ से नापा, उसकी चारों तरफ़ एक
दीवार पाँच सौ सरकण्डे लम्बी और पाँच सौ चौड़ी थी, ताकि
पाक को 'आम से जुदा करे।

43

□□□□□□ □□ □□□□□ □□ □□□□□□

1 फिर वह मुझे फाटक पर ले आया, या'नी उस फाटक पर
जिसका रुख़ पूरब की तरफ़ है,;
2 और क्या देखता हूँ कि इस्राईल के ख़ुदा का जलाल पूरब की
तरफ़ से आया, और उसकी आवाज़ सैलाब के शोर के जैसी थी,
और ज़मीन उसके जलाल से मुनव्वर हो गई।
3 और यह उस ख़्वाब की नुमाइश के मुताबिक़ था जो मैंने देखा
था, हाँ, उस ख़्वाब के मुताबिक़ जो मैंने उस वक़्त देखा था जब
मैं शहर को बर्बाद करने आया था, और यह रोयतें उस ख़्वाब की
तरह थीं जो मैंने नहर — ए — किबार के किनारे पर देखा था; तब
मैं मुँह के बल गिरा।

4 और ख़ुदावन्द का जलाल उस फाटक की राह से, जिसका रुख़
पूरब की तरफ़ है हैकल में दाख़िल हुआ।
5 और रूह ने मुझे उठा कर अन्दरूनी सहन में पहुँचा दिया,
और क्या देखता हूँ कि हैकल ख़ुदावन्द के जलाल से मा'मूर है।
6 और मैंने किसी की आवाज़ सुनी, जो हैकल में से मेरे साथ
बातें करता था, और एक शख़्स मेरे पास खड़ा था।
7 और उसने मुझे फ़रमाया, कि 'ऐ आदमज़ाद, यह मेरी
तख़्तगाह और मेरे पाँव की कुर्सी है जहाँ मैं बनी — इस्राईल के
बीच हमेशा तक रहूँगा और बनी इस्राईल और उनके बादशाह
फिर कभी मेरे पाक नाम को अपनी बदकारी और अपने बादशाहों
की लाशों से उनके मरने पर नापाक न करेंगे।
8 क्यूँकि वह अपने आस्ताने मेरे आस्तानों के पास, और अपनी
चौखटें मेरी चौखटों के पास लगाते थे, और मेरे और उनके बीच
सिर्फ़ एक दीवार थी; उन्होंने अपने उन घिनौने कामों से जो
उन्होंने किए मेरे पाक नाम को नापाक किया, इसलिए मैंने अपने
क़हर में उनको हलाक किया।
9 अगरचे अब वह अपनी बदकारी और अपने बादशाहों की
लाशें मुझ से दूर कर दें, तो मैं हमेशा तक उनके बीच रहूँगा।
10 'ऐ आदमज़ाद, तू बनी — इस्राईल को यह घर दिखा, ताकि
वह अपनी बदकिरदारी से शर्मिन्दा हो जाएँ और इस नमूने को
नापें।
11 और अगर वह अपने सब कामों से शर्मिंदा हों, तो उस घर
का नक़्शा और उसकी तरतीब और उसके मख़ारिज और मदख़ल
और उसकी तमाम शक्ल और उसके कुल हुक्मों और उसकी पूरी
वज़ह और तमाम क़वानीन उनको दिखा, और उनकी आँखों के
सामने उसको लिख, ताकि वह उसका कुल नक़्शा और उसके
तमाम हुक्मों को मानकर उन पर 'अमल करें।
12 इस घर का क़ानून यह है कि इसकी तमाम सरहदें पहाड़ की

चोटी पर और इसके चारों तरफ़ बहुत पाक होंगी; देख, यही इस
घर का क़ानून है।
13 'और हाथ के नाप से मज़बह के यह नाप हैं, और इस हाथ
की लम्बाई एक हाथ चार उँगल है। पाया एक हाथ का होगा,
और चौड़ाई एक हाथ और उसके चारो तरफ़ बालिश्त भर चौड़ा
हाशिया, और मज़बह का पाया यही है।
14 और ज़मीन पर के इस पाये से लेकर नीचे की कुर्सी तक दो
हाथ, और उसकी चौड़ाई एक हाथ और छोटी कुर्सी से बड़ी कुर्सी
तक चार हाथ और चौड़ाई एक हाथ।
15 और ऊपर का मज़बह चार हाथ का होगा, और मज़बह के
ऊपर चार सींग होंगे।
16 और मज़बह बारह हाथ लम्बा होगा और बारह हाथ चौड़ा
मुरब्बा।
17 और कुर्सी चौदह हाथ लम्बी और चौदह हाथ चौड़ी मुरब्बा'
और चारों तरफ़ उसका किनारा आधा हाथ, उसका पाया चारो
तरफ़ एक हाथ और उसका ज़ीना पूरब रू होगा।
18 और उसने मुझ से कहा, ऐ आदमज़ाद, ख़ुदावन्द ख़ुदा यूँ
फ़रमाता है: कि मज़बह के यह हुक्म उस दिन जारी होंगे जब वह
उसे बनाएँगे, ताकि उस पर सोख़्तनी क़ुर्बानी पेश करें और उस पर
ख़ून छिड़कें।
19 और तू लावी काहिनों को जो सदूक़ की नसल से हैं, जो मेरी
ख़िदमत के लिए मेरे सामने आते हैं, ख़ता की क़ुर्बानी के लिए
बछड़ा देना, ख़ुदावन्द ख़ुदा फ़रमाता है।
20 और तू उसके ख़ून में से लेना और मज़बह के चारों सींगों पर,
उसकी कुर्सी के चारों कोनों पर और उसके चारो तरफ़ के हाशिए
पर लगाना; इसी तरह कफ़्फ़ारा देकर उसे पाक — ओ — साफ़
करना।
21 और ख़ता की क़ुर्बानी के लिए बछड़ा लेना, और वह घर की
मुक़र्ररर जगह में हैकल के बाहर जलाया जाएगा।

22 और तू दूसरे दिन एक बे'ऐब बकरा ख़ता की क़ुर्बानी के लिए पेश करना, और वह मज़बह को कफ़्फ़ारा देकर उसी तरह पाक करेंगे, जिस तरह बछड़े से पाक किया था।

23 और जब तू उसे पाक कर चुके तो एक बे'ऐब बछड़ा और गल्ले का एक बे'ऐब मेंढा पेश करना।

24 और तू उनको ख़ुदावन्द के सामने लाना और काहिन उनपर नमक छिड़कें और उनको सोख़्तनी क़ुर्बानी के लिए ख़ुदावन्द के सामने पेश करें।

25 और तू सात दिन तक हर रोज़ एक बकरा ख़ता की क़ुर्बानी के लिए तैयार कर रखना, वह एक बछड़ा और गल्ले का एक मेंढा भी जो बे'ऐब हों तैयार कर रक्खें।

26 सात दिन तक वह मज़बह को कफ़्फ़ारा देकर पाक — ओ — साफ़ करेंगे और उसको मख़्सूस करेंगे।

27 और जब यह दिन पूरे होंगे, तो यूँ होगा कि आठवें दिन और आइन्दा काहिन तुम्हारी सोख़्तनी क़ुर्बानियों को और तुम्हारी सलामती की क़ुर्बानियों को मज़बह पर पेश करूँगे, और मैं तुम को क़ुबूल करूँगा; ख़ुदावन्द ख़ुदा फ़रमाता है।

44

□□□□□□, □□□□□ □□ □□□□□□□

1 तब वह मुझको हैकल के बैरूनी फाटक के रास्ते से, जिसका रुख़ पूरब की तरफ़ है वापस लाया, और वह बन्द था।

2 और ख़ुदावन्द ने मुझे फ़रमाया, कि "यह फाटक बन्द रहेगा और खोला न जाएगा, और कोई इंसान इससे दाख़िल न होगा; चूँकि ख़ुदावन्द इस्राईल का ख़ुदा इससे दाख़िल हुआ है, इसलिए यह बन्द रहेगा।

3 मगर फ़रमारवाँ इसलिए कि फ़रमारवाँ है, ख़ुदावन्द के सामने रोटी खाने को इसमें बैठेगा; वह इस फाटक के आस्ताने के रास्ते से अन्दर आएगा, और इसी रास्ते से बाहर जाएगा।"

4 फिर वह मुझे उत्तरी फाटक के रास्ते से हैकल के सामने लाया,
और मैंने निगाह की और क्या देखता हूँ कि ख़ुदावन्द के जलाल
ने ख़ुदावन्द के घर को मा'मूर कर दिया; और मैं मुँह के बल गिरा।
5 और ख़ुदावन्द ने मुझे फ़रमाया, ऐ आदमज़ाद, ख़ूब ग़ौर कर
और अपनी आँखों से देख, और जो कुछ ख़ुदावन्द के घर के हुक्मों
और क़वानीन के ज़रिए' तुझ से कहता हूँ अपने कानों से सुन, और
घर के मदख़ल को और हैकल के सब मख़रजों को ख़याल में रख।
6 और तू बनी इस्राईल के बाग़ी लोगों से कहना कि ख़ुदावन्द
ख़ुदा यूँ फ़रमाता कि ऐ बनी इस्राईल तुम अपनी मकरूहात को
अपने लिए काफ़ी समझो।
7 चुनाँचे जब तुम मेरी रोटी और चर्बी और ख़ून अदा करते थे,
तो दिल के नामख़्तून और जिस्म के नामख़्तून अजनबीज़ादों को
मेरे हैकल में लाए, ताकि वह मेरी हैकल में आकर मेरे घर को
नापाक करें, और उन्होंने तुम्हारे तमाम नफ़रतअंगेज़ कामों की
वजह से मेरे 'अहद को तोड़ा।
8 और तुम ने मेरी पाक चीज़ों की हिफ़ाज़त न की, बल्कि तुम
ने ग़ैरों को अपनी तरफ़ से मेरी हैकल में निगहबान मुक़र्रर किया।
9 ख़ुदावन्द ख़ुदा यूँ फ़रमाता है: कि उन अजनबीज़ादों में से
जो बनी इस्राईल के बीच हैं, कोई दिल का नामख़्तून या जिस्म
का नामख़्तून अजनबी ज़ादा मेरी हैकल में दाख़िल न होगा।
10 और बनी लावी जो मुझ से दूर हो गए जब इस्राईल गुमराह
हुआ, क्यूँकि वह अपने बुतों की पैरवी करके मुझ से गुमराह हुए
वह भी अपनी बदकिरदारी की सज़ा पाएँगे।
11 तोभी वह मेरे हैकल में ख़ादिम होंगे और मेरे घर के फाटकों
पर निगहबानी करेंगे और मेरे घर में ख़िदमत गुज़ारी करेंगे; वह
लोगों के लिए सोख़्तनी क़ुर्बानी और ज़बीहा ज़बह करेंगे और
उनके सामने उनकी ख़िदमत के लिए खड़े रहेंगे।
12 चूँकि उन्होंने उनके लिए बुतों की ख़िदमत की और बनी

इस्राईल के लिए बदकिरदारी में ठोकर का जरि'अ हुए, इसलिए
मैंने उन पर हाथ चलाया और वह अपनी बदकिरदारी की सज़ा
पाएँगे; ख़ुदावन्द ख़ुदा यूँ फ़रमाता है:
13 और वह मेरे नज़दीक न आ सकेंगे कि मेरे सामने कहानत
करें, न वह मेरी पाक चीज़ों के पास आएँगे या'नी पाक तरीन चीज़ों
के पास; बल्कि वह अपनी रुसवाई उठायेंगे और अपने घिनौने
कामों की, जो उन्होंने किए हैं सज़ा पाएँगे।
14 तोभी मैं उनको हैकल की हिफ़ाज़त के लिए और उसकी
तमाम ख़िदमत के लिए, और उस सब के लिए जो उसमें किया
जाएगा, निगहबान मुक़र्रर करूँगा।
15 लेकिन लावी काहिन या'नी बनी सदूक़ जो मेरी हैकल की
हिफ़ाज़त करते थे, जब बनी इस्राईल मुझ से गुमराह हो गए,
मेरी ख़िदमत के लिए मेरे नज़दीक आएँगे और मेरे सामने खड़े
रहेंगे ताकि मेरे सामने चर्बी और ख़ून पेश करेंगे, ख़ुदावन्द ख़ुदा
फ़रमाता है।
16 वही मेरे हैकल में दाख़िल होंगे और वही ख़िदमत के लिए
मेरी मेज़ के पास आएँगे और मेरे अमानत दार होंगे।
17 और यूँ होगा कि जिस वक़्त वह अन्दरूनी सहन के फाटकों
से दाख़िल होंगे, तो कतानी लिबास से मुलब्बस होंगे, और जब
तक अन्दरूनी सहन के फाटकों के बीच और घर में ख़िदमत करेंगे
कोई ऊनी चीज़ न पहनेंगे।
18 वह अपने सिरों पर कतानी 'अमामे और कमरों पर कतानी
पायजामे पहनेंगे, और जो कुछ पसीने के ज़रिए' हो उसे अपनी
कमर पर न बाँधे।
19 और जब बैरूनी सहन में या'नी 'अवाम के बैरूनी सहन में
निकल आएँ, तो अपनी ख़िदमत की पोशाक उतार कर पाक कमरों
में रख्खेंगे; और दूसरी पोशाक पहनेंगे, ताकि अपने लिबास से
'अवाम की तक़दीस न करें।
20 और वह न सिर मुंडाएँगे और न बाल बढ़ाएँगे, वह सिर्फ़

अपने सिरों के बाल कतराएँगे।

21 और जब अन्दरूनी सहन में दाख़िल हों, तो कोई काहिन
शराब न पिए।

22 और वह बेवा या मुतल्लक़ा से ब्याह न करेंगे, बल्कि बनी
— इस्राईल की नसल की कुँवारियों से या उस बेवा से जो किसी
काहिन की बेवा हो।

23 और वह मेरे लोगों को पाक और 'आम में फ़र्क बताएँगे, और
उनको नजिस और ताहिर में इम्तियाज़ करना सिखाएँगे।

24 और वह झगड़ों के फ़ैसले के लिए खड़े होंगे, और मेरे हुक्मों
के मुताबिक़ 'अदालत करेंगे, और वह मेरी तमाम मुक़र्ररा 'ईदों में
मेरी शरी'अत और मेरे क़ानून पर 'अमल करेंगे, और मेरे सबतों
को पाक जानेंगे।

25 और वह किसी मुर्दे के पास जाने से अपने आपको नापाक न
करेंगे; मगर सिर्फ़ बाप या माँ या बेटे या बेटी या भाई या कुँवारी
बहन के लिए वह अपने आपको नापाक कर सकते हैं।

26 और वह उसके पाक होने के बाद उसके लिए और सात दिन
शुमार करेंगे,

27 और जिस रोज़ वह हैकल के अन्दर अन्दरूनी सहन में
ख़िदमत करने को जाए, तो अपने लिए ख़ता की क़ुर्बानी पेश
करेगा; ख़ुदावन्द ख़ुदा फ़रमाता है।

28 और उनके लिए एक मीरास होगी मैं ही उनकी मीरास हूँ,
और तुम इस्राईल में उनकी कोई मिल्क़ियत न देना — मैं ही
उनकी मिल्क़ियत हूँ।

29 और वह नज़र की क़ुर्बानी और ख़ता की क़ुर्बानी और जुर्म
की क़ुर्बानी खाएँगे, और हर एक चीज़ जो इस्राईल में मख़्सूस की
जाए उन ही की होगी।

30 और सब पहले फलों का पहला और तुम्हारी तमाम चीज़ों
की हर एक क़ुर्बानी काहिन के लिए हों, और तुम अपने पहले गुन्धे

आटे से काहिन को देना, ताकि तेरे घर पर बरकत हो।
31 अगर वह जो अपने आप ही मर गया हो या दरिन्दों का
फाड़ा हुआ, क्या परिन्द क्या चरिन्द, काहिन उसे न खाएँ।

45

[illegible]

1 और जब तुम ज़मीन को पर्ची डाल कर मीरास के लिए
तक़सीम करो तो उसका एक पाक हिस्सा ख़ुदावन्द के सामने
हदिया देना उसकी लम्बाई पच्चीस हज़ार और चौड़ाई दस हज़ार
होगी वह अपने चारों तरफ़ की तमाम हदों में पाक होगा।
2 उसमें से एक कित'आ जिसकी लम्बाई पाँच सौ और चौड़ाई
पाँच सौ, जो चारों तरफ़ बराबर है हैकल के लिए होगा, और उसके
अहाते के लिए चारों तरफ़ पचास पचास हाथ की चौड़ाई होगी।
3 और तू इस पैमाइश की पच्चीस हज़ार की लम्बाई और दस
हज़ार की चौड़ाई नापेगा और उसमें हैकल होगा जो बहुत पाक
है।
4 ज़मीन का यह पाक हिस्सा उन काहिनों के लिए होगा जो
हैकल के ख़ादिम हैं, और जो ख़ुदावन्द के सामने ख़िदमत करने
को आते हैं; और यह मक़ाम उनके घरों के लिए होगा, और हैकल
के लिए पाक जगह होगी।
5 और पच्चीस हज़ार लम्बा और दस हज़ार चौड़ा, बनी लावी
हैकल के ख़ादिमों के लिए होगा, ताकि बीस बस्तियों की जगह
उनकी मिल्यक़ित हो।
6 और तुम शहर का हिस्सा पाँच हज़ार चौड़ा और पच्चीस
हज़ार लम्बा हैकल के हदिये वाले हिस्से के पास मुक़र्रर करना,
यह तमाम बनी इस्राईल के लिए होगा।
7 और पाक हदिये वाले हिस्से की तरफ़ शहर के हिस्से की दोनों
तरफ़, पाक हदिये वाले हिस्से के सामने और शहर के हिस्से के
सामने दक्खिनी गोशे मग़रिब की तरफ़ और पूरबी गोशे पूरब की

तरफ़ फ़रमरवाँ के लिए होगा; और लम्बाई में पच्छिमी सरहद से
पूरबी सरहद तक उन हिस्सों में से एक के सामने होगा।
8 इस्राईल के बीच ज़मीन में से उसका यही हिस्सा होगा, और
मेरे हाकिम फिर मेरे लोगों पर सितम न करेंगे; और ज़मीन को
बनी — इस्राईल में उनके क़बीले के मुताबिक़ तक़सीम करेंगे।
9 ख़ुदावन्द ख़ुदा यूँ फ़रमाता है: कि ऐ इस्राईल के हाकिमों,
तुम्हारे लिए यही काफ़ी है; ज़ुल्म और लूट मार को दूर करो,
'अदालत — ओ — सदाक़त को 'अमल में लाओ, और मेरे लोगों
पर से अपनी ज़ियादिती को ख़त्म करो; ख़ुदावन्द ख़ुदा फ़रमाता
है।
10 और तुम पूरी तराज़ू और पूरा एफ़ा और पूरा बत रख्खा करो।
11 एफ़ा और बत एक ही वज़न का हो, ताकि बत में ख़ोमर
का दसवाँ हिस्सा हो; और एफ़ा भी ख़ोमर का दसवाँ हिस्सा हो,
उसका अन्दाज़ा ख़ोमर के मुताबिक़ हो।
12 और मिस्क़ाल बीस जीरा हो; और बीस मिस्क़ाल, पच्चीस
मिस्क़ाल, पन्द्रह मिस्क़ाल का तुम्हारा माना होगा।
13 'और हदिया जो तुम पेश करोगे फ़िर यह है: गेहूँ के ख़ोमर
से एफ़ा का छटा हिस्सा, और जौ के ख़ोमर से एफ़ा का छटा
हिस्सा देना।
14 और तेल या'नी तेल के बत के बारे में यह हुक्म है कि तुम
कुर में से, जो दस बत का ख़ोमर है, एक बत का दसवाँ हिस्सा
देना क्यूँकि खोमर में दस बत हैं।
15 और गल्ला में से हर दोसो पीछे इस्राईल की सेराब चरागाह
का एक बर्रा नज़र की क़ुर्बानी के लिए और सलामती की क़ुर्बानी
के लिए ताकि उनके लिए कफ़्फ़ारा हो ख़ुदावन्द फ़रमाता है।
16 मुल्क के सब लोग उस फ़रमारवाँ के लिए जो इस्राईल में है
यही हदिया देंगे।
17 और फ़रमारवाँ सोख़्तनी क़ुर्बानियाँ और नज़र की क़ुर्बानियाँ

और तपावन 'अहदों और नए चाँद के वक़्तों और सबतों और बनी
इस्राईल की तमाम मुक़र्रा 'ईदों में देगा वह ख़ता की क़ुर्बानी
और नज़र की क़ुर्बानी और सोख़्तनी क़ुर्बानी और सलामती की
क़ुर्बानियाँ बनी इस्राईल के कफ़्फ़ारा के लिए तैयार होगा।

18 ख़ुदावन्द ख़ुदा यूँ फ़रमाता है कि पहले महीने की पहली
तारीख़ को तू एक बे 'ऐब बछड़ा लेना और हैकल को पाक करना
19 और काहिन ख़ता की क़ुर्बानी के बछड़े का ख़ून लेगा और
उसमें से कुछ घर के सुतूनों पर और मज़बह की कुर्सी के चारों कोनों
पर और अंदरूनी सहन के दरवाज़े की चौखटों पर लगाएगा।

20 और तू महीने की सातवीं तारीख़ को हर एक के लिए जो
ख़ता करे और उसके लिए भी जो नादान है ऐसा ही करेगा इसी
तरह तुम घर का कफ़्फ़ारा दिया करोगे।

21 तुम पहले महीने की चौदवीं तारीख़ को 'ईद फ़सह मनाना
जो सात दिन की 'ईद है और उसमें बेख़मीरी रोटी खाई जाएगी।
22 और उसी दिन फ़रमारवाँ अपने लिए और तमाम अहल —
ए — मम्लुकत के लिए ख़ता की क़ुर्बानी के वास्ते एक बछड़ा
तैयार कर रख्खेगा।

23 और 'ईद के सातों दिन में वह हर रोज़ या'नी सात दिन तक
सात बे'ऐब बछड़े और सात मेंढे मुहय्या करेगा ताकि ख़ुदावन्द
के सामने सोख़्तनी क़ुर्बानी हों और हर रोज़ ख़ता की क़ुर्बानी के
लिए एक बकरा।

24 और हर एक बछड़े के लिए एक एफ़ा भर नज़र की क़ुर्बानी
और हर मेंढे के लिए एक एफ़ा और फ़ी एफ़ा एक हींन तेल तैयार
करेगा।

25 सातवें महीने की पन्दर्वीं तारीख़ को भी वह 'ईद के लिए जिस
तरह से उसने इन सात दिनों में किया था तैयारी करेगा ख़ता की
क़ुर्बानी और सोख़्तनी क़ुर्बानी और नज़र की क़ुर्बानी और तेल के
मुताबिक़।

46

1 ख़ुदावन्द ख़ुदा यूँ फ़रमाता है, कि अन्दरूनी सहन का फाटक
जिसका रुख़ पूरब की तरफ़ है, काम काज के छ: बन्द रहेगा;
लेकिन सबत के दिन खोला जाएगा, और नए चाँद के दिन भी
खोला जाएगा।
2 और फ़रमारवा बैरूनी फाटक के आस्ताने के रास्ते से दाख़िल
होगा, फाटक की चौखट के पास खड़ा रहेगा; और काहिन उसकी
सोख़्तनी क़ुर्बानी और उसकी सलामती की क़ुर्बानियाँ पेशकरेंगे,
वह फाटक के आसताने पर सिज्दा करके बाहर निकलेगा लेकिन
फाटक शाम तक बन्द न होगा।
3 और मुल्क के लोग उसी फाटक के दरवाज़े पर, सबतों और
नए चाँद के वक़्तों में ख़ुदावन्द के सामने सिज्दा किया करेंगे
4 और सोख़्तनी क़ुर्बानी जो फ़रमारवा सबत के दिन ख़ुदावन्द
के सामने पेश करेगा, छ: बे'ऐब बर्रे और एक बे'ऐब मेंढा,
5 और नज़र की क़ुर्बानी मेंढे के लिए एक एफ़ा और बर्रों के लिए
नज़र की क़ुर्बानी उसकी तौफ़ीक़ के एक एफ़ा के लिए एक हीन
तेल।
6 और नए चाँद के रोज़ एक बे'ऐब बछड़ा और छ: बर्रे और एक
मेंढा, सब के सब बे'ऐब
7 और वह नज़र की क़ुर्बानी तैयार करेगा या'नी बछड़े के लिए
एक एफ़ा और मेंढे के लिए एक एफ़ा और बर्रों के लिए उसकी
तौफ़ीक़ के मुताबिक़, हर एक एफ़ा के लिए एक हीन तेल।
8 जब फ़रमारवा अन्दर आए, फाटक के आस्ताने के रास्ते से
दाख़िल होगा और उसी रास्ते से निकलेगा।
9 लेकिन जब मुल्क के लोग मुक़र्ररा ईदों के वक़्त ख़ुदावन्द के
सामने हाज़िर होंगे, जो उत्तरी फाटक के रास्ते से सिज्दा करने को
दाख़िल होगा वह दक्खिन फाटक के रास्ते से बाहर जाएगा, जो
दक्खिनी फाटक के रास्ते से अन्दर आता है वह उत्तरी फाटक के
रास्ते से बाहर जाएगा; जिस फाटक के रास्ते से वह अन्दर आया

उससे वापस न जाएगा, बल्कि सीधा अपने सामने के फाटक के
रास्ते से निकल जाएगा।
10 और जब वह अन्दर जाएँगे तो फ़रमारवा भी उनके बीच
होकर जाएगा, और जब वह बाहर निकलेंगे तो सब इकट्ठे जाएँगे।
11 और ईदों और मज़हबी तहवारों के वक़्त में नज़र की क़ुर्बानी
बैल के लिए एक एफ़ा, मेंढे के लिए एक एफ़ा होगी, और बर्रों के
लिए उसकी तौफ़ीक़ के मुताबिक़ और हर एक एफ़ा के लिए एक
हीन तेल।
12 और जब फ़रमारवा रज़ा की क़ुर्बानी तैयार करे या'नी
सोख़्तनी क़ुबानी या सलामती की क़ुर्बानी ख़ुदावन्द के सामने
रज़ा की क़ुर्बानी के तौर पर लाए तो वह फाटक जिसका रुख
पूरब की तरफ़ उसके लिए खोला जाएगा और सबत के दिन की
तरह वह अपनी सोख़्तनी क़ुर्बानी और सलामती की क़ुर्बानी पेश
करेगा, तब वह बाहर निकल आएगा और उसके निकलने के बाद
फाटक बन्द किया जाएगा।
13 तो हर रोज़ ख़ुदावन्द के सामने पहले साल का एक बे'ऐब
बर्रा सोख़्तनी क़ुर्बानी के लिए पेश करेगा, तू हर सुबह पेश करेगा।
14 और तू उसके साथ हर सुबह नज़र की क़ुर्बानी पेश करेगा
या'नी एफ़ा का छटा हिस्सा, और मैदे के साथ मिलाने को तेल
के हीन की एक तिहाई, दाइमी हुक्म के मुताबिक़ हमेशा के लिए
ख़ुदावन्द के सामने यह नज़र की क़ुर्बानी होगी।
15 इसी तरह वह बर्रे और नज़र की क़ुर्बानी और तेल हर सुबह
हमेशा की सोख़्तनी क़ुर्बानी के लिए अदा करेंगे।
16 ख़ुदावन्द ख़ुदा यूँ फ़रमाता है: कि अगर फ़रमारवा अपने
बेटों में से किसी को कोई हदिया दे, वह उसकी मीरास उसके बेटों
की होगी; वह उनका मौरूसी माल है।
17 लेकिन अगर वह अपने ग़ुलामों में से किसी को अपनी
मीरास में से हदिया दे, तो वह आज़ादी के साल तक उसका होगा;

उसके बाद फिर फ़रमारवा का हो जाएगा। मगर उसकी मीरास
उसके बेटों के लिए होगी।

18 और फ़रमारवा लोगों की मीरास में से ज़ुल्म करके न लेगा,
ताकि उनको उनकी मिल्कियत से बेदख़्ल करे; लेकिन वह अपनी
ही मिल्कियत में से अपने बेटों को मीरास देगा, ताकि मेरे लोग
अपनी अपनी मिलिकयत से जुदा न हो जाएँ।

[illegible]

19 फिर वह मुझे उस मदख़ल के रास्ते से जो फाटक के पहलू
में था, काहिनों के पाक कमरों में जिनका रुख उत्तर की तरफ़ था,
लाया और क्या देखता हूँ कि पच्छिम की तरफ़ पीछे कुछ ख़ाली
जगह है।

20 तब उसने मुझे फ़रमाया, देख, यह वह जगह है जिसमें
काहिन जुर्म की क़ुर्बानी और ख़ता की क़ुर्बानी को जोश देंगे और
नज़र की क़ुर्बानी पकायेंगे ताकि उनको बैरूनी सहन में ले जाकर
लोगों की तक़दीस करें।

21 फिर वह मुझे बैरूनी सहन में लाया और सहन के चारों कोनों
की तरफ़ मुझे ले गया, और देखो, सहन के हर कोने में एक और
सहन था;

22 सहन के चारों कोनों में चालीस चालीस हाथ लम्बे और तीस
तीस हाथ चौड़े सहन मुत्तसिल थे, यह चारों कोने वाले एक ही नाप
के थे।

23 और उनके चारों तरफ़ या'नी उन चारों के चारों तरफ़ दीवार
थी, और चारों तरफ़ दीवार के नीचे चूल्हे बने थे।

24 तब उसने मुझे फ़रमाया, कि "यह चूल्हे हैं, जहाँ हैकल के
ख़ादिम लोगों के ज़बीहे उबालेंगे।"

47

[illegible]

1 फिर वह मुझे हैकल के दरवाज़े पर वापस लाया, और क्या
देखता हूँ कि हैकल के आस्ताने के नीचे से पानी पूरब की तरफ़
निकल रहा है क्यूँकि हैकल का सामना पूरब की तरफ़ था और
पानी हैकल के दाहनी तरफ़ के नीचे से मज़बह के दक्खिनी जानिब
से बहता था।
2 तब वह मुझे उत्तरी फाटक की राह से बाहर लाया, और मुझे
उस राह से जिसका रुख़ पूरब की तरफ़ है, बैरूनी फाटक पर वापस
लाया या'नी पूरब रूया फाटक पर; और क्या देखता हूँ कि दहनी
तरफ़ से पानी जारी है।
3 और उस मर्द ने जिसके हाथ में पैमाइश की डोरी थी, पूरब की
तरफ़ बढ़ कर हज़ार हाथ नापा, और मुझे पानी में से चलाया और
पानी टखनों तक था।
4 फिर उसने हज़ार हाथ और नापा और मुझे उसमें से चलाया,
और पानी घुटनों तक था; फिर उसने एक हज़ार हाथ और नापा
और मुझे उसमें से चलाया, और पानी कमर तक था।
5 फिर उसने एक हज़ार और नापा, और वह ऐसा दरिया था
कि मैं उसे पार नहीं कर सकता था, क्यूँकि पानी चढ़ कर तैरने के
दर्जे को पहुँच गया और ऐसा दरिया बन गया जिसको पार करना
मुम्किन न था।
6 और उसने मुझ से कहा, ऐ आदमज़ाद! क्या तूने यह देखा?
तब वह मुझे लाया और दरिया के किनारे पर वापस पहुँचाया।
7 और जब मैं वापस आया तो क्या देखता हूँ कि दरिया के किनारे
दोनों तरफ़ बहुत से दरख़्त हैं।
8 तब उसने मुझे फ़रमाया कि यह पानी पूरबी 'इलाक़े की तरफ़
बहता है, और मैदान में से होकर समन्दर में जा मिलता है, और
समन्दर में मिलते ही उसके पानी को शीरीं कर देगा।
9 और यूँ होगा कि जहाँ कहीं यह दरिया पहुँचेगा, हर एक
चलने फिरने वाला जानदार ज़िन्दा रहेगा और मछलियों की बड़ी

कसरत होगी क्यूँकि यह पानी वहाँ पहुँचा और वह शीरीं हो गया इसलिए जहाँ कहीं यह दरया पहुँचेगा ज़िन्दगी बख़्शेगा।

10 और यूँ होगा कि शिकारी उसके किनारे खड़े रहेंगे, 'ऐन जदी से ऐन 'अजलईम तक जाल बिछाने की जगह होगी, उसकी मछलियाँ अपनी अपनी जिन्स के मुताबिक़ बड़े समन्दर की मछलियों की तरह कसरत से होंगी।

11 लेकिन उसकी कीच की जगहें और दलदले शीरीं न की जायेंगी वह नमक ज़ार ही रहेंगी।

12 और दरया के क़रीब उसके दोनों किनारों पर हर क़िस्म के मेवादार दरख़्त उगेंगे जिनके पत्ते कभी न मुरझायेंगे और जिनके मेवे कभी ख़त्म न होंगे वह हर महीने नए मेवे लायेंगे क्यूँकि उनका पानी हैकल में से जारी है और उनके मेवे खाने के लिए और उनके पत्ते दवा के लिए होंगे।

13 ख़ुदावन्द ख़ुदा यूँ फ़रमाता है: कि यह वह सरहद है जिसके मुताबिक़ तुम ज़मीन को तक़सीम करोगे, ताकि इस्राईल के बारह क़बीलों की मीरास हो; यूसुफ़ के लिए दो हिस्से होंगे।

14 और तुम सब यकसाँ उसे मीरास में पाओगे, जिसके ज़रिए मैंने क़सम खाई कि तुम्हारे बाप — दादा को दूँ और यह ज़मीन तुम्हारी मीरास होगी।

15 'और ज़मीन की हदें यह होंगी:उत्तर की तरफ़ बड़े समन्दर से लेकर हतलून से होती हुई सिदाद के मदख़ल तक,

16 हमात बैरूत — सिबरैम जो दमिश्क़ की सरहद और हमात की सरहद के बीच है, और हसर हतीकून जो हौरान के किनारे पर है।

17 और समन्दर से सरहद यह होगी:या'नी हसर 'ऐनान दमिश्क़ की सरहद, और उत्तर की उत्तरी अतराफ़, हमात की सरहद उत्तरी जानिब यही है।

18 और पूरबी सरहद हौरान और दमिश्क़, और जिल'आद के

बीच से और इस्राईल की सरज़मीन के बीच से यरदन पर होगी;
उत्तरी सरहद से पूरबी समन्दर तक नापना पूरबी जानिब यही है।
19 और दक्खिन की तरफ़ दक्खिनी सरहद यह है: या'नी तमर
से मरीबूत के क़ादिस के पानी से और नहर — ए — मिस्र से होकर
बड़े समन्दर तक, पच्छिमी जानिब यही है।
20 और उसी सरहद से हमात के मदख़ल के सामने बड़ा समन्दर
दक्खिनी सरहद होगा दक्खिनी जानिब यही है।
21 इसी तरह तुम क़बाइल — ए — इस्राईल के मुताबिक़
ज़मीन को आपस में तक़सीम करोगे।
22 और यूँ होगा कि तुम अपने और उन बेगानों के बीच, जो
तुम्हारे साथ बसते हैं और जिनकी औलाद तुम्हारे बीच पैदा हुई
जो तुम्हारे लिए देसी बनी — इस्राईल की तरह होंगे; मीरास
तक़सीम करने के लिए पर्ची डालोगे, वह तुम्हारे साथ क़बाइल
— ए — इस्राईल के बीच मीरास पाएँगे।
23 और यूँ होगा कि जिस जिस क़बीले में कोई बेगाना बसता
होगा, उसी में तुम उसे मीरास दोगे। ख़ुदावन्द ख़ुदा फ़रमाता है।

48

□□□□□□ □□ □□□□□□□□

1 और क़बीलों के नाम यह हैं: इन्तिहा — ए — उत्तर पर
हतल्लून के रास्ते के साथ साथ हमात के मदख़ल से होते हुए
हसर 'ऐनान तक, जो दमिश्क़ की उत्तरी सरहद पर हमात के पास
है, पूरब से पच्छिम तक दान के लिए एक हिस्सा।
2 और दान की सरहद से मुत्तसिल पूरबी सरहद से पच्छिमी
सरहद तक, आशर के लिए एक हिस्सा।
3 और आशर की सरहद से मुत्तसिल पूरबी सरहद से पच्छिमी
सरहद तक, नफ़्ताली के लिए एक हिस्सा।
4 और नफ़्ताली की सरहद से मुत्तसिल पूरबी सरहद से
पच्छिमी सरहद तक, मनस्सी के लिए एक हिस्सा।

5 और मनस्सी की सरहद से मुत्तसिल पूरबी सरहद से पच्छिमी
सरहद तक, इफ़्राईम के लिए एक हिस्सा।
6 और इफ़्राईम की सरहद से मुत्तसिल पूरबी सरहद से पच्छिमी
सरहद तक, रूबिन के लिए एक हिस्सा।
7 और रूबिन की सरहद से मुत्तसिल पूरबी सरहद से पच्छिमी
सरहद तक, यहूदाह के लिए एक हिस्सा।
8 और यहूदाह की सरहद से मुत्तसिल पूरबी सरहद से पच्छिमी
सरहद तक, हदिये का हिस्सा होगा जो तुम वक़्फ़ करोगे; उसकी
चौड़ाई पच्चीस हज़ार और लम्बाई बाक़ी हिस्सों में से एक के
बराबर पूरबी सरहद से दक्खिनी सरहद तक और हैकल उसके बीच
में होगा।
9 हदिये का हिस्सा जो तुम ख़ुदावन्द के लिए वक़्फ़ करोगे,
पच्चीस हज़ार लम्बा और दस हज़ार चौड़ा होगा।
10 और यह पाक हदिये का हिस्सा उनके लिए, हाँ, काहिनों के
लिए होगा; उत्तर की तरफ़ पच्चीस हज़ार उसकी लम्बाई होगी
और दस हज़ार उसकी चौड़ाई पच्छिम की तरफ़ और दस हज़ार
उसकी चौडाई पूरब की तरफ़ और पच्चीस हज़ार उसकी लम्बाई
दक्खिन की तरफ़ और ख़ुदावन्द का हैकल उसके बीच में होगा।
11 यह उन काहिनों के लिए होगा जो सदूक़ के बेटों में से पाक
किए गए हैं; जिन्होंने मेरी अमानतदारी की तरफ़ गुमराह न हुए,
जब बनी — इस्राईल गुमराह हो गए जैसे बनी लावी गुमराह
हुए।
12 और ज़मीन के हदिये में से बनी लावी के हिस्से से मुत्तसिल,
यह उनके लिए हदिया होगा जो बहुत पाक ठहरेगा।
13 और काहिनों की सरहद के सामने बनी लावी के लिए एक
हिस्सा होगा, पच्चीस हज़ार लम्बा और दस हज़ार चौड़ा; उसकी
कुल लम्बाई पच्चीस हज़ार और चौड़ाई दस हज़ार होगी।
14 और वह उसमें से न बेचे और न बदलें और न ज़मीन का

पहला फल अपने क़ब्ज़े से निकलने दें, क्यूँकि वह ख़ुदावन्द के
लिए पाक है।
15 और वह पाँच हज़ार की चौड़ाई का बाक़ी हिस्सा, उस
पच्चीस हज़ार के सामने बस्ती और उसकी 'इलाक़े के लिए 'आम
जगह होगी; और शहर उसके बीच में होगा।
16 और उसकी पैमाइश यह होगी, उत्तर की तरफ़ चार हज़ार
पाँच सौ, और दक्खिन की तरफ़ चार हज़ार पाँच सौ, और पूरब
की तरफ़ चार हज़ार पाँच सौ, और पच्छिम की तरफ़ चार हज़ार
पाँच सौ,
17 और शहर के 'इलाक़े उत्तर की तरफ़ दो सौ पचास, और
दक्खिन की तरफ़ दो सौ पचास, और पूरब की तरफ़ दो सौ पचास,
और पच्छिम की तरफ़ दो सौ पचास।
18 और वह पाक हदिये के सामने बाक़ी लम्बाई पूरब की तरफ़
दस हज़ार और पच्छिम की तरफ़ दस हज़ार होगी, और वह पाक
हदिये के सामने होगी और उसका हासिल उनकी ख़ुराक के लिए
होगा जो शहर में काम करते हैं।
19 और शहर में काम करने वाले इस्राईल के सब क़बीलों में से
उसमें काश्तकारी करेंगे।
20 हदिये के तमाम हिस्से की लम्बाई पच्चीस हज़ार और
चौड़ाई पच्चीस हज़ार होगी; तुम पाक हदिये के हिस्से को मुरब्बा'
शक्ल में शहर की मिल्क़ियत के साथ वक़्फ़ करोगे।
21 और बाक़ी जो पाक हदिये का हिस्सा और शहर की
मिल्क़ियत की दोनों तरफ़ जो हदिये के हिस्से के पच्चीस हज़ार
के सामने पच्छिम की तरफ़ फ़रमरवा के हिस्सों के सामने है; वह
फ़रमारवा के लिए होगा और वह पाक हदिये का हिस्सा होगा,
और पाक घर उसके बीच में होगा।
22 और बनी लावी की मिल्क़ियत से और शहर की मिल्क़ियत
से जो फ़रमरवा की मिल्क़ियत के बीच में है, यहूदाह की सरहद
और बिनयमीन की सरहद के बीच फ़रमरवा के लिए होगी।

23 और बाक़ी क़बाइल के लिए यूँ होगा:कि पूरबी सरहद से
पच्छिमी सरहद तक, बिनयमीन के लिए एक हिस्सा।
24 और बिनयमीन की सरहद से मुत्तसिल पूरबी सरहद से
पच्छिमी सरहद तक, शमौन के लिए एक हिस्सा।
25 और शमौन की सरहद से मुत्तसिल पूरबी सरहद से पच्छिमी
सरहद तक, इश्कार के लिए एक हिस्सा।
26 और इश्कार की सरहद से मुत्तसिल पूरबी सरहद से पच्छिमी
सरहद तक, ज़बूलून के लिए एक हिस्सा।
27 और ज़बूलून की सरहद से मुत्तसिल पूरबी सरहद से
पच्छिमी सरहद तक, जद्द के लिए एक हिस्सा।
28 और जद्द की सरहद से मुत्तसिल दक्खिन की तरफ़ दक्खिनी
किनारे की सरहद तमर से लेकर मरीबूत क़ादिस के पानी से नहर
— ए — मिस्र से होकर बड़े समन्दर तक होगी।
29 यह वह सरज़मीन है जिसको तुम मीरास के लिए पर्ची
डालकर क़बाइल — ए — इस्राईल में तक्सीम करोगे और यह
उनके हिस्से हैं, ख़ुदावन्द ख़ुदा फ़रमाता है।
30 और शहर के मख़ारिज यह हैं: उत्तर की तरफ़ की पैमाइश
चार हज़ार पाँच सौ।
31 और शहर के फाटक क़बाइल — ए — इस्राईल से नामज़द
होंगे:तीन फाटक उत्तर की तरफ़ — एक फाटक रूबिन का, एक
यहूदाह का, एक लावी का;
32 और पूरब की तरफ़ की पैमाईश चार हज़ार पाँच सौ, और
तीन फाटक एक यूसुफ़ का एक बिनयमीन का और एक दान का।
33 और दक्खिन की तरफ़ की पैमाईश चार हज़ार पाँच सौ, और
तीन फाटक — एक शमौन का, एक इश्कार का, और एक ज़बूलून
का।
34 और पच्छिम की तरफ़ की पैमाइश चार हज़ार पाँच सौ और
तीन फाटक — एक जद्द का, एक आशर का और एक नफ़्ताली
का।

35 उसका मुहीत अठारह हज़ार और शहर का नाम उसी दिन
से यह होगा कि “ख़ुदावन्द वहाँ है।”

इंडियन रिवाइज्ड वर्जन (IRV) उर्दू - 2019

The Holy Bible in the Urdu language of India: इंडियन रिवाइज्ड वर्जन (IRV) उर्दू - 2019

copyright © 2019 Bridge Connectivity Solutions Pvt. Ltd.

Language: اردو (Urdu)

Contributor: Bridge Connectivity Solutions Pvt. Ltd.

This translation is made available to you under the terms of the Creative Commons Attribution Share-Alike license 4.0.
You have permission to share and redistribute this Bible translation in any format and to make reasonable revisions and adaptations of this translation, provided that:

- You include the above copyright and source information.
- If you make any changes to the text, you must indicate that you did so in a way that makes it clear that the original licensor is not necessarily endorsing your changes.
- If you redistribute this text, you must distribute your contributions under the same license as the original.

Pictures included with Scriptures and other documents on this site are licensed just for use with those Scriptures and documents. For other uses, please contact the respective copyright owners.
Note that in addition to the rules above, revising and adapting God's Word involves a great responsibility to be true to God's Word. See Revelation 22:18-19.

2023-01-03

PDF generated using Haiola and XeLaTeX on 18 Apr 2025 from source files dated 19 Apr 2023
4a2fe4e0-ffe8-5377-87c7-19b3106ba2bc